

## Semester –II: THEORY

### Paper Name

# Paper - 4 CHILD DEVELOPMENT AND LEARNING

### Unit 1:- Growth and Development (वृद्धि और विकास)

#### Unit :- 1.1 Definition and meaning of growth and development (वृद्धि और विकास की परिभाषा और अर्थ) :-

**वृद्धि (Growth) :-** वृद्धि का अर्थ आमतौर पर मानव के शरीर के विभिन्न अंगों के विकास तथा उन अंगों की कार्य करने की क्षमता का विकास माना जाता है। व्यक्ति के इन शारीरिक अंगों के विकास के परिणामस्वरूप उसका व्यवहार किसी न किसी रूप से प्रभावित होता है। इस प्रभाव के परिणामस्वरूप ही उस व्यक्ति के अंगों में परिवर्तन होता है। इस तरह वृद्धि से अभिप्राय है शरीर, आकार और भार में वृद्धि। इस प्रकार की वृद्धि में व्यक्ति की मांसपेशियों की वृद्धि भी शामिल है।

हरबर्ट सोरेन्सन ने तो शारीरिक वृद्धि को 'बड़ा और भारी होना बताया है, जो वृद्धि और परिवर्तनों की ओर संकेत करते हैं।

फ्रैंक ने वृद्धि को इस प्रकार परिभाषित किया हैकू "शरीर के किसी विशेष पक्ष में जो परिवर्तन आता है, उसे वृद्धि कहते हैं।"

उपरोक्त विवरण से वृद्धि के अर्थ एवं प्रकृति को निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट कर देते हैं

- वृद्धि से व्यक्ति बड़ा और भारी होता है।
- वृद्धि को मात्रा के रूप में माना जा सकता है।
- वृद्धि की सामान्य पद्धति होती है, न कि अलग-अलग व्यक्तियों में अलग-अलग।
- वृद्धि निषेचित अंड में विभाजन के परिणामस्वरूप होती है।
- वृद्धि निरन्तर नहीं होती।
- वृद्धि की गति एक समान नहीं रहती। इसमें (गति में) परिवर्तन आते रहते हैं।
- वृद्धि एक विशेष समय तक होती रहती है। फिर उसके बाद रुक जाती है।
- वृद्धि आन्तरिक रूप से होती है।
- स्त्रियों में पुरुषों की अपेक्षा वृद्धि तीव्र होती है।
- वृद्धि वंशानुक्रम और वातावरण की अन्तःक्रिया से होती है।
- शिशुकाल में वृद्धि तीव्र गति से होती है, लेकिन बाद में धीमी हो जाती है।
- शारीरिक और मानसिक वृद्धि का आपस में गहरा सम्बन्ध होता है।
- जब कद में वृद्धि होती है, तो भार कम हो जाता है।
- स्वास्थ्य और भोजन शारीरिक और मानसिक वृद्धि को प्रभावित करते हैं।

**विकास का अर्थ** – विकास शब्द उन्नति से सम्बन्धित परिवर्तनों की ओर संकेत करता है और परिपक्वता की ओर अग्रसर करता है। मानव के आकार और उसकी रचना में गुणात्मक और मात्रात्मक परिवर्तनों के कारण उसमें कार्य सम्बन्धी सुधार आ जाते हैं। अतः विकास परिपक्वता की ही एक प्रक्रिया है। अधिकतर शारीरिक विकास शारीरिक वृद्धि पर निर्भर करता है। वृद्धि और विकास के इस बुनियादी सम्बन्ध के कारण वृद्धि और विकास शब्दों को एक-दूसरे के लिए प्रयोग किया जाता है।

**जर्जिल्ड, टेलफोर्ड और सॉरी के अनुसार**, "विकास शब्द का अर्थ उन जटिल प्रक्रियाओं का समूह है जिनसे निषेचित अंड से एक परिपक्व व्यक्ति का उदय होता है।"

**हरलॉक के अनुसार**, "विकास परतों में वृद्धि तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह परिपक्वता के लक्ष्य की ओर परिवर्तनों की एक प्रगतिशील श्रृंखला है।"

वृद्धि की भाँति विकास की भी अपनी विशेष प्रकृति होती है। विकास की भी अपनी एक निश्चित पद्धति होती है। विकास सदा सामान्य से विशिष्ट दिशा की ओर होता है। वृद्धि की तरह विकास रुकता नहीं। यह जन्म से लेकर मृत्यु तक निरन्तर होता ही रहता है।

वास्तव में 'विकास' शब्द का प्रयोग सभी प्रकार के परिवर्तनों के लिए प्रयुक्त होता है, जिससे व्यक्ति की कार्य क्षमता, कार्य-कुशलता और व्यवहार में प्रगति हो। इस दृष्टि से विकास का अर्थ वृद्धि की अपेक्षा व्यापक है। विकास के विस्तृत अर्थ में ही वृद्धि भी शामिल है। विकास गुणात्मक परिवर्तनों की ओर संकेत करता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि विकास व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व में आने वाले विभिन्न परिवर्तनों का प्रतिनिधित्व करता है, चाहे वे परिवर्तन सामाजिक, शारीरिक, संवेगात्मक या बौद्धिक हों। सामान्यतः वृद्धि और विकास की प्रक्रियाएँ साथ-साथ ही चलती हैं।

**इस प्रकार विकास की प्रकृति निम्न तथ्यों से स्पष्ट हो जाती है**

- विकास की निश्चित पद्धति होती है।
- विकास सामान्य से विशिष्ट दिशा की ओर होता है।
- विकास रुकता नहीं, निरन्तर चलता रहता है।
- विकास सभी प्रकार के परिवर्तनों का प्रतिनिधित्व करता है।
- विकास का अर्थ अधिक व्यापक है।
- विकास और वृद्धि की प्रक्रियाएँ साथ-साथ चलती हैं।
- विकास गुणात्मक परिवर्तनों का संकेतक है।

**वृद्धि और विकास में अंतर। (difference between growth and development)**

**वृद्धि / अभिवृद्धि –**

1. वृद्धि से आशय शारीरिक एवं व्यवहारिक बदलावों से है।
2. वृद्धि का संबंध शारीरिक तथा मानसिक परिपक्वता से होता है।
3. वृद्धि किसी विशेष पक्ष अथवा आंशिक स्वरूप को ही करती है।
4. वृद्धि निश्चित आयु के बाद रुक जाती है।
5. वृद्धि में व्यक्तिगत भेद होते हैं। सभी बालकों की वृद्धि असमान होती है।

6. वृद्धि का मापन उचित होता है। जैसे दृ शरीर की लंबाई व भार की वृद्धि को मापा जा सकता है।

### विकास –

1. विकास से आशय शरीर के विभिन्न शारीरिक, मानसिक तथा व्यवहारिक संगठन से होता है।

2. विकास वातावरण से भी संबंधित होता है।

3. विकास प्राणी में होने वाले कुल परिवर्तनों का योग होता है।

4. विकास जीवन-पर्यंत निरंतर चलता ही रहता है।

5. विकास में समानता पाई जाती है, किंतु इसकी दर, सीमा आदि में अवश्य अंतर पाया जाता है।

6. विकास के बदलावों को होते हुए देखा जा सकता है। जैसे – आंतरिक बदलावों एवं योग्यताओं को मात्र अवलोकित कर सकते हैं।

### Unit :- 1.2 Principles and factors affecting development (विकास को प्रभावित करने वाले सिद्धांत और कारक)

:- बच्चों के अवलोकन से एकत्रित वैज्ञानिक ज्ञान से कुछ सिद्धांत सामने आए हैं। ये सिद्धांत माता-पिता और शिक्षकों को यह समझने में सक्षम बनाते हैं कि बच्चे कैसे विकसित होते हैं। उनसे क्या अपेक्षा की जाती है? उनका मार्गदर्शन कैसे करें और उनके इष्टतम विकास के लिए उचित वातावरण प्रदान करें? ऐसा लगता है कि विकास की प्रक्रिया कुछ सामान्य सिद्धांतों द्वारा संचालित होती है। इन नियमों या सिद्धांतों को विकास के सिद्धांतों के रूप में नामित किया जा सकता है। इनमें से कुछ सिद्धांतों को संक्षेप में नीचे समझाया गया है:-

1) विकास की दिशा का सिद्धांत (Principle of development direction)

2) निरंतर विकास का सिद्धांत (Principle of continuous development)

3) व्यक्तिगत भिन्नता का सिद्धांत (Principle of individual differences)

4) विकास क्रम का सिद्धांत (Theory of evolution)

5) परस्पर संबंध का सिद्धांत (Reciprocal principle)

6) समान प्रतिमान का सिद्धांत (Principle of common pattern)

7) वंशानुक्रम सिद्धांत (Inheritance principle)

8) पर्यावरणीय सिद्धांत (Environmental principles)

1- विकास की दिशा का सिद्धांत – इस सिद्धांत का यह मानना है कि बालकों के विकास सिर से पैर की तरफ होता है, मनोविज्ञान में इस सिद्धांत को सिरापुच्छिय दिशा कहा जाता है। जिसके अनुसार पहले बालको के सिर का उसके बाद उसके नीचे वाले अंगों का विकास होता है।

2- निरंतर विकास का सिद्धांत – यह सिद्धांत मानता है कि विकास अचानक नहीं होता बल्कि विकास की प्रक्रिया धीरे-धीरे पहले से ही चलते रहती हैं परंतु इसकी गति में बदलाव आते रहता है, अर्थात् कभी विकास तीव्र गति से होता है तो कभी निम्न गति से।

3- व्यक्तिगत भिन्नता का विकास – इस सिद्धांत के अनुसार विकास प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न-भिन्न तरीके से होता है। दो व्यक्तियों में एक समान विकास प्रक्रिया नहीं देखी जा सकती। जो व्यक्ति जन्म के समय लंबा होता है, तो वह आगे जाकर भी लंबा व्यक्ति ही बनेगा। एक ही उम्र के दो बालकों में शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास में भिन्नताएँ स्पष्ट देखी जा सकती हैं।

4- विकास क्रम का सिद्धांत – इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति का विकास निश्चित क्रम के अनुसार ही होता है, अर्थात् बालक बोलने से पूर्व अन्य व्यक्ति के इशारों को समझकर अपनी प्रतिक्रिया करता है। उदाहरण— बालक पहले स्मृति स्तर में सीखता है फिर बोध स्तर फिर अंत में क्रिया करके।

5- परस्पर संबंध का सिद्धांत – बालक के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक पक्ष के विकास में एक प्रकार का संबंध होता है, अर्थात् शारीरिक विकास के साथ-साथ उसके मानसिक विकास में भी वृद्धि होती है और जैसे-जैसे उसका मानसिक विकास होते रहता है वैसे-वैसे वह उस मानसिक विकास को क्रिया रूप में परिवर्तन करते रहता है।

6- समान प्रतिमान का सिद्धांत – इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति का विकास किसी विशेष जाति के आधार पर होता है। जैसे व्यक्ति या पशुओं का विकास अपनी-अपनी कुछ विशेषताओं के अनुसार होता है।

7- वंशानुक्रम सिद्धांत – इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति का विकास उसके वंश के अनुरूप होता है, अर्थात् जो गुण बालक के पिता, दादा में होते हैं, वही गुण उनके शिशुओं को मिलते हैं। जैसे अगर उनके वंश में सभी की लंबाई ज्यादा होती है तो होने वाला बच्चा भी लंबा ही होता है।

8- पर्यावरणीय सिद्धांत – यह सिद्धांत वंशानुक्रम सिद्धांत के अनुरूप है। यह मानता है कि व्यक्ति का विकास उसके आस-पास के वातावरण पर निर्भर करता है, अर्थात् पर्यावरण जिस प्रकार का होगा व्यक्ति का विकास भी उसी दिशा की ओर होगा।

### Unit :- 1.3 Nature vs. Nurture (पोषण बनाम प्रकृति)

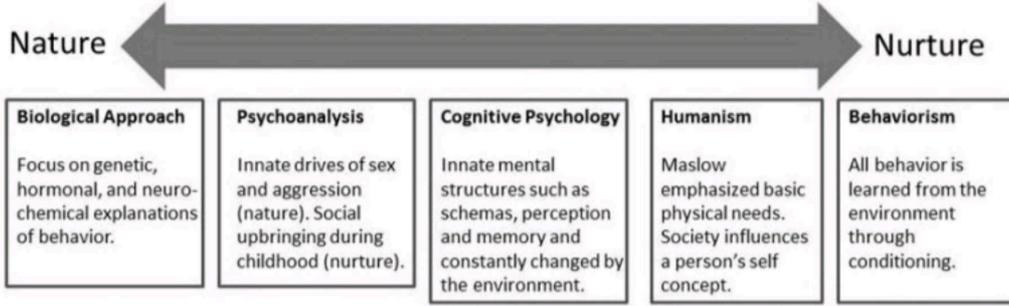
प्रकृति बनाम पोषण बहस मनोविज्ञान के भीतर सबसे पुराने दार्शनिक मुद्दों में से एक है।

• प्रकृति (Nature) उन सभी जीनों और वंशानुगत कारकों को संदर्भित करती है जो हम को प्रभावित करते हैं— हमारी शारीरिक बनावट से लेकर आपके व्यक्तित्व की विशेषताओं तक।

• पालन-पोषण उन सभी पर्यावरणीय चरों को संदर्भित करता है जो हम पर प्रभाव डालते हैं, जिसमें बचपन के शुरुआती अनुभव, हमारा पालन-पोषण कैसे हुआ, हमारे सामाजिक संबंध और आसपास की संस्कृति शामिल हैं।

‘प्रकृति-पोषण की बहस उस सापेक्ष योगदान से संबंधित है जो दोनों प्रभाव मानव व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

## Approaches to Psychology



यह लंबे समय से ज्ञात है कि कुछ भौतिक विशेषताओं को आनुवंशिक विरासत द्वारा जैविक रूप से निर्धारित किया जाता है। आँखों का रंग, सीधे या घुँघराले बाल, त्वचा की रंजकता और कुछ बीमारियाँ सभी जीनों का एक कार्य है जो हमें विरासत में मिला है। अन्य शारीरिक विशेषताएं, यदि निर्धारित नहीं की जाती हैं, तो कम से कम हमारे जैविक माता-पिता के आनुवंशिक मेकअप से प्रभावित होती हैं। ऊंचाई, वजन, बालों का झड़ना (पुरुषों में)। जीवन प्रत्याशा और विशिष्ट बीमारियों (जैसे महिलाओं में स्तन कैंसर) के प्रति संवेदनशीलता आनुवंशिक रूप से संबंधित व्यक्तियों के बीच सकारात्मक रूप से सहसंबद्ध है।

जो लोग अत्यधिक वंशानुगत स्थिति को अपनाते हैं उन्हें नेटिविस्ट के रूप में जाना जाता है। उनकी हसिक धारणा यह है कि समग्र रूप से मानव प्रजातियों की विशेषताएं विकास का एक उत्पाद हैं और यह कि व्यक्तिगत अंतर प्रत्येक व्यक्ति के अद्वितीय आनुवंशिक कोड के कारण होते हैं। सामान्य तौर पर, जितनी जल्दी एक विशेष चपलता प्रकट होती है, उतनी ही अधिक संभावना है कि वह आनुवंशिक कारकों के प्रभाव में है।

जिस तरह से यह हमारे शारीरिक विकास को प्रभावित करता है, उसका उत्कृष्ट उदाहरण युवावस्था में प्रारंभिक किशोरावस्था में नियमित रूप से होने वाले छंद हैं। हालाँकि, प्रकृतिवादियों का यह भी तर्क है कि परिपक्वता शैशवावस्था में लगाव के उद्भव, भाषा अधिग्रहण और यहाँ तक कि समग्र रूप से संज्ञानात्मक विकास को भी प्रभावित करती है।

**स्पेक्ट्रम के दूसरे छोर पर पर्यावरणविद हैं** – जिन्हें अनुभववादी भी कहा जाता है। उनकी मूल धारणा यह है कि जन्म के समय मानव मन एक टैबुला रस (एक खाली स्लेट) होता है और यह अनुभव (जैसे व्यवहारवाद) के परिणामस्वरूप धीरे-धीरे "भरा" होता है।

मनोविज्ञान में एक चरम प्रकृति की स्थिति के उदाहरणों में **बॉल्बी (1969) सिद्धांत** लगाव शामिल है, जो माँ और बच्चे के बीच के बंधन को एक सहज प्रक्रिया के रूप में देखता है जो अस्तित्व को सुनिश्चित करता है। इसी तरह, **चॉम्स्की (1965)** प्रस्तावित भाषा एक जन्मजात भाषा अधिग्रहण उपकरण के उपयोग के माध्यम से प्राप्त की जाती है। प्रकृति का एक और उदाहरण फ्रायड का आक्रामकता का सिद्धांत है जो एक जन्मजात झाड़व के रूप में है।

**इसके विपरीत बंडुरा (1977)** के सामाजिक शिक्षण सिद्धांत में कहा गया है कि आक्रामकता पर्यावरण से अवलोकन और अनुकरण के माध्यम से सीखी जाती है। यह उनके प्रसिद्ध बोबो गुड़िया प्रयोग (बंडुरा, 1961) में देखा जाता है। इसके अलावा, **स्कनर (1957)** का मानना था कि व्यवहार को आकार देने वाली तकनीकों के माध्यम से अन्य लोगों से भाषा सीखी जाती है।

**आक्रामकता की प्रकृति और पोषण सिद्धांत(The Nature And Nurture Theories Of Aggression) :-** मानव आक्रामकता किस हद तक व्यवहार की प्रकृति या पोषण सिद्धांतों का कारक है? मानव व्यवहार को प्रभावित करने वाले और मानव व्यवहार को आकार देने वाले कारकों का आकलन करने वाले वैज्ञानिकों के बीच मानव व्यवहार पर लगातार

बहस होती रहती है। यह निबंध जैविक और व्यवहारिक दृष्टिकोणों पर केंद्रित होगा जो आक्रामक व्यवहार की व्याख्या करते हैं। इस बहस में दो सिद्धांत हैं नेटिविस्ट (प्रकृति / जन्मजात) और अनुभववादी (पोषण / सीखा) सिद्धांत। जबकि प्रकृतिवादी (प्रकृति सिद्धांत) मानते हैं कि हमारा व्यवहार और अंतःक्रियाएं आंतरिक स्थापित तंत्रों पर निर्भर करती हैं, अनुभववादी (पोषण सिद्धांत) व्यवहार को हमारे अनुभवों से जोड़ते हैं।

**आक्रामकता: परिभाषा और प्रकार (Aggression: Definition and Types) :-** हमें पहले आक्रामकता को परिभाषित करने की जरूरत है। बुशमैन और एंडरसन ने मनोविज्ञान 2002 की वार्षिक समीक्षा में आक्रामकता को "किसी अन्य व्यक्ति की ओर निर्देशित किसी भी भार के रूप में परिभाषित किया है जो नुकसान पहुंचाने के निकट के इरादे से किया जाता है।" एंडरसन एट अल का तर्क है कि लोग आक्रामक रूप से उत्तेजक स्थितियों के लिए आक्रामक रूप से प्रतिक्रिया करने की अधिक संभावना रखते हैं। आक्रामक प्रतिक्रिया का स्तर, गंभीरता और तीव्रता उसके व्यक्तिगत कारकों के साथ भिन्न होती है जो व्यक्ति की आक्रामकता के लिए तत्परता को निर्धारित करती है, "व्यक्तिगत कारक उन सभी थैरेटेरिस्टिक्स को शामिल करते हैं जो एक व्यक्ति स्थिति में लाता है, व्यक्तित्व लक्षण, दृष्टिकोण और आनुवंशिक प्रवृत्तियों के रूप में छीनता है।"

आक्रामकता के दो रूप हैं, शत्रुतापूर्ण और वाद्य। शत्रुतापूर्ण वह जगह है जहां आक्रामक व्यवहार क्रोध से प्रेरित होता है और एक विचारहीन और अनियोजित कार्रवाई होती है और अपने आप में एक अंत के रूप में होती है, जबकि सहायक एक पूर्व नियोजित और सक्रिय कार्रवाई होती है, जिसके परिणामस्वरूप वांछित लक्ष्य होता है।

**पोषण सिद्धांत का व्यवहार दृष्टिकोण (Behavioural Approach of the Nurture Theory) :-**

**परिचय (Introduction) :-** पोषण का सिद्धांत बताता है कि मानव व्यवहार सहज नहीं है बल्कि सीखा हुआ है। इसमें मानव जीवन के पहलुओं को शामिल किया गया है जो सामाजिक कारणों से घिरा हुआ है कि आक्रामकता का प्रदर्शन क्यों किया जाता है। नेशनल सेंटर ऑफ चाइल्ड एब्यूज एएमडी नेगलेक्ट (एनसीसीएएन) ने अनुमान लगाया है कि लगभग 23 प्रति 1,000 बच्चे दुर्व्यवहार के शिकार हैं, जिनमें शारीरिक शोषण, यौन दुर्व्यवहार और उपेक्षा शामिल हैं, जैसा कि मार्गोलिन और गार्डिस (2004) द्वारा वांछित है। मार्गोलिन और गार्डिस ने परिवार और समुदाय में हिंसा के संपर्क में आने वाले बच्चों के मनोवैज्ञानिक विकास का अध्ययन किया। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि जो बच्चे क्षतिग्रस्त और अपमानजनक वातावरण में हैं, उनके स्कूलों और समुदायों में आक्रामक होने और कम उपलब्धि वाले बनने की संभावना अधिक है। इसलिए, पारिवारिक कारक, सहकर्मी प्रभाव और संज्ञानात्मक कारक आक्रामकता के नियंत्रण और विकास में योगदान करते प्रतीत होते हैं। बंडुरा (1961), रेनर एट अल और ह्यूसमैन एट अल (1986) ऐसे सिद्धांतकार हैं जिन्होंने दूसरों को देखकर आक्रामक व्यवहार सीखने का सुझाव देने के लिए सहायक साक्ष्य एकत्र किए हैं।

**सामाजिक अधिगम का सिद्धांत Social Learning Theory (SLT) :-** इस का प्रतिपादन अल्बर्ट बंडूरा (Albert Bandura) ने किया था। इसके अनुसार व्यक्ति अवलोकन, नकल और आदर्श व्यवहार के प्रतिमान के माध्यम से एक-दूसरे से सीखते हैं। समाज द्वारा स्वीकार किए जाने वाले व्यवहार को अपनाना तथा वर्जित व्यवहार को नकारना ही सामाजिक अधिगम है।

सामाजिक अधिगम सिद्धांत को व्यवहारवाद और संज्ञानात्मक अधिगम सिद्धांतों के बीच की योजक कड़ी कहा जाता है क्योंकि यह सिद्धांत ध्यान (motivation), स्मृति (attention) और प्रेरणा (memory) तीनों को संयोजित करता है। इसलिए अल्बर्ट बंडूरा को प्रथम मानव व्यवहार-संज्ञानवादी कहते हैं।

**बंडूरा का प्रयोग (Experiment of Bandura) –** बंडूरा ने एक बालक पर बेबीडॉल प्रयोग किया। बंडूरा ने एक बालक को तीन तरह की मूवी दिखाई गई।

प्रथम मूवी में सामाजिक मूल्य (Social value) आधारित थी। जिसे देख कर बालक बेबी डॉल के साथ सामाजिक व्यवहार (social behavior) दर्शाता है।

दूसरी मूवी प्रेम पर आधारित थी। जिसे देख कर बालक डॉल से स्नेह करता है, उसे सहलाता है।

तीसरी मूवी हिंसात्मक (violent) दृश्य-युक्त थी। जिसे देख कर बालक गुड़िया की गर्दन को तोड़ देता है।

**निष्कर्ष (Conclusion)** – इस प्रयोग के आधार बंडूरा ने यह निष्कर्ष निकाला कि छोटे बच्चों को यह नहीं पता होता, कि उनको क्या सीखना चाहिए और क्या नहीं सीखना चाहिए। इसलिए बच्चों के सामने हमेशा आदर्श व्यवहार के प्रतिमान (फ़र्मस डवकमस) को प्रस्तुत करना चाहिए।

**बंडूरा ने सामाजिक अधिगम के चार उपाय बताये हैं –**

1. ध्यान
2. अवधारण
3. पुनः प्रस्तुतीकरण
4. पुनर्बलन

**ध्यान या अवधान (Attention)** – अधिगम विषयवस्तु (जिस को सीखना है) को आकर्षक तथा प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करना अवधान कहलाता है।

**अवधारण या धारण करना (Retention)** – अधिगम के लिए प्रस्तुत किए गए विषय वस्तु को कितना सिखा गया है।

**पुनः प्रस्तुतीकरण (Reproduction)** – उस वस्तु का अधिगम कम प्रभावशाली हो तो अधिगम की विषय वस्तु को पुनः प्रस्तुत करना चाहिए। जैसे छात्र किसी विषय वस्तु को कम सीख पाते हैं तो उसको पुनः दोहराना चाहिए। सिखाने के लिए मॉडल, चित्र, चार्ट आदि सामग्री का उपयोग करना चाहिए।

**पुनर्बलन (Reinforcement)** – विषय वस्तु की पुनः प्रस्तुतीकरण के पश्चात यदि बालक अधिगम की प्रतिपुष्टि कर दे तो यह प्रतिपुष्टि ही पुनर्बलन है। बालक यदि उसे अच्छी तरह सीख लेता है। उसकी प्रशंसा द्वारा उसे प्रेरित करना चाहिए।

**बंडूरा ने सामाजिक अधिगम के निम्न कारक बताए हैं–**

अभिप्रेरणा (Motivation)

स्व नियंत्रण (Self & control)

स्वविवेक (Self discretion)

स्व निर्णय (Self & determination)

स्वअनुक्रिया (Self response)

**सामाजिक अधिगम सिद्धांत (Theory of Social Learning)** – इस का प्रतिपादन किया था अल्बर्ट बंडूरा (।सइमतज ठंदकनतं) ने किया था। इसके अनुसार व्यक्ति अवलोकन, नकल और आदर्श व्यवहार के प्रतिमान के माध्यम से एक-दूसरे से सीखते हैं। उसमाज द्वारा स्वीकार किए जाने वाले व्यवहार को अपनाना तथा वर्जित व्यवहार को नकारना ही सामाजिक अधिगम है। सामाजिक अधिगम सिद्धांत को व्यवहारवाद और संज्ञानात्मक अधिगम सिद्धांतों के बीच की योजक कड़ी कहा

जाता है क्योंकि यह सिद्धांत ध्यान(motivation), स्मृति (attention) और प्रेरणा (memory) तीनों को संयोजित करता है। इसलिए अल्बर्ट बंडूरा को प्रथम मानव व्यवहार-संज्ञानवादी कहते हैं।

### सामाजिक अधिगमवाद का शैक्षिक महत्व (Educational Importance of social learning theory) –

- बच्चों के व्यक्तित्व विकास में सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत सामाजिक अधिगमवाद है।
- यदि बच्चों के सामने अच्छे गुणों वाले व्यवहार को प्रदर्शित किया जाता है। तो उस बालक में वांछित गुणों का किया जा सकता है।
- सामाजिक अधिगम का आधार अनुकरण (Imitation) है।
- बच्चे के सामने आदर्श मॉडल प्रस्तुत करना चाहिए।
- बच्चों के सामने बुरे व्यवहार, अनैतिक मॉडल से बचना चाहिए।

### Unit :- 1.4 Domains of development; Physical, social, emotional, cognitive, moral and language (विकास के क्षेत्र;शारीरिक,सामाजिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक, नैतिक और भाषा) :-

**शारीरिक विकास (Physical development) :-** यह जानना महत्वपूर्ण है कि बच्चे शारीरिक रूप से कैसे विकसित होते हैं क्योंकि शारीरिक विकास बच्चों के व्यवहार को सीधे यह निर्धारित करके प्रभावित करता है कि वे क्या कर सकते हैं और परोक्ष रूप से स्वयं और दूसरों के प्रति उनके दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं। शारीरिक विकास में शरीर के आकार और शरीर के अनुपात में परिवर्तन शामिल होता है जिसे ऊंचाई और वजन के संदर्भ में मापा जाता है। 'शारीरिक विकास में हड्डियों, वसा मांसपेशियों, दांतों की वृद्धि, प्राथमिक और माध्यमिक विशेषताओं के यौवन परिवर्तन और तंत्रिका संबंधी विकास शामिल हैं।

**संज्ञानात्मक विकास (Cognitive development) :-** अनुभूति अधिग्रहण में शामिल मानसिक गतिविधियों को संदर्भित करती है। प्रसंस्करण, संगठन। जानकारी का भंडारण और उपयोग। इन गतिविधियों में विचार करना, कल्पना करना, तर्क करना और न्याय करना शामिल है। किसी व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास के सामान्य स्तर के एकल और वैश्विक माप को बुद्धि कहा जाता है। मस्तिष्क में न्यूरोन पैटर्न बौद्धिक विकास के निर्धारण कारक हैं। मानसिक विकास व्यवहार पैटर्न के संगठन की प्रक्रिया है जो व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक परिपक्वता के चरण में लाता है। 'बच्चों के बौद्धिक विकास पर ऑसर्वेशनल स्टडीज हाई जीन पियाजे, (1896-1980) एक स्विस मनोवैज्ञानिक, को इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर माना जाता है। पियाजे के सिद्धांत में शैशवावस्था से लेकर किशोरावस्था तक सभी आयु शामिल हैं।

**सामाजिक-भावनात्मक विकास (Socio & emotional development) :-** सामाजिक और भावनात्मक संबंध बनाने और बनाए रखने की आपकी क्षमता को दर्शाता है। हर बच्चा सुखद और अप्रिय उत्सर्जन की संभावनाओं के साथ पैदा होता है। शाम के शिशुओं में भावनात्मक रूप से प्रतिक्रिया करने की क्षमता होती है। गहन उत्तेजना के कारण नवजात शिशु के "सामान्य उत्तेजना" में मैं भावनात्मक भार का पहला संकेत हूं। हालांकि, अगले कुछ महीनों में शिशु की भावनात्मक स्थिति बहुत स्पष्ट नहीं है और फैला हुआ प्रतीत होता है। उम्र के साथ। भावनात्मक प्रतिक्रियाएं कम विसरित और यादृच्छिक हो जाती हैं। उदाहरण के लिए, पहले तो बच्चा चिल्ला या रो कर नाराजगी व्यक्त करता है लेकिन बाद में उसकी प्रतिक्रियाओं में विरोध करना, वस्तुओं को फेंकना, शरीर का सख्त होना आदि शामिल हैं। पुरानी भाषाई प्रतिक्रियाएं बढ़ती हैं और बच्चे की मोटर प्रतिक्रियाएं विशेष रूप से भय और क्रोध में कम हो जाती हैं।

**नैतिक विकास (Moral development) :-** किशोरावस्था के साथ आने वाली स्वतंत्रता के लिए स्वतंत्र सोच के साथ-साथ नैतिकता के विकास की आवश्यकता होती है- हेहनियर के मानक जो कि आम तौर पर एक संस्कृति के भीतर सही या उचित होने पर सहमत होते हैं। जिस तरह पियाजे ने माना कि बच्चों का संज्ञानात्मक विकास विशिष्ट पैटर्न का

अनुसरण करता है, लॉरेंस कोहलबर्ग (1984) ने तर्क दिया कि बच्चे सक्रिय सोच और तर्क के माध्यम से अपने नैतिक मूल्यों को सीखते हैं, और यह कि नैतिक विकास चरणों की एक श्रृंखला का अनुसरण करता है।

**भाषा विकास (Language development) :-** जब ग्रहणशील भाषा क्षमता सीमित अभिव्यंजक भाषा विकास प्रभावित होती है तो भाषा में ग्रहणशील अभिव्यंजक शामिल होता है। भाषण अभिव्यंजक भाषा का केवल एक रूप है। यह हमारे विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने में सबसे उपयोगी और सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला रूप है। यदि भाषण को संचार का एक उपयोगी रूप होना है, तो वक्ता को दूसरों द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्दों का उपयोग करना चाहिए।

**Unit :-1.5 Developmental milestones and identifying deviations and giftedness (विकासात्मक मील के पत्थर और विचलन और प्रतिभा की पहचान) :-** विकासात्मक मील के पत्थर व्यवहार या शारीरिक कौशल हैं जो शिशुओं और बच्चों में देखे जाते हैं जो वे बढ़ते और विकसित होते हैं। लुढ़कना, रेंगना, चलना और बात करना सभी मील के पत्थर माने जाते हैं। प्रत्येक आयु सीमा के लिए मील के पत्थर अलग-अलग होते हैं। एक सामान्य सीमा होती है जिसमें एक बच्चा प्रत्येक मील के पत्थर तक पहुँच सकता है। उदाहरण के लिए, कुछ बच्चों में चलना 8 महीने की उम्र में शुरू हो सकता है। अन्य 18 महीने की देरी से चलते हैं और इसे अभी भी सामान्य माना जाता है।

प्रारंभिक वर्षों में स्वास्थ्य देखभाल प्रदाता के पास अच्छी तरह से बच्चे के दौरे के कारणों में से एक आपके बच्चे के विकास का पालन करना है। अधिकांश माता-पिता विभिन्न मील के पत्थर भी देखते हैं। यदि आप अपने बच्चे के विकास के बारे में चिंतित हैं तो अपने बच्चे के प्रदाता से बात करें।

“चेकलिस्ट” या विकासात्मक मील के पत्थर के कैलेंडर को करीब से देखने से माता-पिता को परेशानी हो सकती है यदि उनका बच्चा सामान्य रूप से विकसित नहीं हो रहा है। साथ ही, मील के पत्थर एक ऐसे बच्चे की पहचान करने में मदद कर सकते हैं जिसे अधिक विस्तृत जांच की आवश्यकता है। अनुसंधान से पता चला है कि जितनी जल्दी विकासात्मक सेवाएं शुरू की जाती हैं, परिणाम उतना ही बेहतर होता है। विकासात्मक सेवाओं के उदाहरणों में शामिल हैं: भाषण चिकित्सा, भौतिक चिकित्सा, और विकासात्मक पूर्वस्कूली। नीचे कुछ ऐसी चीजों की सामान्य सूची दी गई है, जिन्हें आप अलग-अलग उम्र में बच्चों को करते हुए देख सकते हैं। ये सटीक दिशानिर्देश नहीं हैं। कई अलग-अलग सामान्य स्थान और विकास के पैटर्न हैं।

**बच्चे की उम्र से जुड़े मील के पत्थर :-**

- 2 महीने पर
- 4 महीने पर
- 6 महीने पर
- 9 महीने पर
- 12 महीने पर

**बच्चा जन्म से 2 महीने की अवस्था तक :-**

**शारीरिक विकास :-**

- जन्म से 1 महीने तक सिर को सहारा नहीं दे सकता है।
- 1 महीने तक पूरे दिन में 20 घंटे सोता है।
- 2 महीने पर पेट के बल लेट कर जो लगाना शुरू करता है।

- हाथों और पैरों को हिलाने डुलाने जैसी आसान हरकत करता है।

#### मानसिक,संज्ञानात्मक विकास :-

- चेहरे पहचानने शुरू करता है।
- आपको दूर से पहचानता है।
- आंखों से चीजों को गौर से देखता है।
- यदि किसी हरकत से उगता है तो उस पर रोता है।

#### सामाजिक, भावात्मक विकास :-

- अचानक से हंसता या मुस्कुराता है।
- यदि कोई उसके साथ नहीं खेलता है तो रोता है।
- कुछ कृतियों की नकल करता है।

#### संवाद ,भाषा विकास :-

- यदि गुस्सा, भूख या थकान लगती है , तो रोता है।
- अभिव्यक्ति के लिए बड़बड़ाने लगता है।
- स्वर बोलने शुरू करता है।

#### बच्चा 6 महीने की उम्र तक :-

##### शारीरिक विकास :-

- बच्चा पेट से पीठ के बल या पेट के बल पलटी मारने या लूढ़कने लगता है।
- अपने सहारे और पीठ को सीधा ना रख पा कर बैठना शुरू कर देता है।
- जब बच्चे को सीधा पकड़ा जाए तब वह अपने पैरों पर कुछ वजन ले सकता है। और उछल सकता है।
- आगे बढ़ने से पहले पीछे धक्का मारता है।

##### मानसिक विकास :-

- चीजों के लिए आसपास देखने लगता है।
- ऐसी चीजों को लेकर जिज्ञासा प्रकट करने लगता है और उन्हें पकड़ने की कोशिश करता है।
- वस्तु का एक हाथ से दूसरे हाथ में देने लगता है।

##### सामाजिक , भावनात्मक विकास :-

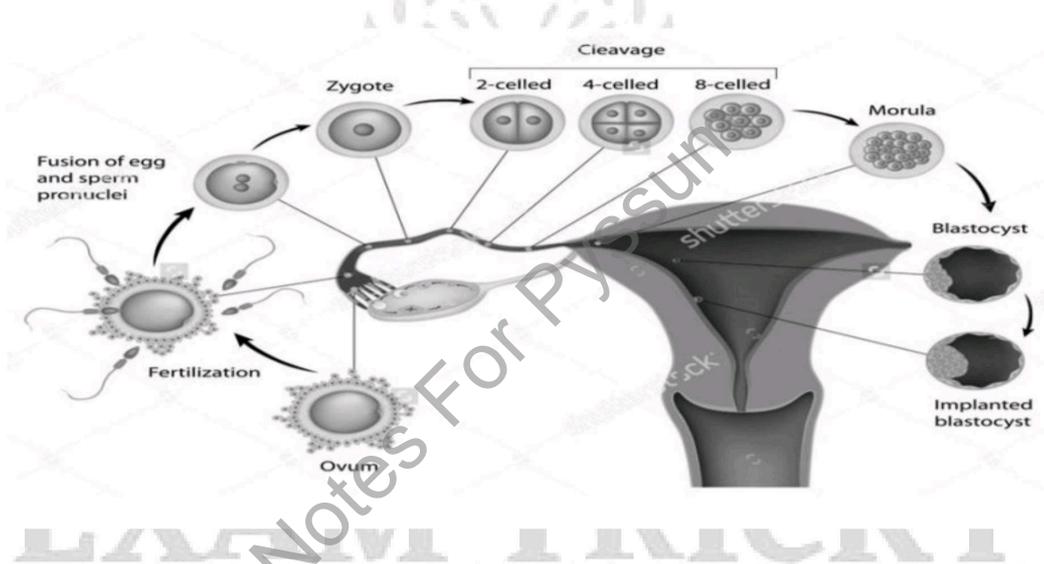
- जब अनजान व्यक्ति उसे देखता है तब यह बात वह जानता है।
- शिशु माता पिता और शिशु के साथ खेलना पसंद करता है।
- उद्देश्य के लिए हथेली से चीजों को पकड़ता है।
- अपनी भावनाओं पर प्रतिक्रिया करता है, आमतौर पर खुश रहता है।
- खुश होने पर गले लगता है।

##### भाषा विकास :-

- जब बच्चा अपना नाम सुनता है तब वह उस पर प्रतिक्रिया करता है।
- जैसे "आह" "ओ" आदिश्वर बोलता है।
- " म" "ब" जैसे व्यंजन बोलना शुरू करता है।
- आवाज निकाल कर भावनाएं प्रकट करता है।

**Unit :- 2 Ages and stages of development (Birth to Childhood)** उम्र और विकास के चरण (जन्म से बचपन तक)

**Unit :- 2.1 Prenatal (conception to birth)** प्रसव पूर्व (गर्भधारण से जन्म तक) :- शुक्राणु और डिंब जो नए व्यक्ति को बनाने के लिए एकजुट होते हैं, प्रजनन के कार्य के लिए विशिष्ट रूप से अनुकूल होते हैं। डिंब एक छोटा गोला है, जिसका व्यास 1/175 इंच है जो इस वाक्य के अंत में अवधि के डॉट आकार के रूप में नग्न पूर्व संध्याओं को मुश्किल से दिखाई देता है। लेकिन इसकी सूक्ष्म दुनिया में, यह एक विशालकाय— मानव शरीर की सबसे बड़ी कोशिका है। डिंब का आकार इसे बहुत छोटे शुक्राणु के लिए एक आदर्श लक्ष्य बनाता है, जिसका माप केवल 1/16वें इंच है।



**धारणा (Conception) :-** पुरुष बड़ी संख्या में शुक्राणु पैदा करते हैं—औसतन पीएफ 300 मिलियन प्रति दिन। परिपक्वता की अंतिम प्रक्रिया में, प्रत्येक शुक्राणु एक पूंछ विकसित करता है जो इसे लंबी दूरी तक तैरने की अनुमति देता है, महिला प्रजनन पथ में, गर्भाशय, ग्रीवा में, जहां आमतौर पर निषेचन होता है। यात्रा कठिन है, और कई शुक्राणु मर जाते हैं। यदि कोई उपस्थित होता है तो केवल 300 से 500 ही डिंब तक पहुंचते हैं। शुक्राणु 6 दिनों तक जीवित रहते हैं और डिंब के इंतजार में झूठ बोल सकते हैं, जो फैलोपियन ट्यूब में महसूस होने के बाद केवल 1 दिन तक जीवित रहता है। हालांकि अधिकांश गर्भधारण 3 दिन की अवधि के दौरान संभोग के परिणामस्वरूप होते हैं – पिछले दिनों के दौरान ओव्यूलेशन के दिन

**1. युग्मनज की अवधि (Period Of The Zygote) :-** युग्मनज की अवधि निषेचन से लगभग दो सप्ताह तक चलती है, जब तक कि कोशिका का छोटा द्रव्यमान फैलोपियन ट्यूब से नीचे और बाहर नहीं जाता है और अपने आप को गर्भाशय की दीवार से जोड़ लेता है। युग्मनज का पहला कोशिका दोहराव लंबा और खींचा हुआ होता है यह गर्भधारण के लगभग 30 घंटे बाद तक पूरा नहीं होता है। चौथे दिन तक, 60 से 70 कोशिकाएँ मौजूद होती हैं जो एक ब्लास्टोसिस्ट कहलाती हैं। ब्लास्टोसिस्ट के अंदर की कोशिका, जिसे भ्रूण डिस्क कहा जाता है, नया जीव बन जाएगा कोशिकाओं की पतली बाहरी रिंग, जिसे ट्रॉफोब्लास्ट कहा जाता है, वे संरचनाएं बन जाएंगी जो सुरक्षात्मक आवरण और पोषण प्रदान करती हैं।

**प्रत्यारोपण (Implantation) :-** सातवें और नौवें दिन के बीच, आरोपण होता है। ब्लास्टोसिस्ट गर्भाशय की दीवार में आक्रमण करता है और उसमें प्रत्यारोपित हो जाता है।

**The Placenta and Umbilical Cord** :- प्लेसेंटा भोजन और ऑक्सीजन को विकासशील जीवों तक पहुंचने की अनुमति देता है और अपशिष्ट उत्पाद को ले जाया जाता है। मेमरेन ऐसे रूप हैं जो इन वस्तुओं का आदान-प्रदान करने के लिए सभी को कुटीर को मां और भ्रूण के रक्त रूप को सीधे मिलाने से रोकता है। प्लेसेंटा विकासशील जीव के गर्भनाल से जुड़ा होता है, जो पहले एक आदिम हॉडी डंठल के रूप में प्रकट होता है और गर्भावस्था के दौरान, 1 से 3 फीट की लंबाई तक बढ़ता है। युग्मनज की अवधि तक, विकासशील जीवों ने गर्भाशय में भोजन और आश्रय पाया है।

**2. भ्रूण की अवधि (Period of the Embryo)** :- गर्भावस्था के आठवें सप्ताह के दौरान इम्ब्रो इम्प्लांटेशन से लेकर आठवें सप्ताह तक रहता है। इन छह हफ्तों के दौरान, सबसे तेजी से प्रसवपूर्व परिवर्तन होते हैं, क्योंकि सभी हॉडी स्ट्रक्चर और आंतरिक अंगों के लिए नींव रखी जाती है।

**पहले महीने की आखिरी छमाही** :- इस अवधि के पहले सप्ताह में, भ्रूण डिस्क कोशिकाओं की तीन परतें बनाती है: (1) एक्टोडर्म, जो तंत्रिका तंत्र और त्वचा बन जाएगा (2) मेसोडर्म, जिससे मांसपेशियों, कंकाल, संचार प्रणाली और अन्य आंतरिक अंगों का विकास होगा और (3) एंडोडर्म, जो पाचन तंत्र, फेफड़े, मूत्र पथ और ग्रंथियों का काम करेगा। ये तीन परतें शरीर के सभी भागों को जन्म देती हैं।

**दूसरा महीना** :- दूसरे महीने में, वृद्धि तेजी से जारी है। 'मैं' आंख, कान, नाक, जबड़ा और गर्दन का रूप है। छोटी कलियाँ हाथ, पैर, उँगलियाँ और पैर की उँगलियाँ बन जाती हैं। आंतरिक अंग अधिक दूर होते हैं: आंते बढ़ती हैं, हृदय अलग कक्ष विकसित करता है, और यकृत।

7 सप्ताह में, उत्पादन न्यूरोन्स (तंत्रिका कोशिकाएं जो सूचनाओं को संग्रहीत और संचारित करती हैं) 250,000 प्रति मिनट से अधिक की आश्चर्यजनक गति से तंत्रिका ट्यूब के अंदर गहराई से शुरू होती हैं

इस अवधि के अंत में, भ्रूण 1 इंच लंबा और 147 औंस वजन में होना चाहिए—पहले से ही अपनी दुनिया को महसूस करना चाहिए। यह स्पर्श करने के लिए प्रतिक्रिया करता है, विशेष रूप से मुंह क्षेत्र और पैरों के तलवों में।

**3. भ्रूण की अवधि (Period of the Fetus)** :- भ्रूण की अवधि, नौवें सप्ताह से गर्भावस्था के अंत तक, सबसे लंबी प्रसवपूर्व अवधि होती है। वृद्धि और परिष्करण चरण के दौरान जीव विशेष रूप से नौवें बीसवें सप्ताह से पांच में तेजी से बढ़ता है।

**तीसरा महीना** :- तीसरे महीने में अंगों की मांसपेशियां और तंत्रिका तंत्र संगठित और जुड़े होने लगते हैं जब मस्तिष्क संकेत देता है कि भ्रूण अपनी बांह को मोड़ता है, मुट्ठी अपने पैर की उंगलियों को मोड़ता है, अपना सिर घुमाता है। अपना मुंह खोलो, और अंगूठा चूसो, फैलाओ और जम्हाई लो। छोटे फेफड़े बारहवें सप्ताह तक सांस लेने की गति के शुरुआती पूर्वाभ्यास में विस्तार और अनुबंध करना शुरू कर देते हैं, बाहरी जननांग अच्छी तरह से बनते हैं, और अल्ट्रासाउंड के साथ भ्रूण के लिंग का पता लगाया जा सकता है। अन्य परिष्करण स्पर्श नाखूनों, पैर के नाखूनों, दांत, कलियों और पलकों के रूप में दिखाई देते हैं। दिल की धड़कन अब स्टेथोस्कोप से सुनी जा सकती है। प्रसवपूर्व विकास को कभी-कभी ट्राइमेस्टर या तीन समान समय अवधि में विभाजित किया जाता है। तीसरे महीने के अंत में, पहली तिमाही पूरी हो जाती है।

**दूसरी तिमाही** :- दूसरी तिमाही के मध्य तक, 17 से 20 सप्ताह के बीच, नया प्राणी बड़ा हो गया है कि, माँ उसकी गति को महसूस कर सकती है। वर्निक्स नामक एक सफेद थिज त्वचा को कवर करती है, जो एमनियोटिक द्रव में बिताए लंबे महीने के दौरान त्वचा को फटने से बचाती है। लानुगो नामक सफेद बाल भी पूरे शरीर को ढक लेते हैं जिससे वर्निक्स त्वचा से चिपक जाता है। दूसरी तिमाही के अंत में, कई अंग अच्छी तरह से विकसित होते हैं। इसके अलावा, मस्तिष्क के अधिकांश न्यूरोन्स की पहाड़ी जगह पर है। इस समय के बाद कुछ उत्पादन होगा। परिणामस्वरूप मस्तिष्क का वजन कम हो जाता है। मस्तिष्क की वृद्धि का अर्थ है नई व्यवहार क्षमता। 20 सप्ताह का भ्रूण ध्वनि से उत्तेजित होने के साथ-साथ चिढ़ भी सकता है। 22वें सप्ताह के बाद तीव्र नेत्र गति के साथ आंखों की धीमी गति दिखाई देती है। फिर भी, इस समय एक भ्रूण का सींग जीवित नहीं रह सकता है। इसके फेफड़े अभी तक अपरिपक्व हैं, और मस्तिष्क अभी तक सांस लेने

की गति को नियंत्रित नहीं कर सकता है। लगभग 28 सप्ताह का भ्रूण आस-पास की आवाजों की प्रतिक्रिया में वहाँ आँखें झपकाता है। गर्भावस्था के अंत तक, भ्रूण एक व्यक्तित्व की शुरुआत लेता है। गर्भावस्था के अंतिम सप्ताह में उच्च भ्रूण गतिविधि जीवन के पहले महीने में वास्तव में अधिक सक्रिय होने की भविष्यवाणी करती है। भ्रूण गतिविधि स्तर स्वस्थ न्यूरोलॉजिकल विकास का एक संकेतक है जो अनुकूलन क्षमता बचपन को बढ़ावा देता है।

**Unit :- 2.2 Infancy (Birth to 2 year) (शैशवावस्था (जन्म से 2 वर्ष) :-** शैशवावस्था में जीवन का पहला वर्ष शामिल होता है। यह अधिकांश शारीरिक प्रणालियों और आयामों में तेजी से विकास और न्यूरोमस्क्युलर सिस्टम के तेजी से विकास की अवधि है। जन्म के बाद, विकास जीवन की कार्यात्मक अवस्था की ओर उन्मुख होता है, विकास मुख्य रूप से अधिक कोशिकाओं के जुड़ने या प्रोटोप्लाज्म में वृद्धि के द्वारा होता है। यह कहा जा सकता है कि एनाबॉलिक प्रक्रियाएं कैटोबोलिक प्रक्रियाओं से अधिक होती हैं और आकार और वजन में वृद्धि होती है। यह शिशु अवस्था की विशेषता है।

जन्म के तुरंत बाद वृद्धि की दर बढ़ जाती है। वजन के मामले में चरम वेग जन्म के दो महीने बाद पहुंच जाता है। कोशिकाएं आकार में बड़ी हो जाती हैं। जैसे ही बच्चा सिर को सीधा करना शुरू करता है और बैठने और खड़े होने की कोशिश करता है, रीढ़ की हड्डी के स्तंभ की ग्रीवा और काठ की वक्रता दिखाई देती है। शैशवावस्था में विकास बहुत तीव्र गति से होता है। जीवन के पहले वर्ष के दौरान 50 प्रतिशत से अधिक जन्म की लंबाई और 200 प्रतिशत से अधिक वजन होता है।

**नवजात अवधि (The neonatal period) :-** नवजात अवधि (जन्म से महीने) गर्भाशय के वातावरण से बाहरी दुनिया में व्यापक और चल रहे सिस्टम संक्रमण का समय है इसमें जन्म के बाद की प्रारंभिक अवधि शामिल है जिसे प्रसवकालीन अवधि कहा जाता है।

**नवजात और नींद (Neonates and sleep) :-**

- इस समय में वे जीवन भर सोने से ज्यादा सोते हैं
- नवजात अधिकांश समय (लगभग 243 समय) सोने (16 घंटे) में बिताता है – यह शेष जीवन में लगभग 20: तक कम हो जाता है।

**नवजात और रोना (Neonates and crying) :-**

- नवजात शिशु प्रतिदिन लगभग 2 घंटे रोने में बिताते हैं – जन्म के बाद 6 सप्ताह तक बढ़ जाता है।
- जब तक वे बड़े नहीं हो जाते, तब तक ज्यादातर गैर-संचारी हो सकते हैं, लेकिन भूख, बेचौनी, दर्द या अति उत्तेजना के कारण भी हो सकते हैं।

**शारीरिक विकास (Physical development) :-**

- नवजात विकास: नवजात एक चमत्कारी, अद्वितीय व्यक्ति होता है जिसमें प्रभावशाली विशेषताएं होती हैं।
- बच्चा केवल कुछ जन्मजात सजगता के साथ पैदा होता है लेकिन जल्दी परिपक्व होता है और बदल जाता है।
- जन्म के समय नर और मादा का वजन लगभग 7 प्से होता है। और औसत 19" लंबा। (यह लगभग एक गैलन दूध का वजन और कोहनी से उंगलियों तक की लंबाई है।) नर जन्म के समय महिलाओं की तुलना में थोड़े भारी और बड़े होते हैं। जीवन के पहले दो वर्षों के दौरान शारीरिक विकास तेजी से होता है।

**संवेदी और मोटर कौशल विकास (Sensory and motor skills development) :-** नवजात शिशुओं में सभी पांच इंद्रियां होती हैं। आपका नवजात शिशु आपके चेहरे, आपकी आवाज की आवाज और आपकी गंध को जल्दी से पहचानना सीख जाता है। आपके नवजात शिशु के स्पर्श की भावना विशेष रूप से मुंह के आसपास विकसित होती है। आपके शिशु

को भी सूँघने की शक्ति तेज होती है। कुछ दिनों के बाद, आपका नवजात शिशु काफी अच्छी तरह से सुनता है और तेज आवाजों पर सबसे ज्यादा ध्यान देता है। आपका शिशु मीठा स्वाद पहचानता है और पसंद करता है जो खट्टा, कड़वा या नमकीन होता है। दृष्टि तेजी से विकसित हो रही है, लेकिन इसे इंद्रियों में सबसे कमजोर माना जाता है। जैसे-जैसे आपके बच्चे की मांसपेशियां और नसें एक साथ काम करती हैं, मोटर कौशल विकसित होते हैं। आंदोलनों को ज्यादातर रिप्लेक्सिस द्वारा नियंत्रित किया जाता है, जैसे कि रूटिंग रिप्लेक्स, जो तब होता है जब एक नवजात शिशु का सिर मुड़ जाता है और उसका मुँह स्पर्श की ओर "पहुँच" जाता है।

विकासात्मक मनोवैज्ञानिकों ने शैशव शब्द का प्रयोग विकास की उस अवधि को निरूपित करने के लिए किया जो सामान्यतः जन्म से दो वर्ष की आयु तक होती है। शिशु शब्द का अर्थ है "भाषा के बिना"। शैशवावस्था में अनुभूति, धारणा, मोटर गतिविधि, भावना, सामाजिकता और भाषा के क्षेत्रों में विकास शामिल है। शैशवावस्था की शुरुआत में शिशु मानव चेहरों को पहचान सकते हैं और उसके बाद वे ज्ञात और अज्ञात चेहरों के बीच अंतर कर सकते हैं और अलग तरह से प्रतिक्रिया कर सकते हैं। विभिन्न क्षेत्रों में विकास शैशवावस्था से बाल्यावस्था तक होता है, अर्थात् जीवन के प्रथम तीन वर्ष।

**शारीरिक विकास (Physical development) :-** यह शरीर में होने वाले परिवर्तनों को संदर्भित करता है। यह विकास शैशवावस्था में तीव्र गति से होता है। एकोन पहले वर्ष के दौरान शिशु अपने शरीर का वजन लगभग तीन गुना और ऊँचाई में लगभग एक तिहाई वृद्धि करते हैं। न केवल शिशु के शरीर का आकार और वजन बढ़ता है, बल्कि मस्तिष्क का आकार भी पहले 18 महीनों के दौरान तेजी से फैलता है और शिशु के मस्तिष्क का वजन आधे से अधिक वयस्क मस्तिष्क तक पहुँच जाता है, शारीरिक विकास में विसर्जन में विकास, श्रवण, अवधारणात्मक विकास आदि भी शामिल हैं। शिशुओं का मोटर विकास क्रमिक क्रम में होता है और इस प्रकार का विकास सिर से अंगों की ओर होता है। शिशु पहले अपने सिर और धड़ को नियंत्रित करता है, फिर अपनी छाती को ऊपर उठाता है, सीधा बैठता है, हिलता-डुलता है, खड़ा होता है, मदद के साथ खड़ा होता है, कुछ वस्तुओं को पकड़कर खड़ा होता है, चलता है आदि। यह विकास कौशल में सुधार और शरीर के अन्य अंगों जैसे पैर, हाथ आदि के नियंत्रण के कारण होता है। धीरे-धीरे बच्चे अपनी आंख, सिर और हाथ का समन्वय विकसित करते हैं और चीजों को समझने में सक्षम होते हैं।

पियाजे ने नोट किया कि शैशवावस्था के दौरान संज्ञानात्मक विकास की संवेदी सबसे अधिक अवस्था होती है। शैशवावस्था में दृष्टि का विकास होता है, मांसपेशियों और तंत्रिका तंत्र पर नियंत्रण होता है, नियमित अंतराल पर खाना और सोना शुरू होता है, अपने आप बैठना और खुद को पकड़ना होता है।

**सामाजिक और भावनात्मक विकास (Social and Emotional Development) :-** लगभग दो महीने के शिशु मानवीय चेहरों की प्रतिक्रिया में सामाजिक मुस्कान का प्रदर्शन करते हैं। जब वे चार महीने के होते हैं, तो वे हंसी दिखाते हैं और छह महीने तक क्रोध, दुख और आश्चर्य व्यक्त करते हैं। 8 या 10 महीने तक, वे सक्रिय रूप से अन्य लोगों की भावनाओं के बारे में जानकारी चाहते हैं। जब कोई उन्हें छह से बारह महीने की उम्र में उनके नाम से बुलाता है तो वे प्रतिक्रिया देना सीखते हैं। उनका आमने-सामने संपर्क भी होता है। वे डरते हैं जब उनके माता-पिता या देखभाल करने वाले उन्हें छोड़ देते हैं। उनकी जरूरतें पूरी नहीं होने पर वे क्रोध व्यक्त करना शुरू कर देते हैं। इस प्रकार, सामाजिक और भावनात्मक विकास शैशवावस्था से लेकर बचपन तक ही शुरू हो जाता है। बच्चे अपने विश्वास, भय, आत्मविश्वास, प्रेम की भावनाओं को व्यक्त करना शुरू कर देते हैं, आदि। वे सामाजिक भावनात्मक विकास के एक भाग के रूप में दूसरों के प्रति स्नेह के रूप में स्नेह व्यक्त करते हैं। यदि इस अवधि के दौरान किसी बच्चे की उपेक्षा की जाती है, तो यह उसके सामाजिक भावनात्मक विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। इस अवधि के दौरान जब बच्चे अपने देखभाल करने वालों, माता-पिता से जुड़े होते हैं और अन्य भाई-बहन, आदि, इसलिए बच्चों को उनसे अलग होने पर अलगाव की चिंता विकसित होती है। यह नौ महीने की उम्र में प्रकट होता है।

**संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development) :-** शिशु गड़गड़ाहट, कूड़ंग आदि विभिन्न आवाजें करके अपनी बुद्धि व्यक्त करते हैं। वे अपने हाथों और पैरों का निरीक्षण करते हैं। वे धीरे-धीरे अपने कार्यों और बाहरी दुनिया के बीच संबंध सीखते हैं। वे प्रभाव उत्पन्न करने के लिए विभिन्न वस्तुओं में हेरफेर कर सकते हैं। ऐसा लगता है कि शिशु मोटर गतिविधियों और संवेदी छापों के माध्यम से ही दुनिया के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं। वे अपनी आंखों को विभिन्न वस्तुओं और लोगों पर केंद्रित करने की कोशिश करते हैं, सब कुछ अपना मुंह लगाते हैं। बच्चों में शैशवावस्था के दौरान मानसिक प्रतिनिधित्व करने की क्षमता विकसित होती है। महीने के अंत के आसपास, शिशु वस्तु स्थायित्व का प्रदर्शन करते हैं। बचपन की अवस्था तक वे मामा, पापा जैसी आवाजें निकालना सीख जाते हैं, वे अन्य गतिविधियों की तरह विभिन्न गतिविधियों की नकल करने की कोशिश करते हैं। 12 महीने की उम्र तक कई बच्चे कुछ ऐसे शब्द कहने में सक्षम हो जाते हैं जिन्हें दूसरे समझ सकते हैं। शैशवावस्था के दौरान बच्चे भाषा कौशल विकसित करना शुरू कर देते हैं, अपनी इंद्रियों को सीखते हैं और अपने तरीके से दुनिया का पता लगाते हैं। इस अवधि में बच्चे दूसरों पर निर्भर होते हैं जहां बचपन की अवस्था में, रचनात्मकता और दृश्यता हावी हो जाती है। शैशव काल में भावनाएँ सरल प्रकार की होती हैं लेकिन बालकों में भावनाएँ अलग-अलग प्रकार की होती हैं और जीवन के अन्य कालखंडों की तुलना में विकास तेज होता है।

**Unit :- 2.3 Toddler बच्चा (2 से 4 वर्ष) :-** Toddler वर्षों के दौरान, आपका बच्चा विकास के निम्नलिखित पांच मुख्य क्षेत्रों में नाटकीय रूप से परिवर्तन जारी रखेगा: शारीरिक, संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक, भाषा, और संवेदी और मोटर कौशल।

**शारीरिक विकास (Physical Development) :-** जबकि बच्चे लगभग तीन से पांच पाउंड प्राप्त करते हैं और एक और दो साल के बीच तीन से पांच इंच बढ़ते हैं, यह तेजी से विकास दो से पांच साल के बीच धीमा हो जाता है। इस दौरान आपके बच्चे की ताकत और समन्वय में वृद्धि होगी।

**संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development) :-** एक और दो साल की उम्र के बीच, परिचित लोगों और वस्तुओं को पहचानना शुरू करने के बाद। आपका बच्चा हाल की घटनाओं को बेहतर ढंग से याद करने में सक्षम होगा, इस उम्र के दौरान आपका बच्चा दूसरों की नकल करेगा और अधिक कल्पनाशील हो जाएगा, खासकर खेल के समय के दौरान। जैसे-जैसे बच्चे अक्षर, संख्या, प्रतीक और रंग सीखते हैं, दो से पांच तक सोचने और समझने की क्षमता बहुत बढ़ जाती है।

**भावनात्मक और सामाजिक विकास (Emotional and Social Development) :-** इस उम्र के दौरान प्रतिस्पर्धा का विकास होता है। 12 से 24 महीनों तक, बच्चे अपने प्रियजनों के साथ मजबूत बंधन विकसित करना जारी रखते हैं, साथ ही साथ वह और अधिक स्वतंत्र होना चाहते हैं। दो और चार साल की उम्र के बीच, आपका बच्चा "इसे स्वयं करें" पसंद करना शुरू कर देगा और अपने दम पर अधिक विकल्प बनाना चाहेगा। पांच साल की उम्र से, बच्चे अपनी भावनाओं के बारे में अधिक सीखते हैं और अपनी उम्र के अन्य बच्चों के साथ दोस्ती विकसित करना शुरू कर देते हैं। बच्चे इस उम्र में सही और गलत का फर्क समझने लगते हैं। वे अक्सर इन सीमाओं का परीक्षण भी करेंगे। अक्सर, जब इस उम्र के बच्चे कुछ गलत करते हैं, तो वे इसके लिए दोषी महसूस करने लगेंगे।

**भाषा विकास (Language Development) :-** एक बच्चे के भाषा विकास में भाषण की तुलना में समझ तेजी से बढ़ती है। 15 से 18 महीनों के बीच, अधिकांश बच्चे मौखिक रूप से संवाद करने की तुलना में 10 गुना अधिक शब्द जानते हैं। हालांकि, दो साल की उम्र तक, शब्दसंग्रह 50 और 100 शब्दों के बीच हो सकते हैं और बच्चे संयोजन में दो या अधिक शब्दों का उपयोग करना शुरू कर देते हैं। पांच साल की उम्र तक, बच्चे संवाद करने के लिए हजारों शब्दों का उपयोग कर सकते हैं और वाक्यों में बोलेंगे।

**संवेदी और मोटर विकास (Sensory and Motor Development) :-** मोटर कौशल में सुधार आपके बच्चे को दो साल की उम्र तक अधिक सक्षम बनाता है। जब आपका बच्चा लगातार गति में होगा। टैडलर्स जल्दी से चलने में महारत

हासिल कर लेंगे और दौड़ने, कूदने और चढ़ने के लिए आगे बढ़ेंगे। लगभग दो साल की उम्र में, अधिकांश बच्चे सीढ़ियों पर चढ़ने करने, किक करने या हॉल फेंकने और सरल रेखाएं खींचने में सक्षम होंगे। इस समय के दौरान, बच्चे बार-बार ठोकर खा सकते हैं और दुर्घटना का शिकार हो सकते हैं। पांच साल की उम्र तक, ठीक मोटर कौशल का बेहतर नियंत्रण बच्चों को कपड़े पहनने और खुद से उतारने (शौचालय प्रशिक्षण के लिए एक आवश्यकता) और कुछ पत्र लिखने की अनुमति देता है।

**Unit :- 2.4 Early childhood (Up to 7 years) प्रारंभिक बचपन (7 वर्ष तक) :-** बचपन आमतौर पर शैशवावस्था के अंत (पहले जन्मदिन) से किशोरावस्था की शुरुआत तक फैला होता है। किशोरावस्था में पहुंचने से पहले ही शिशु को बाल्यावस्था प्राप्त हो जाती है। प्रारंभिक बचपन (2-6 वर्ष): दूध के दांतों के टूटने की अवधि है। मोटर कौशल परिष्कृत होते हैं, भाषा विकसित होती है, साथियों के साथ संबंध बनते हैं, और बच्चा खेल के माध्यम से सीखता है। मध्य बचपन (7 से 11 वर्ष) स्थायी दांतों के आने की अवधि है। ये स्कूल के वर्ष हैं जब बच्चा साक्षरता कौशल हासिल करता है, विचार प्रक्रियाओं को परिष्कृत करता है, दोस्ती उभरती है और आत्म-अवधारणा बनती है।

प्रारंभिक बचपन विकास के सभी क्षेत्रों में जबरदस्त विकास का समय है। आश्रित नवजात एक युवा व्यक्ति के रूप में विकसित होता है जो अपने शरीर की देखभाल कर सकता है और दूसरों के साथ प्रभावी ढंग से बातचीत कर सकता है। इन कारणों से, इस चरण का प्राथमिक विकास कार्य कौशल विकास है।

शारीरिक रूप से, जन्म और तीन साल की उम्र के बीच एक बच्चा आमतौर पर ऊंचाई में दोगुना और वजन में चौगुना हो जाता है। शारीरिक अनुपात भी बदल जाता है, जिससे शिशु, जिसका सिर शरीर की कुल लंबाई का लगभग एक-चौथाई होता है, अधिक संतुलित, वयस्क जैसी दिखने वाला बच्चा बन जाता है। इन तीव्र शारीरिक परिवर्तनों के बावजूद, तीन वर्षीय बच्चे ने कई कौशलों में महारत हासिल की है, जिसमें बैठना, चलना, शौचालय प्रशिक्षण, चम्मच का उपयोग करना, लिखना और गेंद को पकड़ना और फेंकना शामिल है।

तीन से पांच साल की उम्र के बीच। बच्चे तेजी से बढ़ते रहते हैं और सूक्ष्म मोटर कौशल विकसित करना शुरू करते हैं। पांच साल की उम्र तक अधिकांश बच्चे पेंसिल, क्रेयॉन और कैंची पर काफी अच्छा नियंत्रण प्रदर्शित करते हैं। सकल मोटर उपलब्धियों में एक पैर पर छोड़ने और संतुलन करने की क्षमता शामिल हो सकती है। पांच से आठ साल की उम्र के बीच शारीरिक विकास धीमा हो जाता है, जबकि शरीर के अनुपात और मोटर कौशल अधिक परिष्कृत हो जाते हैं। प्रारंभिक बचपन में शारीरिक परिवर्तन के साथ बच्चे के संज्ञानात्मक और भाषा के विकास में तेजी से बदलाव आते हैं। जिस क्षण से वे पैदा होते हैं, बच्चे अपने सभी इंद्रियों का उपयोग अपने पर्यावरण में शामिल होने के लिए करते हैं, और वे अपने कार्यों और देखभाल करने वालों की प्रतिक्रियाओं से कारण और प्रभाव की भावना विकसित करना शुरू कर देते हैं।

(जीवन के पहले तीन वर्षों में, बच्चे 300 और 1,000 शब्दों के बीच बोली जाने वाली शब्दावली विकसित करते हैं, और वे अपने आसपास की दुनिया को सीखने और उसका वर्णन करने के लिए भाषा का उपयोग करने में सक्षम होते हैं। पांच साल की उम्र तक, एक बच्चे की शब्दावली लगभग 1,500 शब्दों तक बढ़ जाएगी। पांच साल के बच्चे भी पांच से सात-वर्ड वाक्य बनाने में सक्षम हैं, भूत काल का उपयोग करना सीखते हैं, और संकेतों के रूप में चित्रों का उपयोग करके परिचित कहानियां बताते हैं। संज्ञानात्मक विकास को बढ़ाने के लिए भाषा एक शक्तिशाली उपकरण है। भाषा का उपयोग करने से बच्चे को अनुमति मिलती है दूसरों के साथ संवाद करने और समस्याओं को हल करने के लिए। आठ साल की उम्र तक, बच्चे समय और धन सहित कम ठोस अवधारणाओं की कुछ हसिक समझ का प्रदर्शन करने में सक्षम होते हैं। हालांकि, आठ साल का अभी भी ठोस तरीके से तर्क करता है और इसमें कठिनाई होती है।

बचपन के सामाजिक-भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण क्षण लगभग एक वर्ष की आयु में होता है। यह वह समय है जब लगाव का गठन महत्वपूर्ण हो जाता है। अटैचमेंट थ्योरी से पता चलता है कि बाद के जीवन के कामकाज और व्यक्तित्व में व्यक्तिगत अंतर एक बच्चे के अपने देखभाल करने वालों के साथ शुरुआती अनुभवों से आकार लेते हैं।

भावनात्मक लगाव की गुणवत्ता, या लगाव की कमी, जीवन के शुरुआती दिनों में बनी, बाद के रिश्तों के लिए एक मॉडल के रूप में काम कर सकती है।

तीन से पांच साल की उम्र में, सामाजिक-भावनात्मक कौशल में वृद्धि में सहकर्मी संबंधों का निर्माण, लिंग की पहचान और सही और गलत की भावना का विकास शामिल है। किसी अन्य व्यक्ति के परिप्रेक्ष्य को लेना युवा बच्चों के लिए कठिन होता है, और घटनाओं की व्याख्या अक्सर सभी या कुछ नहीं के रूप में की जाती है, जिसका प्रभाव बच्चे पर सबसे अधिक होता है।

**शारीरिक विकास (Physical Development) :-** प्रारंभिक बचपन की अवस्था 3 से 6 वर्ष की आयु सीमा को कवर करती है। बच्चे एथलेटिक रूप विकसित करना शुरू कर देते हैं और वे अपनी बचकानी गोलाई खो देते हैं। जैसे-जैसे पेट की मांसपेशियां विकसित होती हैं। हाथ और पैर लंबे हो जाते हैं। उनका दिमाग और सिर शरीर के किसी भी हिस्से की तुलना में तेजी से बढ़ता है।

**मनोसामाजिक विकास (Psychosocial Development) :-** बचपन की प्रारंभिक अवस्था में बच्चे पूरे वाक्य बोल सकते हैं, अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं और अपनी जरूरतों और भावनाओं को संप्रेषित कर सकते हैं और अपनी जरूरतों और भावनाओं को दूसरों के साथ संवाद कर सकते हैं। प्रारंभिक बचपन के दौरान बच्चों का अपनी शारीरिक गति पर बेहतर नियंत्रण होता है और उनके शरीर के अंगों का बेहतर समन्वय हो सकता है। वे यह भी सीखते हैं कि अन्य बच्चों के साथ कैसे सहयोग करें और जब वे पांच या छह वर्ष की आयु के होते हैं तो संघर्ष समाधान विभिन्न तरीकों से स्वतंत्र होते हैं। तीन महत्वपूर्ण सामाजिक-भावनात्मक विकास हैं, जैसे स्वयं का विकास, लिंग भूमिका और नैतिक विकास, बचपन की अवधि के दौरान होता है। पहचान की प्रक्रिया के माध्यम से बच्चे को पता चल जाता है कि वह कौन है और वह जो बनना चाहता है, उसमें अंतर करता है। बच्चा अपने माता-पिता और महत्वपूर्ण अन्य लोगों के अवलोकन और अनुकरण के माध्यम से इस प्रक्रिया से अवगत होता है। इस पहचान से बच्चे के व्यक्तित्व का निर्धारण होता है। बच्चा सामाजिक घटनाओं को देखकर और उनमें भाग लेकर सामाजिक रूप से उपयुक्त व्यवहार सीखता है। जब बच्चे 5 से 6 वर्ष की आयु के होते हैं तो वे समझ सकते हैं कि वे एक विशेष लिंग से संबंधित हैं। और लैंगिक भूमिकाएं निभाना भी सीखें।

**संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development) :-** बच्चों के संज्ञानात्मक विकास के लिए बचपन की अवधि महत्वपूर्ण है। बच्चे हर चीज के लिए "क्यों", "कहाँ" और "कैसे" जैसे सवालों के जवाब जानने के लिए उतावले रहते हैं। संज्ञानात्मक क्षमताओं में स्मृति, तर्क, धारणा, शब्द हल करने और सोचने की क्षमता शामिल होती है जो पूरे बचपन में उभरती रहती है। जीन पियाजे ने बचपन के संज्ञानात्मक विकास पर काम किया, उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि बच्चे वयस्कों की तुलना में कम बुद्धिमान नहीं होते हैं, लेकिन वे बस अलग तरह से सोचते हैं। पियाजे ने समझाया कि मनुष्य जिस वातावरण में रहता है, उसके साथ बातचीत के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करता है, पियाजे ने प्रारंभिक बच्चों (2 से 7 वर्ष) को संज्ञानात्मक विकास के पूर्व-संचालन चरण के रूप में नामित किया है, जो सहानुभूतिपूर्ण विचार, प्रतिनिधित्व क्षमता के उपयोग में एक बड़ा विस्तार है। लेकिन वे तर्क का उपयोग करने में सक्षम नहीं हैं। इस अवस्था में बच्चों को इसके बारे में सोचने के लिए किसी वस्तु, व्यक्ति या घटना के साथ संवेदी मोटर संपर्क में होने की आवश्यकता नहीं होती है। वे जानते हैं कि सतही विकल्प चीजों की प्रकृति को नहीं बदलते हैं और कारण-प्रभाव संबंध को भी समझते हैं। वे वस्तुओं, लोगों और घटनाओं को वर्गीकृत करने की क्षमता विकसित करते हैं। बच्चे मात्राओं को गिन सकते हैं और उनसे निपट सकते हैं। वे यह कल्पना करने में अधिक सक्षम हो जाते हैं कि दूसरे मानसिक गतिविधि और मन की कार्यप्रणाली के बारे में कैसा महसूस कर सकते हैं और जागरूक हो सकते हैं।

**Unit :- 2.5 Late childhood (7 to 14 years) :-** ऐतिहासिक रूप से, मध्य बचपन को मानव विकास में एक महत्वपूर्ण चरण नहीं माना गया है। सिगमंड फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत ने जीवन की इस अवधि को विलंबित अवस्था का नाम दिया, एक ऐसा समय जब यौन और आक्रामक आग्रहों को दबा दिया जाता है। फ्रायड ने सुझाव दिया कि इस अवधि के दौरान व्यक्तित्व विकास में कोई महत्वपूर्ण योगदान नहीं दिया गया। हालांकि, हाल के सिद्धांतकारों ने संज्ञानात्मक

कौशल, व्यक्तित्व, प्रेरणा और अंतर-व्यक्तिगत संबंधों के विकास के लिए मध्य बचपन के महत्व को फिर से स्वीकार किया है। मध्य बचपन के दौरान बच्चे अपने समाज के मूल्यों को सीखते हैं। मध्य बचपन के प्राथमिक विकास कार्य को एकीकरण कहा जा सकता है, व्यक्ति के भीतर और सामाजिक के भीतर व्यक्ति के विकास के संदर्भ में हों। शायद मध्य बचपन की छवि को एक विलंबता चरण के रूप में समर्थन करते हुए, मध्य बचपन के दौरान शारीरिक विकास प्रारंभिक बचपन या किशोरावस्था की तुलना में कम नाटकीय है। यौवन की शुरुआत तक विकास धीमा और स्थिर होता है, जब व्यक्ति बहुत तेज गति से विकसित होने लगते हैं। जिस उम्र में लोग यौवन में प्रवेश करते हैं, वह अलग-अलग होता है, लेकिन एक धर्मनिरपेक्ष प्रवृत्ति का प्रमाण है – जिस उम्र में यौवन की उम्र कम होती जा रही है। कुछ व्यक्तियों में, यौवन आठ या नौ साल की उम्र में शुरू हो सकता है।

शारीरिक विकास की तरह, मध्य बचपन का संज्ञानात्मक विकास धीमा और स्थिर होता है। इस चरण में बच्चे बचपन में प्राप्त कौशल पर निर्माण कर रहे हैं और अपने संज्ञानात्मक विकास के अगले चरण की तैयारी कर रहे हैं। बच्चों का तर्क बहुत ही नियम आधारित होता है। बच्चे वर्गीकरण और परिकल्पना बनाने जैसे कौशल सीख रहे हैं। जबकि वे कुछ साल पहले की तुलना में अब संज्ञानात्मक रूप से अधिक परिपक्व हैं। इस चरण में बच्चों को अभी भी ठोस, व्यावहारिक सीखने की गतिविधियों की आवश्यकता होती है। मध्य बचपन एक ऐसा समय होता है जब बच्चे सीखने और काम करने के लिए उत्साह प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि उपलब्धि एक प्रेरक कारक बन सकती है जो बच्चे योग्यता और आत्म-सम्मान के निर्माण की दिशा में काम करते हैं।

मध्य बचपन भी एक ऐसा समय होता है जब बच्चे पारस्परिक और सामाजिक संबंधों में क्षमता विकसित करते हैं। बच्चों में पीयर ओरिएंटेशन बढ़ रहा है। फिर भी वे अपने परिवार से बहुत प्रभावित हैं। सहकर्मी और पारिवारिक संबंधों के माध्यम से सीखे गए सामाजिक कौशल, और बच्चों की सार्थक पारस्परिक एक्जिज्युनिकेशन में भाग लेने की बढ़ती क्षमता, किशोरावस्था की चुनौतियों के लिए एक आवश्यक आधार प्रदान करती है। इस उम्र में सबसे अच्छे दोस्त महत्वपूर्ण हैं, और इन रिश्तों में प्राप्त कौशल स्वस्थ वयस्क संबंधों के लिए इमारत की कमी को दूर कर सकते हैं।

किशोरावस्था (11–20 वर्ष): इस अवधि को यौवन द्वारा चिह्नित किया जाता है जो तेजी से शारीरिक और हार्मोनल परिवर्तनों की शुरुआत, अमूर्त सोच के उद्भव, यौन परिपक्वता का संकेत देता है। अजनबी सहकर्मी संबंध, स्वयं की भावना और माता-पिता के नियंत्रण से स्वायत्तता। इस अवधि के दौरान वृद्धि का एक उल्लेखनीय त्वरण होता है जिसे किशोरावस्था में वृद्धि के रूप में जाना जाता है। किशोरावस्था में उछाल एक निरंतर घटना है और सभी बच्चों में होता है, हालांकि यह एक बच्चे से दूसरे बच्चे में तीव्रता और अवधि में भिन्न होता है। लड़कों में यह होता है, औसत उम्र में लड़कियों में उछाल की तुलना में लगभग दो साल पहले होता है। प्राथमिक और माध्यमिक यौन विशेषताओं में अंतर किशोरावस्था की अवधि को चिह्नित करता है। प्रजनन अंगों में, शरीर के आकार और आकार में, मांसपेशियों, वसा और हड्डी के सापेक्ष अनुपात में और विभिन्न प्रकार के शारीरिक कार्यों में परिवर्तन होते हैं।

**शारीरिक विकास (Physical Development) :-** कामुकता और पहचान निर्माण किशोरावस्था की अवधि की दो प्रमुख चुनौतियाँ हैं। इस अवधि के दौरान सबसे तेज शारीरिक विकास होता है। विकास दर, यौन विशेषताओं और भार में परिवर्तन होते हैं। किशोर लड़के और लड़कियाँ अपनी ऊँचाई, वजन, ताकत और हड्डियों, मांसपेशियों आदि के विकास में विकसित होते हैं। लड़कियों के लिए यौवन और यौन परिपक्वता किशोर अवधि की शुरुआत का प्रतीक है। विकास में तेजी और माध्यमिक यौन विशेषताओं का विकास किशोरावस्था की शुरुआत का संकेत देता है। मासिक धर्म लड़कियों के लिए यौवन का पहला संकेत है जबकि कुछ मूँछों का दिखना लड़कों के लिए यौवन का संकेत है। 'यौन परिपक्वता की अनुमानित आयु लड़कों के लिए 12.5 वर्ष और लड़कियों के लिए 10.5 वर्ष है। यौवन हार्मोनल प्रणाली में परिवर्तन के जवाब में शुरू होता है। पुरुषों में टेस्टोस्टेरोन और महिलाओं में एस्ट्रोजन जैसे सेक्स हार्मोन सेक्स ग्रंथियों से स्रावित होते हैं। सेक्स हार्मोन का स्राव यौवन के विकास में मदद करता है और भावनाओं से भी जुड़ा होता है। इस अवधि के दौरान लड़कों में आक्रामकता जैसी भावना पाई जाती है और लड़कियों में अवसाद चिह्नित होता है। वे उनकी मूर्तियों की नकल करने की कोशिश करते हैं। लड़कियाँ अपने आकार के बारे में जागरूक होती हैं।

**मनोसामाजिक विकास (Psychosocial Development) :-** इस अवधि के दौरान किशोरों में शारीरिक परिवर्तन कई तरह के मनोवैज्ञानिक परिवर्तन लाते हैं। किशोर नवप्रवर्तक बनते हैं और विभिन्न कौशलों को बड़ी रुचि के साथ सीखने में रुचि लेते हैं। उन्हें लगता है कि उन्हें कोई नहीं समझता है, और वे अक्सर खुद को "सुपरमैन" मानते हैं। उनकी विशिष्टता की भावना वास्तविकता की दुनिया से दूर उनके चारों ओर व्यक्तिगत कथा के रूप में व्यक्त की जाती है। वे तर्कशील होते हैं और उनमें खोजने की प्रवृत्ति होती है प्राधिकरण के आंकड़ों के साथ गलती। वे आदर्श और वास्तविक के बीच अंतर करने में सक्षम नहीं हैं। किशोर बहुत आत्म-जागरूक होते हैं और इसे इमेजरी ऑडियंस की अवधारणा में व्यक्त किया जाता है। ये काल्पनिक दर्शक आलोचना करते हैं। एक किशोर को प्रोत्साहित और प्रेरित करते हैं। वे वही करना चाहते हैं जो उनके दोस्त कर रहे हैं। किशोर साथियों के दबाव में शराब और ड्रग्स का दुरुपयोग करते हैं। विकासात्मक मनोवैज्ञानिकों ने देखा कि किशोरावस्था जोखिम, उथल-पुथल, अनिश्चितता और संघर्ष की अवधि के रूप में है।

**संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development) :-** किशोरावस्था के दौरान न केवल शरीर की संरचना में परिवर्तन होते हैं बल्कि वे छोटे बच्चों से अलग सोचते हैं। जीन पियाजे ने कहा कि किशोर संज्ञानात्मक विकास के उच्चतम स्तर में प्रवेश करते हैं, अर्थात् संज्ञानात्मक विकास के औपचारिक संचालन चरण। इस अवधि के दौरान किशोरों के विचार ठोस वस्तुओं से अमूर्त घटनाओं में बदल जाते हैं। वे लचीले ढंग से दुनिया के बारे में पर्याप्त सोच सकते हैं। वे अंतःक्रिया के माध्यम से अंतराल जमा करते हैं और सीखी गई अवधारणाओं को नए कार्यों में लागू करते हैं। किशोर अपने तर्क कौशल का विकास करते हैं और काल्पनिक निगमनात्मक तर्क में संलग्न होते हैं। जैसे-जैसे किशोर अपनी तार्किक सोच विकसित करते हैं, वे आक्रामक और तर्कशील होते जा रहे हैं। बच्चे सर्वांगसमता और द्रव्यमान जैसी अमूर्त अवधारणाओं को समझने में सक्षम हो जाते हैं और वे सैद्धांतिक अवधारणाओं के संदर्भ में सोचते हैं। वे अपने बारे में दूसरों की राय के बारे में जागरूक हैं और आध्यात्मिकता, परंपराओं और विश्वासों के बारे में जानने के लिए काफी उत्सुक हैं। इस प्रकार, किशोरावस्था के दौरान लोग एक अमूर्त स्तर पर समस्याओं से निपटते हैं, परिकल्पना बनाते हैं और उस प्रस्ताव से तर्क करते हैं जो तथ्य के विपरीत है।

### **Unit :- 3 Psychology and Learning (मनोविज्ञान और सीखना)**

#### **Unit :- 3.1 Educational Psychology; relevance and scope for educators (शैक्षणिक मनोविज्ञानय शिक्षकों के लिए प्रासंगिकता और गुंजाइश) :-**

**शैक्षिक मनोविज्ञान (Educational psychology) :-** मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें इस बात का अध्ययन किया जाता है कि मानव शैक्षिक वातावरण में सीखता कैसे है तथा शैक्षणिक क्रियाकलाप अधिक प्रभावी कैसे बनाये जा सकते हैं। 'शिक्षा मनोविज्ञान' दो शब्दों के योग से बना है - 'शिक्षा' और 'मनोविज्ञान'। अतः इसका शाब्दिक अर्थ है - शिक्षा संबंधी मनोविज्ञान। दूसरे शब्दों में, यह मनोविज्ञान का व्यावहारिक रूप है और शिक्षा की प्रक्रिया में मानव व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। मानव व्यवहार को बनाने की दृष्टि से जब व्यवहार का अध्ययन किया जाता है तो अध्ययन की इस शाखा को शिक्षा मनोविज्ञान के नाम से संबोधित किया जाता है। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षणिक स्थितियों में मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। दूसरे शब्दों में शैक्षिक समस्याओं का वैज्ञानिक व संगठन से समाधान करने के लिए मनोविज्ञान के आधारभूत सिद्धांतों का उपयोग करना ही शिक्षा मनोविज्ञान की विषय वस्तु है। शिक्षा के सभी पहलुओं जैसे शिक्षा के उद्देश्यों, शिक्षण विधि, पाठ्यक्रम, मूल्यांकन, अनुशासन आदि को मनोविज्ञान ने प्रभावित किया है। बिना मनोविज्ञान की सहायता के शिक्षा प्रक्रिया सुचारु रूप से नहीं चल सकती। शिक्षा मनोविज्ञान से तात्पर्य शिक्षण एवं सीखने की प्रक्रिया को सुधारने के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रयोग करने से है। शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है।

इस प्रकार शिक्षा मनोविज्ञान में व्यक्ति के व्यवहार, मानसिक प्रक्रियाओं एवं अनुभवों का अध्ययन शैक्षिक परिस्थितियों में किया जाता है। शिक्षा मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसका ध्येय शिक्षण की प्रभावशाली तकनीकों

को विकसित करना तथा अधिगमकर्ता की योग्यताओं एवं अभिरूचियों का आंकलन करना है। यह व्यवहारिक मनोविज्ञान की शाखा है जो शिक्षण एवं सीखने की प्रक्रिया को सुधारने में प्रयासरत है।

**स्कनर के अनुसार :** शिक्षा मनोविज्ञान, शैक्षणिक परिस्थितियों में मानवीय व्यवहार का अध्ययन करता है। शिक्षा मनोविज्ञान अपना अर्थ शिक्षा से, जो सामाजिक प्रक्रिया है और मनोविज्ञान से, जो व्यवहार संबंधी विज्ञान है, ग्रहण करता है।

**क्रो एवं क्रो के अनुसार :** शिक्षा मनोविज्ञान, व्यक्ति के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक सीखने सम्बन्धी अनुभवों का वर्णन तथा व्याख्या करता है।

**जेम्स ड्रेवर के अनुसार :** शिक्षा मनोविज्ञान व्यावहारिक मनोविज्ञान की वह शाखा है जो शिक्षा में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों तथा खोजों के प्रयोग के साथ ही शिक्षा की समस्याओं के मनोवैज्ञानिक अध्ययन से सम्बंधित है।

**ऐलिस क्रो के अनुसार :** शैक्षिक मनोविज्ञान मानव प्रतिक्रियाओं के शिक्षण और सीखने को प्रभावित वैज्ञानिक दृष्टि से व्युत्पन्न सिद्धांतों के अनुप्रयोग का प्रतिनिधित्व करता है।

भारत में शिक्षा का अर्थ ज्ञान से लगाया जाता है। **गाँधी जी के अनुसार शिक्षा का तात्पर्य** व्यक्ति के शरीर, मन और आत्मा के समुचित विकास से है।

**शिक्षा मनोविज्ञान के अर्थ का विश्लेषण करने के लिए स्कनर ने अधोलिखित तथ्यों की ओर संकेत किया है:-**

1. शिक्षा मनोविज्ञान का केन्द्र, मानव व्यवहार है।
2. शिक्षा मनोविज्ञान खोज और निरीक्षण से प्राप्त किए गए तथ्यों का संग्रह है।
3. शिक्षा मनोविज्ञान में संग्रहीत ज्ञान को सिद्धांतों का रूप प्रदान किया जा सकता है।
4. शिक्षा मनोविज्ञान ने शिक्षा की समस्याओं का समाधान करने के लिए अपनी स्वयं की पद्धतियों का प्रतिपादन किया है।
5. शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धांत और पद्धतियाँ शैक्षिक सिद्धांतों और प्रयोगों को आधार प्रदान करते हैं।

शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र के बारे में स्कनर ने लिखा है कि शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में वह सभी ज्ञान तथा प्रविधियाँ से सम्बंधित है जो सीखने की प्रक्रिया को अच्छी प्रकार से समझाने तथा अधिक निपुणता से निर्धारित करने से सम्बंधित हैं। आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञानिकों के अनुसार शिक्षा मनोविज्ञान के प्रमुख क्षेत्र निम्न प्रकार है-

1. वंशानुक्रम (Heredity)
2. विकास (Development)
3. व्यक्तिगत भिन्नता (Individual Differences)
4. व्यक्तित्व (Personality)
5. विशिष्ट बालक (Exceptional Child)
6. अधिगम प्रक्रिया (Learning Process)
7. पाठ्यक्रम निर्माण (Curriculum Development)
8. मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health)

9. शिक्षण विधियाँ (Teaching Methods)
10. निर्देशन एवं परामर्श (Guidance and Counseling)
11. मापन एवं मूल्यांकन (Measurement and Evaluation)
12. समूह गतिशीलता (Group Dynamics)
13. अनुसन्धान (Research)
14. किशोरावस्था (Adolescence)

शिक्षा की महत्वपूर्ण समस्याओं के समाधान में मनोविज्ञान सहायक होता है और यही सब समस्याएं व उनका समाधान शिक्षा मनोविज्ञान का कार्यक्षेत्र बनते हैं –

(9) शिक्षा कौन दे, अर्थात् शिक्षक कैसा हो? मनोविज्ञान शिक्षक को अपने छात्रों को समझने में सहायता प्रदान करता है साथ ही यह भी बताता है कि शिक्षक को छात्रों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। शिक्षक का व्यवहार पक्षपात रहित हो। उसमें सहनशीलता, धैर्य व अर्जनात्मक शक्ति होनी चाहिए।

(2) विकास की विशेषताएं समझने में सहायता देता है। प्रत्येक छात्र विकास की कुछ निश्चित अवस्थाओं से गुजरता है जैसे शैशवावस्था (0–2 वर्ष) बाल्यावस्था (3–12 वर्ष) किशोरावस्था (13–18 वर्ष) प्रौढ़ावस्था (18–21 वर्ष)। विकास की दृष्टि से इन अवस्थाओं की विशिष्ट विशेषताएं होती हैं। यदि शिक्षक इन विभिन्न अवस्थाओं की विशेषताओं से परिचित होता है वह अपने छात्रों को भली प्रकार समझ सकता है और छात्रों को उसी प्रकार निर्देशन देकर उनको लक्ष्य प्राप्ति में सहायता कर सकता है।

(3) शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान शिक्षक को सीखने की प्रक्रिया से परिचित कराता है। ऐसा देखा जाता है कि कुछ शिक्षक कक्षा में पढ़ाते समय अधिक सफल साबित होते हैं तथा कुछ अपने विषय पर अच्छा ज्ञान होने पर भी कक्षा शिक्षण में असफल होते हैं। प्रभावपूर्ण ढंग से शिक्षण करने के लिए शिक्षक को सीखने के विभिन्न सिद्धान्तों का ज्ञान, सीखने की समस्याओं एवं सीखने को प्रभावित करने वाले कारणों और उनको दूर करने के उपायों की जानकारी होनी चाहिए। तभी वह छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित कर सकता है।

(4) शिक्षा मनोविज्ञान, व्यक्तिगत भिन्नता का ज्ञान कराता है। संसार के कोई भी दो व्यक्ति बिल्कुल एक से नहीं होते। प्रत्येक व्यक्ति अपने में विशिष्ट व्यक्ति है। एक कक्षा में शिक्षक को 30 से लेकर 50 छात्रों को पढ़ाना होता है जिनमें अत्यधिक व्यक्तिगत भिन्नता होती है। यदि शिक्षक को इस बात का ज्ञान हो जाए तो वह अपना शिक्षण सम्पूर्ण छात्रों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाला बना सकता है।

(5) व्यक्ति के विकास पर वंशानुक्रम एवं वातावरण का क्या प्रभाव पड़ता है, यह मनोविज्ञान बताता है। वंशानुक्रम किसी भी गुण की सीमा निर्धारित करता है और वातावरण उस गुण का विकास उसी सीमा तक करता है। अच्छा वातावरण भी गुण को उस सीमा के आगे विकसित नहीं कर सकता।

(6) पाठ्यक्रम निर्माण में सहायता – विभिन्न स्तरों के छात्रों के लिए पाठ्यक्रम बनाते समय मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त सहायता पहुंचाते हैं। छात्रों की आवश्यकताओं, उनके विकास की विशेषताओं, सीखने के तरीके व समाज की आवश्यकताएं – यह सब पाठ्यक्रम में परिलक्षित होनी चाहिए। पाठ्यक्रम में व्यक्ति व समाज दोनों की आवश्यकताओं को सम्मिश्रित रूप में रखना चाहिए।

(७) मनोविज्ञान विशिष्ट बालकों की समस्याओं एवं आवश्यकताओं का ज्ञान शिक्षक को देता है जिससे शिक्षक इन बच्चों को अपनी कक्षा में पहचान सकें। उनको आवश्यकतानुसार मदद कर सकें। उनके लिए विशेष कक्षाओं का आयोजन कर सकें व परामर्श दे सकें।

(८) मानसिक स्वास्थ्य का ज्ञान भी शिक्षक के लिए लाभकारी होता है। मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति के लक्षणों को पहचानना तथा ऐसा प्रयास करना कि उनकी इस स्वस्थता को बनाए रखा जा सके।

(९) मापन व मूल्यांकन के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का ज्ञान भी मनोविज्ञान से मिलता है। वर्तमान परीक्षा प्रणाली से उत्पन्न छात्रों में डर, चिन्ता, नकारात्मक प्रवृत्ति जैसे आत्महत्या करने से छात्रों के व्यक्तित्व का विघटन साथ ही समाज का भी विघटन होता है। अतः सीखने के परिणामों का उचित मूल्यांकन करना तथा उपचारात्मक शिक्षण देना शिक्षक का ध्येय होना चाहिए।

(१०) शिक्षा मनोविज्ञान समूह गतिकी (ग्रुप डायनेमिक्स) का ज्ञान कराता है। वास्तव में शिक्षक एक अच्छा पथ-प्रदर्शक, निर्देशक व कुशल नेता होता है। समूह गतिकी के ज्ञान से वह कक्षा रूपी समूह को भली प्रकार संचालित कर सकता है और छात्रों के सर्वांगीण विकास में अपना बहुमूल्य योगदान दे सकता है।

(११) शिक्षा मनोविज्ञान बच्चों को शिक्षित करने सम्बन्धी विभिन्न विधियों के बारे में अध्ययन करता है और खोज करता है कि विभिन्न विषयों जैसे गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, भाषा, साहित्य को सीखने से सम्बन्धित सामान्य सिद्धान्त क्या हैं।

(१२) शिक्षा मनोविज्ञान विभिन्न प्रकार के रुचिकर प्रश्नों – जैसे, बच्चे भाषा का प्रयोग करना कैसे सीखते हैं या बच्चों द्वारा बनायी गयी ड्राइंग का शैक्षिक महत्व क्या होता है— पर भी विचार करता है।

### **Unit :-3.2 Basic principles of learning given by Thorndike, Pavlov, Skinner, Bandura, Piaget and Vygotsky**

थार्नडाइक का सीखने का सिद्धान्त (प्रयत्न या भूल) – इस 'प्रयास व त्रुटि' का सिद्धान्त भी कहते हैं। ई०एल० थार्नडाइक (E-L-Thorndike) ने प्रयत्न व भूल के इस सिद्धान्त के बारे में बताते हुए कहा, कि जब व्यक्ति कोई कार्य सीखता है, तब उसके सामने एक विशेष स्थिति या उद्दीपक (Stimulus) होता है, जो उसे विशेष प्रकार की प्रतिक्रिया करने के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार एक विशिष्ट उद्दीपक का एक विशिष्ट अनुक्रिया (response) से सम्बन्ध स्थापित हो जाता है, तो उसे उद्दीपक अनुक्रिया सम्बन्ध कहते हैं।

थार्नडाइक का प्रयोग—थार्नडाइक एक पशु मनोवैज्ञानिक थे, इन्होंने बिल्ली, चूहे, 1 आदि पर प्रयोग करके यह निष्कर्ष निकाला कि पशु-पक्षी व बच्चे प्रयत्न व भूल द्वारा सीखते हैं। अपने एक प्रयोग में इन्होंने एक भूखी बिल्ली को पिंजड़े में बन्द कर दिया और पिंजड़े के बाहर भोज्य सामग्री रख दी गई। बिल्ली के लिए भोजन उद्दीपक था। उद्दीपक के कारण उनमें प्रतिक्रिया आरम्भ हुई। बिल्ली ने बाहर निकलकर भोजन प्राप्त करने के लिए कई प्रयत्न किये और पिंजड़े के चारों ओर घूमकर कई पंजे मारे और प्रयत्न करते-करते अचानक उस तार को खींच लिया। जिससे पिंजड़े का दरवाजा खुलता था। दोबारा फिर बन्द करने पर बाहर उसे आने के लिए पहले से कम समय में सफलता मिल गई। तीसरे और चौथे प्रयास में और भी कम प्रयत्नों में सफलता मिल गई और एक परिस्थिति आई, जब एक बार में ही वो दरवाजा खोलकर बाहर आने लगी।

#### **प्रयास व त्रुटि का शिक्षा में महत्व –**

- इस विधि से सीखने से सीखने की क्रिया सरल हो जाती है।
- यह सिद्धान्त करके सीखने पर बल देता है, जो कि आधुनिक समय में बहुत उपयोगी है।
- यह सिद्धान्त बड़े तथा मन्द बुद्धि बालकों के लिए बहुत उपयोगी हैं।

- भाषा में शुद्ध उच्चारण वह इसी विधि से सीखता है।
- इस विधि से अनुभव से लाभ उठाने की क्षमता का विकास करता है।
- इस सिद्धान्त से धैर्य व परिश्रम के गुणों का विकास होता है।
- चलना, साइकिल चलाना, गणित के प्रश्न हल करना, कलाकृतियां बनाना आदि सभी में इस सिद्धान्त का विशेष महत्व है।
- हम अपने दैनिक जीवन के कार्यों में इस सिद्धान्त का बहुत अधिक प्रयोग करते हैं।

थार्नडाइक के अधिगम के सिद्धांत के अंतर्गत सीखने के प्रमुख 2 नियमों का उल्लेख किया जो कि इस प्रकार हैं—

- सीखने का मुख्य नियम
- सीखने का गौण नियम

**1. सीखने का मुख्य नियम** – सीखने का मुख्य सिद्धांत के अंतर्गत थार्नडाइक ने अपने अधिगम सिद्धांत में तीन नियमों के का उल्लेख किया—

- तत्परता का नियम
- अभ्यास का नियम
- प्रभाव का नियम

**1. तत्परता का नियम** – सीखने के मुख्य नियम समय से यह पहला नियम यह प्रदर्शित करता है कि बालक तब तक नहीं सीख सकता जब तक वह तत्पर ना अर्थात बालक को अधिगम के दृष्टिकोण से कुछ तभी अधिगम कराया जा सकता है जब वह आंतरिक रूप से कुछ सीखने में रुचि रखता हो। और अधिगम विषयवस्तु बालक के स्तर के अनुरूप हो।

**2. अभ्यास का नियम** – सिद्धांत के अनुसार बालक के अधिगम के अंतर्गत सिखाए गए किसी भी चीज का बार-बार दोहराना अनिवार्य है इस क्रिया के माध्यम से बालक के अंदर उद्दीपन अनुक्रिया बंधन शक्तिशाली होते जाता है जिससे बालक को सिखाया गया कार्य अधिगम स्थाई हो पाता है।

**3. प्रभाव का नियम** – अधिगम क्रिया के दौरान बालक को सरल सहज व प्रभावी माध्यम से अधिगम विषय वस्तु को प्रस्तुत करना चाहिए जिससे बालक के अंदर संतोष की भावना जागृत हो और सकारात्मक व्यवहार के अंतर्गत बालक उस चीज को सीख पाए। अधिगम के दौरान बालक यदि सुखद अनुभव करता है, तो अधिगम अधिक सफल होगा।

**2. सीखने का गौण नियम** – थार्नडाइक के द्वारा प्रतिपादित प्रथमा भूल का सिद्धांत सीखने के नियम के अंतर्गत आधारित है, इस नियम के अंतर्गत अभ्यास दोहराना, पुनरावलोकन आदि को अधिगम के अंतर्गत महत्व दिया गया है।

इस नियम के अंतर्गत कुछ नियम इस प्रकार हैं—

- बहु अनुक्रिया का नियम
- आंशिक क्रिया का नियम
- समानता का नियम
- सहस्र परिवर्तन का नियम
- मानसिक स्थिति का नियम

**बहु अनुक्रिया का नियम** – इस नियम के अनुसार व्यक्ति अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए विभिन्न प्रकार के तरीकों का प्रयोग करता है बहुत सारे ऐसे प्रतिक्रियाएं करता है जब तक उस समस्या का हल मिल ना जाए जब समस्या हल होने

के बाद व्यक्ति के अंतर्गत संतोष मिलता है तभी समस्या का समाधान माना जाता है। इस अनुक्रिया के माध्यम से भी उसके अंतर्गत अधिगम प्रक्रिया होती है।

**आंशिक क्रिया का नियम** – इस नियम के अनुसार किसी भी समस्या के हल के लिए अंतर्दृष्टि सिद्धांत का प्रयोग किया जाता है और आर्थिक क्रिया के माध्यम से समस्या का हल ढूंढा जाता है।

**समानता का नियम** – इस नियम के अनुसार किसी समस्या के प्रस्तुत होने पर पूर्व अधिगम में प्राप्त अनुभव व परिस्थितियों में समानता होने पर नए अधिगम में सहायता प्राप्त होती है जिसके वजह से अधिगम स्थानांतरण होने में मदद मिलती है।

**साहचर्य परिवर्तन का नियम** – इस नियम के अनुसार अधिगम के दौरान साहचर्य वातावरण का प्रभाव पड़ता है, थार्नडाइक अधिगम नियम के अनुसार— जैसे कुत्ते के मुंह से भोजन को देखकर लार टपकना स्वाभाविक क्रिया है परंतु कुछ समय बाद भोजन भोजन के बर्तन को ही देखकर लार टपकने लगती है। इसे ही साहचर्य परिवर्तन का नियम कहा गया है।

**मानसिक स्थिति का नियम** – जब बालक किसी भी कार्य को सीखने के लिए मानसिक रूप से तैयार होता है तो वह उस कार्य को आज जल्दी सीख लेता है और अधिगम प्रक्रिया बहुत अधिक प्रभावी होती है लेकिन बालक मानसिक रूप से तैयार नहीं होता जब तो बालक को अधिगम नहीं कराया जा सकता।

**पावलव का सिद्धांत** :- इवान पत्रोविच पावलव ( 26 सितंबर 1849 – 27 फरवरी 1936) एक रूसी फिजियोलॉजिस्ट थे। पावलव ने 1904 में फिजियोलॉजी या मेडिसिन के लिए नोबेल पुरस्कार जीता था, यह पहला रूसी नोबेल पुरस्कार विजेता था। 2002 में प्रकाशित सामान्य मनोविज्ञान की समीक्षा में एक सर्वेक्षण, 20 वीं शताब्दी के 24 वें सबसे उद्धृत मनोचिकित्सक के रूप में पावलव को स्थान दिया था। शास्त्रीय कंडीशनिंग अथवा चिर प्रतिष्ठित प्रानुकूलनपावलव के सिद्धांत विभिन्न शैक्षणिक कक्षाओं सहित प्रयोगात्मक और नैदानिक सेटिंग्स में संचालित करने के लिए पाए गए हैं।

पावलव ने इस सिद्धांत की पुष्टि के लिए अपने पालतू कुत्ते पर एक प्रयोग के द्वारा समझाया। उन्होंने ध्वनि रहित कक्ष तैयार कराया तथा कुत्ते पर प्रयोग आरंभ किये। इस प्रयोग का लक्ष्य था पाचन की क्रिया का अध्ययन करना परंतु कभी-कभी अनेक उपलब्धियां अचानक ही प्राप्त हो जाती हैं। ऐसा ही पावलव के साथ हुआ पाचन क्रिया का अध्ययन करते करते अधिगम के सिद्धांत का निरूपण हो गया। इसके परिणाम से अनु प्रेरित होकर पावलव ने जीवन पर्यंत मस्तिष्क एवं अधिगम के सिद्धांत प्रभाव का अध्ययन किया।

### पावलव का प्रयोग

पावलव ने अपना प्रयोग अपने पालतू कुत्ते पर किया। उसने इसके लिए एक ध्वनि रहित कक्ष तैयार कराया तथा अपने कुत्ते को भूखा रखकर उसने प्रयोग करने वाली मेंस के साथ बांध दिया। कक्ष में एक खिड़की भी बनाई गई थी जिसमें से कुत्ते को सब कुछ दिखाई देता था। पावलव (द्वंसवअ) ने कुत्ते की लार नली को काटकर इस प्रकार नियोजित किया था कि कुत्ते के मुंह से निकालने वाली लार कांच की ट्यूब में एकत्रित हो जाएं। सबसे पहले पावलव ने कुत्ते के सामने केवल एक गोश्त का टुकड़ा रखा। कुत्ते को गोश्त पसंद होता है इसलिए यह कुत्ते के साथ स्वाभाविक है कि गोश्त के गन्ध और स्वाद के कारण उस को देखकर कुत्ते के मुंह से लार टपकना शुरू हो गया और वह कांच की ट्यूब में एकत्रित या जमा हो गया। जो भी लार उस ट्यूब में एकत्रित हुई उसे माप लिया गया। दूसरी बार जब कुत्ते के सामने गोश्त रखा गया तो साथ साथ घंटी भी बजाई गई और कुत्ते के व्यवहार का निरीक्षण करने पर पाया कि इस बार कुत्ते के मुंह से बराबर लार टपकने शुरू हो गई। पावलव ने इस प्रयोग को कई बार दोहराए और जब जब कुत्ते को गोश्त दिया गया तब तक घंटी भी बजाई गई। एक बार ऐसा हुआ कि कुत्ते के सामने गोश्त न रखकर केवल घंटी बजाई गई और उसके प्रतिक्रिया का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण करने पर पता चला कि कुत्ता अब भी पहले की तरह लार टपका रहा है। इस प्रयोग से पावलव ने यह निष्कर्ष निकाला कि कुत्ता घंटी की आवाज से प्रतिबंध हो गया है। इस प्रयोग में गोश्त स्वाभाविक प्रतिक्रिया है तथा घंटी और स्वाभाविक प्रतिक्रिया है तथा लार का टपकना अनुक्रिया है। इस प्रयोग से हमारे

सामने और एक घटना सामने आती है कि कुत्ता साथ सामने दो प्रकार की उत्तेजना उत्पन्न होती हैं। ये हैं घंटी का बचना और भोजन का दिया जाना। अंत में कुत्ते के साथ केवल घंटी ही बजाई गई और भोजन नहीं दी गई तो भी पाया गया कि कुत्ते के साथ वही अनुक्रिया हुई जो भोजन के साथ हुई थी।

### अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत का शैक्षिक महत्व (educational implications of pavlov's classical conditioning theory of learning in hindi)

अनुकूलित अनुक्रिया यह सिद्धांत व्यवहार पर आधारित है। इस आधार पर वाटसन महोदय ने कहा था कि मुझे कोई भी एक बच्चा दे दो। मैं उसे जैसा चाहूँ वैसा बना सकता हूँ। शिक्षा के क्षेत्र में पावलव महोदय के सिद्धांत का शैक्षिक महत्व निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर समझा जा सकता है—

1. इस सिद्धांत के अनुसार कोई प्राणी तब ही सिखता है जब वह क्रियाशील होता है।
2. यह सिद्धांत अच्छी आदतों के निर्माण में बुरी आदतों आचरण तथा व्यवहार को बदलने में सहायक होती है।
3. मानसिक रूप से अस्वस्थ बालकों असंवेगात्मक रूप से अस्थिर बालकों का इलाज इस अनुबंधन प्रक्रिया से आसानी से किया जा सकता है।
4. विशेषकर भय संबंधी मानसिक रोगियों का उपचार अधिक सफलता पूर्वक किया जा सकता है।
5. यह सिद्धांत संबंध के सिद्धांत पर बल देता है। जिसका लक्ष्य बालकों को शिक्षा देते समय उठाया जा सकता है।
6. यह सिद्धांत क्रिया की पुनरावृत्ति पर बल देता है तथा एक शिक्षक को पढ़ाते समय पुनरावृत्ति पर ध्यान देना चाहिए।
7. सिद्धांत के अनुसार बच्चों में अक्षर विन्यास एवं गुण शिक्षण का विकास किया जा सकता है। इस सिद्धांत के अनुसार अभ्यास पर अधिक बल दिया जाना आवश्यक है।
8. अनुकूलित अनुक्रिया में अध्यापक का योग वातावरण का निर्माण करने में अधिक रहता है। अध्यापक को चाहिए कि वह बालकों के लिए दंड तथा पुरस्कार को निर्धारण कर कार्यान्वयन तुरंत करें। इससे अनुकूलित अनुक्रिया का संपादन शीघ्र होगा।

**स्किनर का क्रियाप्रसूत अनुकूलन का सिद्धांत :-** बी एफ स्किनर (1904-1990) को प्रायः कंडीशनिंग के जनक के रूप में जाना जाता है उसने अधिगम (learning) के क्षेत्र में अनेक प्रयोग करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि अभिप्रेरण (motivation) से उत्पन्न क्रियाशीलता ही सीखने के लिए उत्तरदायी है।

**स्किनर के क्रियाप्रसूत अनुकूलन (operant conditioning) या नैमित्तिक अनुकूलन (instrumental learning) सिद्धान्त के अनुसार,** व्यवहारके परिणाम, क्रिया के होने की संभावना को प्रभावित करते हैं। एक व्यवहार जिसके पश्चात् एक सुखदायक उद्दीपक जुड़ा हुआ हो, उसके बार-बार होने की संभावना अधिक होती है, लेकिन यदि दूसरा व्यवहार किसी दंडात्मक उद्दीपक से जुड़ा हो तो उसके होने की संभावना कम हो जाती है। उदाहरण के लिए, एक बालक के किसी व्यवहार को अगर एक मुस्कराहट द्वारा प्रतिक्रिया दी जाए तो उस बालक द्वारा वह व्यवहार पुनः करने की संभावना बढ़ जाती है। लेकिन अगर ऐसे व्यवहार के लिए गुस्से की प्रतिक्रिया दी जाए तो उस व्यवहार के दुबारा प्रदर्शित करने की संभावना कम हो जाती है।

उदाहरण के लिए, स्किनर के अनुसार एक बच्चे के अंदर उसके वातावरण में उपस्थित अनुभवों के आधार पर शर्माने का व्यवहार विकसित हो सकता है अगर वातावरण को पुनः स्थापित कर दिया जाए तो बच्चा सामाजिक तौर पर कुशल हो सकता है। स्किनर के अनुसार पुरस्कार और दंड एक व्यक्ति के विकास को स्वरूप प्रदान करते हैं।

उन्होंने 2 प्रकार की क्रियाओं पर प्रकाश डाला— क्रिया प्रसूत व उद्दीपन प्रसूत। जो क्रियाएं उद्दीपन के द्वारा होती हैं वे उद्दीपन आधारित होती हैं। क्रिया प्रसूत का सम्बन्ध किसी ज्ञात उद्दीपन से न होकर उत्तेजना से होता है।

स्किनर ने अपना प्रयोग चूहों पर किया। इसके लिए लीवर वाला वाक्स (स्किनर बाक्स) बनवाया। लीवर पर चूहे का पैर पड़ते ही खट की आवाज होती थी। इस ध्वनि को सुन चूहा आगे बढ़ता और उसे प्याले में भोजन मिलता। यह भोजन चूहे के लिए प्रबलन का कार्य करता। चूहा भूखा होने पर प्रणोदित होता और लीवर को दबाता। इन प्रयोगों में जब प्राणी स्वयं कोई वांछित व्यवहार करता है, तो व्यवहार के परिणाम स्वरूप उसे पुरस्कार प्राप्त होता है। अन्य व्यवहारों के करने पर उसे सफलता प्राप्त नहीं होती। वह पुरस्कृत व्यवहार आसानी से सीख लेता है।

निष्कर्ष यह है, कि यदि क्रिया के बाद कोई बल प्रदान करने वाला उद्दीपन मिलता है, तो उस क्रिया की शक्ति में वृद्धि होती है। स्किनर के मत में प्रत्येक पुनर्बलन अनुक्रिया को करने के लिए प्रेरित करता है।

**शिक्षा में क्रिया प्रसूत अनुबन्धन का महत्व :-**

- इसका प्रयोग बालकों के शब्द भण्डार में वृद्धि के लिए किया जाता है।
- शिक्षक इस सिद्धान्त के द्वारा सीखे जाने व्यवहार को स्वरूप प्रदान करता है, वह उद्दीपन पर नियन्त्रण करके वांछित व्यवहार का सृजन कर सकते हैं।
- इस सिद्धान्त में सीखी जाने वाली क्रिया को छोटे-छोटे पदों में विभाजित किया जाता है। शिक्षा में इस विधि का प्रयोग करके सीखने में गति और सफलता दोनों मिलती है।
- स्किनर का मत है, जब भी कार्य में सफलता मिलती है, तो सन्तोष प्राप्त होता है। यह सन्तोष क्रिया को बल प्रदान करता है।
- इसमें पुनर्बलन (reinforcement) को बल मिलता है। अधिकाधिक अभ्यास द्वारा क्रिया को बल मिलता है।
- यह सिद्धान्त जटिल व्यवहार वाले तथा मानसिक रोगियों को वांछित व्यवहार के सीखने में विशेष रूप से सहायक होता है।

**सामाजिक अधिगम सिद्धान्त (Theory of Social Learning) :-** इस का प्रतिपादन किया था अल्बर्ट बंडूरा (।सइमतज तंदकनत) ने किया था। इसके अनुसार व्यक्ति अवलोकन, नकल और आदर्श व्यवहार के प्रतिमान के माध्यम से एक-दूसरे से सीखते हैं। समाज द्वारा स्वीकार किए जाने वाले व्यवहार को अपनाना तथा वर्जित व्यवहार को नकारना ही सामाजिक अधिगम है। इसलिए अल्बर्ट बंडूरा को प्रथम मानव व्यवहार-संज्ञानवादी कहते हैं।

**बंडूरा का प्रयोग (Experiment of Bandura)**

- बंडूरा ने एक बालक पर बेबीडॉल प्रयोग किया। बंडूरा ने एक बालक को तीन तरह की मूवी दिखाई गई।
- प्रथम मूवी में सामाजिक मूल्य (Social value) आधारित थी। जिसे देख कर बालक बेबी डॉल के साथ सामाजिक व्यवहार (social behavior) दर्शाता है।
- दूसरी मूवी प्रेम पर आधारित थी। जिसे देख कर बालक डॉल से स्नेह करता है, उसे सहलाता है।
- तीसरी मूवी हिंसात्मक (violent) दृश्य-युक्त थी। जिसे देख कर बालक गुड़िया की गर्दन को तोड़ देता है।

**निष्कर्ष (Conclusion) :-** इस प्रयोग के आधार बंडूरा ने यह निष्कर्ष निकला कि छोटे बच्चों को यह नहीं पता होता, कि उनको क्या सीखना चाहिए और क्या नहीं सीखना चाहिए। इसलिए बच्चों के सामने हमेशा आदर्श व्यवहार के प्रतिमान (फमंस डवकमस) को प्रस्तुत करना चाहिए।

**जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त Theory of Cognitive Development :-** जीन पियाजे स्विजरलैंड के एक मनोवैज्ञानिक थे। सर्वप्रथम संज्ञानात्मक पक्ष का क्रमवध वैज्ञानिक अध्ययन स्विजरलैंड के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जीन

पियाजे द्वारा किया गया। संज्ञान – प्राणी का वह व्यापक और स्थाई ज्ञान है जिसे वह वातावरण ?उद्दीपक जगत? वाह जगत के माध्यम से ग्रहण करता है। संज्ञान के अंतर्गत अवधान (ध्यान केंद्रित करना) स्मरण, चिंतन, कल्पना, अधिगम, वर्गीकरण, समस्या समाधान, निरीक्षण संप्रत्ययकरण (विचारों का निर्माण), प्रत्यक्ष करण आदि मानसिक क्रियाएं सम्मिलित होती हैं यह क्रियाएं परस्पर अंतर संबंधित होती है। जीन प्याजे ने संज्ञानात्मक पक्ष पर बल देते हुए संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत का प्रतिपादन किया इसलिए जीन पियाजे को विकासात्मक मनोविज्ञान का जनक माना जाता है।

**विकासात्मक मनोविज्ञान के अंतर्गत शुरु से अंत तक अर्थात गर्भावस्था से वृद्धावस्था तक का अध्ययन किया जाता है।**

विकास का प्रारंभ होता है— गर्भावस्था से।

**संज्ञान विकास** – शैशव अवस्था से प्रारंभ होकर जीवन पर्यंत चलता रहता है। बालक को में बुद्धि का विकास किस प्रकार से होता है यह जानने के लिए उन्होंने अपने स्वयं के बच्चों को अपनी खोज का विषय बनाया प्याजे के इस अध्ययन के परिणाम स्वरूप उन्होंने जिस सिद्धांत का प्रतिपादन किया उसे पिया जी के मानसिक या संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत के नाम से जाना जाता है।

पियाजे के अनुसार “बालक में बुद्धि का विकास उनके जन्म के साथ जुड़ा हुआ है”।

प्रत्येक बालक अपने जन्म के समय कुछ जन्मजात प्रवृत्तियों एवं सहज क्रियाओं को रोकने संबंधी योग्यताओं जैसे— चूसना, देखना, वस्तुओं को पकड़ना, वस्तुओं तक पहुंचना आदि को लेकर पैदा होता है। परंतु जैसे-जैसे बालक बड़ा होता है उसकी बॉडी क्रियाओं का दायरा बढ़ जाता है और वह बुद्धिमान बनता जाता है।

**बालक को में बुद्धि के इस प्रकार की क्रमिक विकास को पियाजे ने 4 अवस्थाओं में विभाजित किया है जो निम्न है –**

- संवेदी गामक अवस्था (Sensori motor stage)
- पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (Pre operational stage)
- मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (Concrete operational stage)
- औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (Formal operational stage)

**1. संवेदी गामक अवस्था –**

- यह जन्म से 2 वर्ष की अवस्था होती है।
- इस अवस्था में बच्चा अपनी ज्ञानेंद्रियों( आंख, नाक, कान) के माध्यम से सीखता है।
- स्कीमा— छोटे-छोटे बच्चों की क्रियाएं मस्तिष्क से जुड़ी रहती हैं स्कीमा कहलाती हैं यह जीन पियाजे ने कहा इसमें बच्चों में वस्तु स्थायित्व (object performance) का गुण आ जाता है।
- भूख लगने की स्थिति को बालक रोककर व्यक्त करता है।
- जिन वस्तुओं को बालक प्रत्यक्ष देखता है उसके लिए उसी का अस्तित्व होता है।

**2. पूर्व संक्रियात्मक अवस्था –**

- यह 2-7 वर्ष की अवस्था होती है।
- इस अवस्था में शिशु दूसरों के संपर्क से, खिलौनों से वाह अनुकरण के माध्यम से सीखता है।
- खिलौनों की आयु इसी अवस्था को कहा जाता है।
- इस अवस्था में बालक वस्तुओं को क्रम से रखना, हल्की भारी का ज्ञान होना, अक्षर लिखना, रंगों को पहचानना माता पिता की आज्ञा मानना मदद करना आदि सीख जाता है।

- वह तर्क वितर्क करने योग्य नहीं होता है इसलिए इसे आतार्किक चिंतन की अवस्था के नाम से भी जाना जाता है।
- इस अवस्था में बालक पड़ोसी बच्चों के साथ खेल खेलता है।
- बालक शब्दों व प्रतीकों का प्रयोग करता है प्रतीकात्मक खेल खेलता है परंतु सही अनुपात का अंतर नहीं करता है।
- इस अवस्था में बालक अपने परिवेश की वस्तुओं को पहचानने एवं उसमें विभेद करने लगता है।
- इस दौरान उसमें भाषा का विकास प्रारंभ हो जाता है।

### 3. मूर्त संक्रियात्मक अवस्था –

- यह 7–11 वर्ष की अवस्था होती है।
- इस अवस्था में बालक में वस्तुओं को पहचानने, उनका विविधीकरण करने तथा वर्गीकरण करने की क्षमता विकसित हो जाती है इसलिए इससे मूर्त चिंतन की अवस्था के नाम से भी जाना जाता है।
- इस अवस्था में बालक सही अनुपात का अंतर, आकार भार, क्रम आदि को समझने लगता है।
- आरोही अवरोही क्रम समझने लगता है।
- इस अवस्था में बालक दिन,, तारी समय, नहीं, महिना आदि बताने योग्य हो जाता है।
- बालक का चिंतन अब अधिक क्रमबद्ध एवं तर्कसंगत होना प्रारंभ हो जाता है।
- भाषा एवं संप्रेषण योग्यता का विकास हो जाता है।

### 4. औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था –

- यह 11 वर्ष से आगे की अवस्था है।
- इस अवस्था में किशोर मूर्ति के साथ-साथ अमूर्त चिंतन करने योग्य भी हो जाता है इसलिए इसे तार्किक चिंतन की अवस्था के नाम से भी जाना जाता है।
- इस अवस्था में मानसिक योग्यताओं का पूर्ण विकास हो जाता है।
- बालक में अच्छी तरह से सोचने, समस्या का समाधान करने एवं निर्णय लेने की क्षमता का विकास हो जाता है।
- अमूर्त चिंतन करने लगता है यानी निर्णय ,स्मरण ,मनन आदि करता है।
- समस्या का समाधान करने लगता है।

**वाइगोत्स्की का सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त :-** वाइगोत्स्की का सिद्धान्त टलहवजोल जेमवतल लिव वाइगोत्स्की (1896–1934) द्वारा दिया गया सिद्धान्त है। यह एक रूसी मनोवैज्ञानिक थे। जिन्होंने सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था। जिसको निकट विकास का क्षेत्र (Zone of Proximal Development) ZPD के नाम से भी जाना जाता है। वाइगोत्स्की के अनुसार छात्रों को अधिगम करवाने या उनका विकास करने हेतु उचित मार्गदर्शन या दिशा-निर्देश की आवश्यकता होती है और छात्रों को यह निर्देशन एवं मार्गदर्शन समाज और संस्कृति से प्राप्त होता है। वाइगोत्स्की को संरचनावादी की संज्ञा दी जाती है। वाइगोत्स्की सिद्धान्त को मनोविज्ञान और बाल मनोविज्ञानमें अधिगम के सिद्धान्त (Theory of Learning) के रूप में भी देखा जाता है।

वाइगोत्स्की के इस सिद्धान्त के अनुसार बालक का विकास समाज द्वारा होता है। वाइगोत्स्की बालक के सर्वांगीण विकास में सामाजिक और सांस्कृतिक सिद्धान्तों को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करते हैं। जिस कारण वाइगोत्स्की के इस सिद्धान्त को सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त के नाम से भी जाना जाता है।

वाइगोत्स्की एक रचनात्मक विचारधारा वाले व्यक्ति थे। जिन्होंने सामाजिक और सांस्कृतिक सिद्धान्तों के आधार पर छात्रों के संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development) की व्याख्या की थी। जहाँ जीन पियाजे (Piaget Theory)

संज्ञानात्मक विकास में उम्र को आधार बना कर चलते हैं, वहीं वाइगोत्स्की संज्ञानात्मक विकास के लिए सामाजिक और सांस्कृतिक सिद्धान्तों को आधार बनाते हैं।

- वाइगोत्स्की के इस सिद्धान्त के अनुसार बालक समाज और संस्कृति में रह कर अनुकरण (नकल) के द्वारा सिखता है। इनके अनुसार बालक समाज के साथ अंतःक्रिया करके अपना विकास करता है। वाइगोत्स्की अपने सिद्धान्त का प्रतिपादन समाज को केंद्र में रख कर करते हैं।
- वाइगोत्स्की बालक के संज्ञानात्मक विकास में सामाजिक अन्तःक्रिया, भाषा, संस्कृति को महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। उनके संज्ञानात्मक विकास के ये 3 तत्व आधार हैं, अर्थात वह अपने सिद्धान्त की सम्पूर्ण व्याख्या इन तीनों को आधार बना कर करते हैं।
- सामाजिक अन्तःक्रिया (Social Interaction) – वाइगोत्स्की के अनुसार बालक समाज से दिशा-निर्देश प्राप्त कर अपना संज्ञानात्मक विकास करते हैं और विकास की इस प्रक्रिया को वह अनुकरण को आधार बना कर करते हैं।
- भाषा (संदहनहम) दृ वाइगोत्स्की संज्ञानात्मक विकास के लिए भाषा को एक उपकरण (Tool) मानते हैं। जिसकी सहायता से बालक समाज और संस्कृति के साथ रहकर अंतःक्रिया का कार्य करता है। वाइगोत्स्की के अनुसार भाषा के अभाव में व्यक्ति अपना संज्ञानात्मक विकास नहीं कर सकता।
- वाइगोत्स्की के अनुसार – “एक बच्चे की भाषा के विकास में दूसरों के साथ सम्प्रेक्षण एक महत्वपूर्ण तत्व है।”
- संस्कृति (Culture) – वाइगोत्स्की सिद्धान्त में संस्कृति का अपना अहम योगदान है। संस्कृति बालक में नैतिक-मूल्यों का विकास करती है। मनुष्य को सभ्य व्यवहार करने की ओर प्रेरित करती है और बालक यह सब भी अनुकरण द्वारा ही सिखता है।

वाइगोत्स्की अपने सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त में 3 अन्य तत्वों को भी महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। जिन्हें इस सिद्धान्त के आधार के रूप में माना जाता है। इन तीन तत्वों को ZPD, MKO और Scaffolding के नाम से जाना जाता है। तो आइए इसे विस्तारपूर्वक जानने का प्रयास करते हैं।

संभावित या निकटवर्ती विकास का क्षेत्र – Zone of Proximal Development (ZPD) – वाइगोत्स्की के संभावित विकास के क्षेत्र (ZPD) के अनुसार व्यक्ति को इस स्तर में सिखने के लिए अन्य व्यक्ति की सहायता की आवश्यकता होती है, अर्थात इसमें अन्य ज्ञानवान व्यक्ति के अभाव में इसका विकास संभव नहीं हो पाता। विकास के इस क्षेत्र में व्यक्ति को उचित दिशा-निर्देश की आवश्यकता होती है और इसी की सहायता से व्यक्ति अपने आगे लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है।

इस संप्रत्यय के अनुसार इस स्तर में व्यक्ति अपने मित्र या फिर अपने किसी परिजन के माध्यम से अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त करता है। वाइगोत्स्की के अनुसार छात्र इस स्तर में व्यक्तिगत अधिगम करना सीखते हैं और वह नवीन विचारों को ग्रहण करने में बहुत उत्सुक अनुभव करते हैं।

**उदाहरण** – बालक बिना विद्यालय जाए काफी ज्ञान घर में रह कर ही प्राप्त कर लेते हैं। परंतु जिन बिंदुओं में उनको समस्या आती है, उन बिंदुओं से उत्पन्न समस्या के समाधान हेतु वह अध्यापकों एवं अपने मित्रों की सहायता लेकर सीखते हैं और इसी को वाइगोत्स्की च्च की संज्ञा देते हैं।

**अधिक जानकर अन्य (व्यक्ति) – More Knowledgeable Other (MKO)** – वाइगोत्स्की के डज़्ट से आशय ऐसे व्यक्ति से है, जो व्यक्ति सीखने वाले व्यक्ति से अधिक ज्ञान, अनुभव एवं कौशल रखता हो। उदाहरण स्वरूप एक बालक जो अज्ञानी होता है, वहीं एक अध्यापक जो ज्ञान का भंडार होता है। ऐसी स्थिति में सीखने वाला व्यक्ति अपना सर्वोत्तम संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development) कर पाता है।

वाइगोत्स्की के सामाजिक – सांस्कृतिक सिद्धान्त (Vygotsky Theory) के अनुसार अगर सीखने वाले में सिखाने वाले से अधिक बुद्धि होगी या उसके समान बुद्धि होगी तो ऐसी स्थिति में बालक का संज्ञानात्मक विकास भली-भांति नहीं हो पाएगा। सामान्य शब्दों में बालक का संज्ञानात्मक विकास करने हेतु सीखाने वाले व्यक्ति के पास सीखने वाले व्यक्ति से अधिक ज्ञान होना आवश्यक है। इसी को वाइगोत्स्की का **More Knowledgeable Other (MKO)** कहा जाता है।

ढांचा **Scaffolding** – वाइगोत्स्की (Vygotsky) के अनुसार बालक को सीखने के लिए एक ढांचे की जरूरत होती है, अर्थात् एक ऐसी सीढ़ी जो उसे अधिगम के उस शिखर तक ले जा सके। जिस शिखर पर पहुंचकर वह अपनी अधिगम के अंतर्गत आने वाली समस्त समस्याओं का समाधान कर सके।

वाइगोत्स्की के सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त की विशेषता – **Characteristics of Vygotsky Theory** –

1. वाइगोत्स्की बालक के संज्ञानात्मक विकास के लिए समाज और संस्कृति को महत्वपूर्ण स्थान देते हैं।
2. इस सिद्धान्त के अनुसार विकास के लिए पहले अधिगम होना अत्यंत आवश्यक है।
3. इस सिद्धान्त के अनुसार छात्र में संज्ञानात्मक विकास करने के गुण पहले से ही विद्यमान होते हैं, लेकिन इन गुणों को बाहर निकालने का कार्य समाज और संस्कृति द्वारा होता है।
4. वाइगोत्स्की बालक के संज्ञानात्मक विकास करने हेतु सामाजिक अन्तःक्रिया, भाषा और संस्कृति को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते हैं।
5. वाइगोत्स्की ने छात्र के अधिगम हेतु **ZPD, MKO** और **Scaffolding** संप्रत्यय को आवश्यक माना है।

**शिक्षा में वाइगोत्स्की सिद्धान्त की भूमिका – Role of Vygotsky Theory in Education** – शिक्षा के क्षेत्र में इस सिद्धान्त का अहम योगदान है। इस सिद्धान्त का उपयोग वर्तमान शिक्षा प्रणाली में छात्रों को अधिगम करवाने हेतु किया जाता है। यह अध्यापक को यह विश्वास दिलाता है, कि उनके द्वारा छात्रों का उत्तम तरीके से संज्ञानात्मक विकास किया जा सकता है। यह किसी जटिल प्रकरण को सरल बनाने एवं शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने हेतु अत्यंत लाभदायक है। वाइगोत्स्की का यह सिद्धान्त बालक को समाज और संस्कृति से जोड़ने का कार्य करता है। जो छात्र के नैतिक मूल्यों का विकास करने में सहायक है।

**Unit :-3.3 Learning styles and types of learners (सीखने की शैली और शिक्षार्थियों के प्रकार) :-** मनोवैज्ञानिकों और शिक्षकों ने सीखने के कई सिद्धान्त विकसित किए हैं और सीखने की शैलियों की एक सारणी की पहचान की है। कुछ सीखने की शैली के सिद्धान्त उन संवेदी मार्गों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिनका उपयोग छात्र सीखने के लिए करते हैं। अन्य सिद्धान्त भौतिक वातावरण पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिसमें सीखना होता है। फिर भी अन्य लोग सामाजिक संपर्क पर जोर देते हैं क्योंकि यह सीखने से संबंधित है।

जबकि यह खंड सीखने की शैलियों की कुछ विशेषताओं पर प्रकाश डालता है, यह समझने पर जोर दिया जाता है कि व्यक्तिगत अंतर और प्राथमिकताएं सीखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आपके शिक्षण में विविधता जोड़ने से आपके छात्रों की सीखने की शैली में बदलाव आएगा और आपके शिक्षण को अधिक रोमांचक और मनोरंजक बना दिया जाएगा।

**प्रिंट शिक्षार्थी (Print learners) :-** प्रिंट शिक्षार्थी डेटा को प्रिंट में देखना पसंद करते हैं, अधिमानतः शब्दों में मुद्रित। पाठ्यक्रम अवधारणाओं या प्रक्रिया के चरणों का परिचय देते समय, प्रिंट शिक्षार्थी जानकारी के बारे में पढ़ना पसंद करते हैं और फिर एक चित्रण या अन्य दृश्य सहायता का अध्ययन करते हैं। दृश्य शिक्षार्थियों को भी मुद्रित सत्रीय कार्यों को देखने से लाभ होता है।

• प्रमुख शब्दों और अवधारणाओं को प्रस्तुत करते समय, पाठ्यपुस्तक का संदर्भ लें और पाठ्यपुस्तक के उदाहरणों का उपयोग करें। प्रिंट शिक्षार्थी बाद में वापस जा सकते हैं और सामग्री का अध्ययन कर सकते हैं।

• हैंडआउट्स और स्टडी शीट का उपयोग करने पर विचार करें। छात्र अपनी स्टडी शीट भी बना सकते हैं। वर्ड गेम प्रिंट शिक्षार्थियों को प्रमुख शब्दों और अवधारणाओं को समझने में मदद कर सकते हैं।

**देख कर सीखने वाले (Visual learners) :-** दृश्य शिक्षार्थियों को अवधारणा को 'देखने' की आवश्यकता है। शिक्षार्थियों के लिए विचार को देखने का एक तरीका विजुअलाइजेशन के माध्यम से है। ओवरहेड पारदर्शिता या बोर्ड का उपयोग करके बुनियादी अवधारणाओं पर चर्चा करें। इसके अलावा, पारदर्शिता या बोर्ड पर वर्णनात्मक वाक्यांश या विचार लिखने से पहले छात्रों से एक मानसिक चित्र बनाने के लिए कहें।

दृश्य शिक्षार्थियों के लिए दृश्य एड्स विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। आज की पाठ्यपुस्तकें छवियों से भरी हुई हैं। कुछ छात्रों के लिए, ये चित्र सीखने की कुंजी हैं। दूसरों के लिए, वे सुदृढीकरण प्रदान करते हैं। पाठ्यपुस्तक में दृश्य छवियों के अलावा, ओवरहेड पारदर्शिता, वीडियो टेप, स्लाइड और प्रस्तुति ग्राफिक्स सभी का उपयोग छात्रों को अवधारणाओं और कौशल की कल्पना करने में मदद करने के लिए किया जा सकता है। समृद्ध मल्टीमीडिया घटकों वाली वेब साइटों का उपयोग प्रक्रियाओं को प्रदर्शित करने या अवधारणाओं का पता लगाने के लिए प्रभावी ढंग से किया जा सकता है।

**श्रवण शिक्षार्थी (auditory learners) :-** श्रवण शिक्षार्थी सर्वोत्तम उच्च सुनवाई सीखते हैं। श्रवण शिक्षार्थी जो पाठ्यपुस्तक का पाठ पढ़ते हैं, प्रमुख विचारों के बोले गए सुदृढीकरण से लाभान्वित होते हैं। अन्य शिक्षकों, अतिथि वक्ताओं और परिवार के सदस्यों को अपनी कक्षा को संबोधित करने के लिए कहने पर विचार करें। छात्रों से चर्चा गतिविधियों के भाग के रूप में अपने पठन को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए कहें। पहले असाइनमेंट के निर्देशों को जोर से पढ़ें और श्रवण शिक्षार्थियों को नई प्रक्रिया या प्रक्रिया में शामिल कदमों को बताना सुनिश्चित करें।

– स्पेलिंग के बाद तैयार की गई शब्दावली गतिविधि विकसित करें। इस तरह की गतिविधि सामाजिक संपर्क, प्रतिस्पर्धा और आंदोलन के अतिरिक्त लाभ प्रदान करती है।

• कुंजी, अवधारणा समझ को संक्षेप में प्रस्तुत करने या सुदृढ करने में सहायता के लिए छात्र मौखिक प्रस्तुतियों का उपयोग करें।

**स्पर्श सीखने वाले (Tactile learners) :-** स्पर्श करने वाले शिक्षार्थी वस्तुओं को छूकर या संभालकर सबसे अच्छा सीखते हैं। चौथी कक्षा तक, स्पर्श सीखने वाले सीखने की गतिविधियों की सराहना करते हैं जो लेखन सहित सूक्ष्म मोटर कौशल का उपयोग करते हैं। सीखने वालों को स्पर्श करने के लिए जोड़तोड़ विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। वे व्यावहारिक गतिविधियों में भाग लेने, भूमिका निभाने और प्रदर्शन बनाने से भी लाभान्वित होते हैं। स्पर्श करने वाले शिक्षार्थियों को याद है कि उन्होंने क्या किया और कैसे किया। जरूरी नहीं कि वे याद रखें कि उन्होंने दूसरों को क्या करते देखा या क्या सुना।

- कक्षा में एक प्रक्रिया का प्रदर्शन करने के बाद, एक छात्र से प्रदर्शन को दोहराने के लिए कहें। अन्य छात्रों को प्रदर्शनकारी को प्रशिक्षित करने की अनुमति दें।
- जब गतिविधियों में भूमिकाएं लेना शामिल हो, तब तक गतिविधि को दोहराएं जब तक कि प्रत्येक छात्र को प्रत्येक भूमिका निभाने का मौका न मिल जाए।

**काइनेटिक शिक्षार्थी (Kinesthetic learners) :-** काइनेटिक शिक्षार्थी कक्षा निर्देश में सक्रिय भाग लेकर सर्वश्रेष्ठ हासिल करते हैं। गति सहित गतिज सीखने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो सीखने की प्रक्रिया के लिए विशिष्ट नहीं है। केवल छात्रों को कक्षा में घूमने की अनुमति देना गतिज शिक्षार्थियों के लिए विशेष रूप से सहायक हो सकता है। उदाहरण

के लिए, किसी समस्या पर काम करने के लिए बोर्ड के पास जाना चलने और लिखने के लिए आवश्यक गतियों को शामिल करता है।

- डिजाइन गतिविधियाँ जिनमें छात्रों को कमरे के भीतर एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन पर जाने की आवश्यकता होती है।
- कुछ गतिविधियों के दौरान, छात्रों को कुछ संसाधनों का उपयोग करने के लिए कमरे में घूमने की अनुमति दें, उदाहरण के लिए, एक शब्दकोश, पेंसिल शार्पनर, या सिंक।
- छात्रों को असाइनमेंट पूरा करने के लिए कक्षा में उपलब्ध तकनीकी उपकरणों का उपयोग करने की अनुमति दें।

**Unit :- 3.4 Socio-cultural factors affecting learning (सीखने को प्रभावित करने वाले सामाजिक-सांस्कृतिक कारक) :-** हमारी भारतीय सांस्कृतिक परंपरा अद्वितीय है। सामाजिक स्तरीकरण के पदानुक्रमित सिद्धांतों के रूप में धर्म, कर्म और जाति की धारणाएं भारतीय संस्कृति के लिए बुनियादी हैं। इन तत्वों के विन्यास के एक निश्चित स्तर और सर्वसम्मति ने दृढ़ता और भारतीय समाज में संतुलन, और इसलिए इसकी संस्कृति में कोई बड़ी तबाही नहीं हुई है। ऐसा कहा जाता है कि परिवर्तन सांस्कृतिक व्यवस्था में है। दूसरे शब्दों में, बुनियादी सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्य और मानदंड अभी भी कुछ संशोधनों के साथ जारी हैं। हजारों जाति समूहों में विविधता परिलक्षित होती है, जिनमें से प्रत्येक के अपने अनुष्ठान, संस्कार, नियम और रीति-रिवाज हैं। इसे भाषाई, धार्मिक और अन्य जातीय भिन्नताओं के संदर्भ में देखा जा सकता है। 'जीवन की शैली एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भिन्न होती है और एक ही गाँव के भीतर विभिन्न जातियों और धार्मिक समूहों के बीच भी भिन्न होती है। कुछ शासकों ने अनेकता में एकता सुनिश्चित करने के लिए सचेत प्रयास किए।

'सामाजिक विविधता' द्वारा, एक निश्चित भू-राजनीतिक सेटिंग के भीतर विभिन्न सामाजिक समूहों का सह-अस्तित्व या सरल शब्दों में, समूहों में समाज का भेदभाव। अन्य शब्द जैसे, 'बहुलता', 'बहुसंस्कृतिवाद', 'जातीय भेदभाव' आदि। इस सुविधा को समझने के लिए परस्पर विनिमय भी किया जाता है। वह समाज की संरचना के आधार पर कार्यात्मक और दुराचारी समाज की विविधता को मान सकता है। इस स्तर पर जो प्रश्न उठ सकता है वह यह है कि 'एक समाज अपनी जैविक एकता को खोए बिना कितना बहुलवादी बन सकता है?' समूहों के विभाजन के बावजूद, एक अंतर्निहित एकता संपूर्ण भारतीय सामाजिक व्यवस्था में चलती है। भारत में सामाजिक विविधता की प्रकृति को समझने के लिए, विविधता बनाने वाली पहचानों की प्रकृति को समझना महत्वपूर्ण है।

**Types of Social Diversity on the basis of :-**

- भाषा:-भाषा किसी भी समाज में समूह एकजुटता का एक प्रमुख संकेतक है।
- धर्म:-धर्म व्यक्तियों और समूहों के बीच सामाजिक एकीकरण की एक महत्वपूर्ण बाध्यकारी शक्ति है।
- जाति:- जाति सामाजिक संबंधों की एक प्रणाली है। यह भारतीय समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता है जो सजातीय विवाह, पदानुक्रम, व्यावसायिक संबंध, शुद्धता और प्रदूषण, और अभिलेखीय स्थिति पर आधारित है।
- जनजाति:-भारत में जनजातीय लोग अन्य महत्वपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक समूह हैं।
- लिंग: लिंग पुरुष और महिला के बीच सामाजिक-जैविक अंतर का एक रूप है।

भारत विविधताओं का देश है। इसकी विविधता भाषा, धर्म, जाति के संदर्भ में व्यक्त की जाती है। जनजाति और लिंग। विविधता आंतरिक भेदभाव और बाहरी प्रभाव दोनों का परिणाम है। विभेदीकरण और एकीकरण की प्रक्रिया साथ-साथ चलती रही है। जिन समूहों को एक सामाजिक मार्कर पर विभेदित किया गया है, उन्हें दूसरों पर एकजुट देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, जो समूह धार्मिक आधार पर विभाजित हैं जैसे कि हिंदू, मुस्लिम आदि भाषा, लिंग आदि

के संदर्भ में एकजुट हैं। इस प्रकार 'विविधता के बीच एकता' भारतीय समाज में प्रचलित है। हालाँकि विविधता और एकता के बीच संतुलन नाजुक और कई समस्याओं से भरा है। विविध समूहों के बीच शक्ति संबंधों का विश्लेषण करने की आवश्यकता है।

**Unit :- 3.5 Implications for children with special needs (विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए निहितार्थ) :-** लोग कैसे सीखते हैं, इसके बारे में कई अलग-अलग मान्यताएं हैं। स्कूलों के भीतर, इन सिद्धांतों को शिक्षकों द्वारा छात्रों के अनुभव को अधिकतम करने के लिए लागू किया जाता है। छात्रों के लिए प्रचलित एक लागू सिद्धांत को लागू करके, शिक्षक छात्रों को प्रासंगिक जानकारी बनाए रखने में मदद कर सकते हैं। यह इस बात पर लागू होता है कि सीखने के सिद्धांत और विशेष शिक्षा एक साथ कैसे काम कर सकते हैं।

विशेष शिक्षा कक्षाओं में, शिक्षकों को इन शिक्षण सिद्धांतों को लागू करने की आवश्यकता होती है, ताकि एसपीईडी कक्षाओं में छात्र अपने सीखने का अधिक से अधिक लाभ उठा सकें। कुछ सिद्धांत जो विशेष शिक्षा कक्षाओं पर लागू होते हैं वे हैं: गेस्टाल्ट, कनेक्शन थ्योरी, गैंगे की सीखने की शर्तें, कॉग्निटिव लोड थ्योरी, और साइन लर्निंग थ्योरी।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि छात्रों के लिए कुछ कनेक्शनों को मौखिक रूप से और आवेदन में बनाने की आवश्यकता हो सकती है क्योंकि एसपीआरआई में सभी छात्र स्वतंत्र रूप से डॉट्स को जोड़ने के लिए उपयुक्त नहीं हो सकते हैं। 'द कॉग्निटिव लोड थ्योरी साइन लर्निंग थ्योरी छात्रों को पूरी तरह से मदद करने के लिए सरल बनाने और शायद रेखाएँ खींचने के इस विचार को दूर करती है। कुछ विशेष शिक्षा के छात्रों के लिए बिंदुओं को जोड़ने में मदद करने का एक तरीका कनेक्शन सिद्धांत है। यह उत्तेजना और प्रतिक्रिया के कारण-प्रभाव संबंध से सीखने वाले छात्रों पर आधारित है। घटक प्रदर्शन सिद्धांत और सीखने की शर्तें मौखिक और व्यावहारिक दोनों से सीखने के लिए विभिन्न तत्वों को शामिल करने पर आधारित हैं। वे एक समान संरचना पर भी चर्चा करते हैं जो सीखने की प्रक्रिया के दौरान पालन करने में सहायक होती है।

इन सभी शिक्षण सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए, प्रशिक्षक इस आधार पर पाठ पढ़ा सकते हैं कि छात्र जानकारी को सर्वोत्तम तरीके से कैसे सीखेंगे। ऐसा लगता है कि यह समावेशी स्कूल सेटिंग्स के विश्वासों में हस्तक्षेप करता है। चूंकि विशेष आवश्यकता वाले बच्चे अलग होते हैं और अलग तरह से सीखते हैं, इसलिए हो सकता है कि एक पारंपरिक शिक्षक इस अल्पसंख्यक समूह में अपने पाठों को निर्देशित नहीं कर रहे हों।

NBPTS, नेशनल बोर्ड फॉर प्रोफेशनल स्टैंडर्ड्स, शिक्षकों को शिक्षण सिद्धांतों में अपने स्वयं के विश्वास की खोज करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इससे शिक्षकों को आत्म-जागरूकता प्रदान करने में मदद मिलती है। शिक्षकों को प्रतिबिंबित करने के लिए एक संरचना प्रदान करके, यह शिक्षकों के नौकरी शिक्षण और उनके छात्रों तक पहुंचने का आकलन करने में मदद कर सकता है, जो बदले में समग्र शैक्षिक वातावरण को बेहतर बनाने में मदद करता है।

## **Unit :- 4 Psychological processes and their Implications for Children with different Disabilities**

**Unit :- 4.1 Attention; concept and factors affecting attention in classroom (ध्यान; कक्षा में ध्यान को प्रभावित करने वाली अवधारणा और कारक) :-** हम अपने दिन-प्रतिदिन की बातचीत में अक्सर "ध्यान" शब्द का प्रयोग करते हैं। कक्षा में व्याख्यान के दौरान, एक शिक्षक आपका ध्यान आकर्षित करता है कि वह क्या कह रहा है या वह क्या लिखता है या ब्लैकबोर्ड। रेलवे स्टेशन या सार्वजनिक स्थानों पर यात्रियों को ट्रेनों के शेड्यूल के बारे में सूचित करने से पहले "आपका ध्यान कृपया" के साथ घोषणाएं शुरू होती हैं। इस प्रकार ध्यान हमारे मन की एक शक्ति, क्षमता के रूप में लिया जाता है।

अवधान या ध्यान एक मानसिक क्रिया है। अवधान केन्द्रित करने पर ही हमें विभिन्न वस्तुओं का ज्ञान होता है। अतः किसी बात को सीखने अथवा किसी वस्तु का ज्ञान प्राप्त करने के लिये अवधान की आवश्यकता होती है। सप्तावस्था में ही

हम इस क्रिया से वंचित रहते हैं, क्योंकि उस समय हममें चेतना का अभाव रहता है। चेतना व्यक्ति का स्वभाविक गुण है। चेतना के कारण उसे विभिन्न वस्तुओं का ज्ञान होता है। जब हम किसी कमरे में जाग्रत अवस्था में बैठे पुस्तक पढ़ रहे होते हैं, तो कमरे की सभी चीजें जैसे – मेज, कुर्सी, घड़ी, अल्मारी आदि के प्रति हमारी कुछ न कुछ चेतना अवश्य होती है किन्तु चेतना का केन्द्र-बिन्दु वह पुस्तक होती है जिसे हम पढ़ रहे होते हैं। चेतना के किसी वस्तु पर इस प्रकार केन्द्रित होने की स्थिति को अवधान कहते हैं। अन्य शब्दों में, किसी वस्तु पर चेतना को केन्द्रित करने की मानसिक प्रक्रिया को ध्यान या अवधान कहते हैं।

**.बी.एन.झा के अनुसार,**“ किसी विचार या संस्कार को चेतना में स्थिर करने की प्रक्रिया अवधान है।”

**स्टाउट के अनुसार,**“ ध्यान सरल रूप में उस सीमा तक क्रिया है जहाँ तक वस्तुओं के पूर्णज्ञान से उसकी सन्तुष्टि होती है।”

**डम्बिल के अनुसार,**“ अवधान अन्य वस्तुओं की अपेक्षा एक वस्तु पर चेतना का केन्द्रीयकरण है।”

**वैलेन्टाइन के अनुसार,**“ अवधान मस्तिष्क की शक्ति न होकर संपूर्ण रूप से मस्तिष्कीय क्रिया या अभिवृत्ति है।”

**वुण्ड के अनुसार,**“ अवधान एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा उद्दीपक चेतना के सीमा प्रदेश में चेतना के केन्द्र में आता है।”

**मन के अनुसार,**“ अवधान एक अभिप्रेरणात्मक क्रिया है।”

**रॉस के अनुसार,**“ अवधान, विचार की किसी वस्तु को मस्तिष्क के सामने स्पष्ट रूप से उपस्थित करने की प्रक्रिया है।”

ध्यान एक केंद्रीय प्रक्रिया है और ध्यान प्रक्रियाओं के बिना धारणा संभव नहीं है। इसका मतलब है कि ध्यान धारणा से पहले है। हमारी धारणाओं और अन्य संज्ञानात्मक कार्यों के संगठन में चौकस प्रक्रियाएं विभिन्न कार्यों की सेवा करती हैं।

**ध्यान के विभिन्न कार्य हैं (The various functions of attention are) :-**

**Alerting function :-** इस अर्थ में ध्यान केंद्रित जागरूकता की स्थिति को प्रतिक्रिया देने के लिए तत्परता के साथ संदर्भित करता है (उदाहरण के लिए, यदि कोई प्रश्न पूछा जाता है)। व्याकुलता तब होती है जब कुछ हस्तक्षेप व्यक्ति को चल रहे कार्य को जारी रखने से रोकता है।

**चयनात्मक कार्य (Selective function) :-** चयनात्मकता एक ऐसी प्रक्रिया को संदर्भित करती है जिसके द्वारा उत्तेजना या चल रही रुचि की उत्तेजनाओं पर ध्यान केंद्रित किया जाता है और अन्य उत्तेजनाओं को नजरअंदाज कर दिया जाता है। चयनात्मक ध्यान एक फिल्टर के रूप में कार्य करता है, जो कुछ जानकारी को अंदर और अन्य (अवांछित) को बाहर करने की अनुमति देता है।

**सीमित क्षमता चैनल (Limited capacity channel) :-** यह अनुसंधान के माध्यम से स्थापित किया गया है कि हमारे पास बाहरी दुनिया में उपलब्ध जानकारी को संसाधित करने की सीमित क्षमता है। अर्थात्, जिन कार्यों के लिए चौकस संसाधनों की आवश्यकता होती है, उन्हें एक साथ नहीं किया जा सकता क्योंकि हमारे पास आने वाली सूचनाओं को संसाधित करने की सीमित क्षमता है। हम एक समय में एक कार्य को संसाधित करते हैं, जिसे सीरियल प्रोसेसिंग कहा जाता है।

**सतर्कता (Vigilance) :-** किसी कार्य पर लगातार कुछ समय तक ध्यान बनाए रखना, जैसे रडार स्क्रीन पर देखना, सतर्कता या निरंतर ध्यान कहलाता है।

## ध्यान के कारक (Factors of Attention) :-

### बाहरी कारक (The External Factors)

- तीव्रता (Intensity) :- उत्तेजना की तीव्रता ध्यान देने की स्थिति है।
- उद्दीपन का आकार (Size of the stimulus) :- दृश्यमान ओजेक्ट के मामले में, एक बड़े आकार का एक छोटे आकार पर एक फायदा होता है।
- हड़ताली गुणवत्ता (Striking quality) :- उत्तेजना की एक हड़ताली गुणवत्ता इसकी तीव्रता के अलावा एक विशिष्ट लाभ है।
- गति (Movement) :- गति में परिवर्तन शामिल है, यह लाभ का एक विशिष्ट कारक है। एक चलती हुई वस्तु आसानी से ध्यान आकर्षित करती है।
- दोहराव (Repetition) :- लाभ के कारक के रूप में दोहराव। यदि कोई उद्दीपन दोहराया जाता है, तो यह हमारा ध्यान आकर्षित करने की संभावना रखता है।

### आंतरिक कारक (The Internal Factors) :-

- रुचि (Interest) :- रुचि ध्यान का एक मुख्य निर्धारक है। हम उन चीजों पर ध्यान देते हैं जो हमें रुचि देती हैं।
- नवीनता (Novelty) :- नवीनता ध्यान देने की एक शर्त है क्योंकि यह एक व्यक्ति में रुचि पैदा करती है। बच्चा एक नए खिलौने, एक नए कोट, एक नई मोटर कार, एक नई पोशाक से आकर्षित होता है।
- दुर्लभता (Rareness) :- दुर्लभता भी ध्यान देने की एक शर्त है क्योंकि यह रुचि पैदा करती है। ताजमहल किसी का ध्यान आकर्षित करता है क्योंकि यह दुर्लभ है और किसी की रुचि पैदा करता है।
- वृत्ति (Instincts) :- ध्यान वृत्ति के नेतृत्व का अनुसरण करता है। जब बिल्ली भूखी होती है, तो वह चूहों पर ध्यान देती है।
- भावना (Emotion) :- ध्यान ही भावनाओं का निर्धारण होता है, एक व्यक्ति अपने प्रिय के अच्छे गुणों पर ही ध्यान देता है। व्यक्ति अपने शत्रु के बुरे गुणों पर ही ध्यान देता है।
- आदत और शिक्षा (Habit and Education) :- आदत और शिक्षा ही ध्यान निर्धारित करती है। प्रशिक्षण और पिछले अनुभव ध्यान देने की सुविधा प्रदान करते हैं।

SPECIAL EDUCATION

**Unit :- 4.2 Perception; concept and factors affecting perception (धारणा; अवधारणा और धारणा को प्रभावित करने वाले कारक) :-** हम एक त्रि-आयामी दुनिया में रहते हैं और उससे निपटते हैं जिसमें विभिन्न आकृतियों और रूपों, आकारों और रंगों की वस्तुएं होती हैं। आम तौर पर, बाहरी दुनिया का हमारा अनुभव काफी सटीक और त्रुटि मुक्त होता है। हालाँकि, हम भ्रम का सामना करते हैं (जैसे रात में एक रस्सी को साँप के रूप में देखना)। इस दुनिया में जीवित रहने और जीने के लिए हमें अपने पर्यावरण से सटीक जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। यह जानकारी हमारी इंद्रियों द्वारा इकट्ठी की जाती है, कुल मिलाकर दस। इनमें से आठ बाहरी (दृष्टि, श्रवण, गंध, स्वाद, स्पर्श, गर्मी, ठंड और दर्द) और या गहरी इंद्रियां (जैसे, वेस्टिबुलर और काइनेस्टेटिक) हैं।

धारणा को हमारी मान्यता और संवेदी जानकारी की व्याख्या के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। धारणा में यह भी शामिल है कि हम जानकारी पर कैसे प्रतिक्रिया देते हैं। हम धारणा को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में सोच सकते हैं जहां हम अपने पर्यावरण से संवेदी जानकारी लेते हैं और उस जानकारी का उपयोग अपने पर्यावरण के साथ बातचीत करने के लिए करते हैं। धारणा हमें संवेदी जानकारी लेने और इसे कुछ सार्थक बनाने की अनुमति देती है।

धारणा को "पिछले अनुभव के आधार पर वर्तमान उत्तेजना की व्याख्या की प्रक्रिया" के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

**आकृतियों की धारणा (Perception of Shapes) :-**

**चित्र – आधार सम्बन्ध (Figure – ground Relationship) :-** इस सिद्धांत के अनुसार किसी भी आकृति को पृष्ठभूमि में अधिक अर्थपूर्ण रूप से देखा जा सकता है और उस आकृति को उस पृष्ठभूमि से अलग नहीं किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, सफेद चाक के टुकड़े से लिखे गए अक्षरों को ब्लैकबोर्ड की पृष्ठभूमि में स्पष्ट रूप से देखा जाता है।

**फिगर-ग्राउंड संबंध के निर्धारक (The determinants of figure & ground relationship) :-**

**निकटता (Proximity) :-** निकटता का अर्थ है निकटता (nearness) जो वस्तुएँ एक-दूसरे के निकट होती हैं, उन्हें समूहबद्ध करके सार्थक रूप से देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, 'मनुष्य' शब्द। यहां हालांकि अक्षर असतत हैं, जब एक साथ समूहीकृत किया जाता है तो कुछ अर्थ मिलता है। चित्र में जो तारे एक दूसरे के निकट हैं उन्हें एक साथ समूह, एकल आकृति के रूप में माना जाता है।

**समानता (Similarity) :-** बोध के लिए उत्तेजनाओं का एक दूसरे के निकट होना आवश्यक नहीं है। यदि इन वस्तुओं में समानता है, तो उन्हें एक साथ समूहीकृत किया जाता है और माना जाता है। भले ही वे दूर हों। उदाहरण के लिए, इस चित्र में समानता के अनुसार समूहीकरण किया जाएगा, अर्थात्। सभी वर्ग और त्रिभुज अलग-अलग समूहीकृत होते हैं।

**निरंतरता (continuity) :-** कोई भी उत्तेजना जो एक ही दिशा या आकार में फैली हुई है, उसे संपूर्ण चित्र A और B माना जाएगा। उदाहरण के लिए, (A) इस आकृति में हालांकि घुमावदार रेखा टूटी हुई है, इसे एक निरंतर रेखा के रूप में माना जाता है, इसलिए भी सीधी रेखा को अर्धवृत्तों के साथ नहीं देखा जाता है लेकिन एक सतत रेखा के रूप में देखा जाता है (बी) बिंदुओं को एक ही दिशा की दिशा में लगातार विद्यमान माना जाता है।

**बंद करना (Closure) :-** जब एक उत्तेजना अंतराल के साथ प्रस्तुत की जाती है, तो मानवीय प्रवृत्ति यह है कि मनोवैज्ञानिक रूप से अंतराल को भरकर उस आकृति को पूर्ण रूप से देखें।

**सममिति (Symmetry) :-** जिन वस्तुओं का आकार सममित होता है, उन्हें समूह माना जाता है। उदाहरण के लिए, विभिन्न आकृतियों के कोष्ठक अर्थपूर्ण रूप से माने जाते हैं, क्योंकि उन्हें एक साथ समूहीकृत किया जाता है और उन्हें कोष्ठक के रूप में माना जाता है।

**अंतरिक्ष की धारणा (Perception of Space) :-** अंतरिक्ष की धारणा आकार और दूरी की धारणा को भी संदर्भित करती है। समस्या इस तथ्य से उभरती है कि त्रि-आयामी दुनिया की छवि दो-आयामी रेटिना पर प्रक्षेपित होती है। यह प्रश्न उठाता है: द्वि-आयामी छवि से, हम त्रि-आयामी दुनिया को कैसे देखते हैं? या दूसरे शब्दों में हम गहराई और दूरी को कैसे समझते हैं?

**दूरी (Distance) :-** यह एपिसर्वर और वस्तु के बीच पूर्ण स्थानिक सीमा को संदर्भित करता है।

**गहराई (Depth) :-** यह सर्वर द्वारा देखे गए दो वस्तुओं के बीच सापेक्ष स्थानिक सीमा है।

**आकार (Size) :-** वस्तु का भौतिक आकार होता है जो वहां होता है। 'व्यक्ति इसे मानता है, इसे कथित आकार कहा जाता है।

**संकेत (Cues) :-** यह समझना दिलचस्प है कि हम अपने लिए उपलब्ध विभिन्न संकेतों की मदद से गहराई और दूरी का अनुभव करते हैं। इन संकेतों को वह तीन श्रेणियों में विभाजित कर सकता है।

1. गैर-दृश्य संकेत: आवास और अभिसरण दो गैर-दृश्य संकेत हैं। इन संकेतों को 'गैर-दृश्य' कहा जाता है क्योंकि वे रेटिना की छवि से नहीं निकलते हैं, जैसा कि अन्य संकेतों के मामले में होता है।
2. द्विनेत्री संकेत: द्विनेत्री संकेत, ऊपर चर्चा किए गए दो संकेतों के विपरीत, रेटिना की छवि से ही निकलते हैं।
3. एककोशिकीय संकेत: एककोशिकीय संकेतों को सचित्र संकेत भी कहा जाता है क्योंकि उनमें तस्वीरों और चित्रों में मिली गहराई की जानकारी शामिल होती है। कलाकारों द्वारा अपने चित्रों में इन मंगलों का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

**Extrasensory Perception (ESP) :-** हालांकि, एक अन्य प्रकार की धारणा है जिसमें धारणा इंद्रियों के आक्रमण के बिना आयोजित की जाती है, जिसे अतिरिक्त-संवेदी धारणा (ईएसपी) कहा जाता है। जैसा कि शब्द दर्शाता है, अतिरिक्त संवेदी धारणा बिना (शारीरिक) उत्तेजना के धारणा है। अतिरिक्त संवेदी धारणा में टेलीपैथी, एलेयरवॉयन्स और टेलीकिनेसिस जैसी घटनाएं शामिल हैं।

- टेलीपैथी (Telepathy) :- यह दो व्यक्तियों के बीच विभिन्न स्थानों पर विचारों के हस्तांतरण को संदर्भित करता है।
- क्लैरवॉयन्स (Clairvoyance) :- इंद्रियों की भागीदारी के बिना वस्तुओं और घटनाओं को समझना।
- टेलीकिनेसिस (Telekinesis) :- वस्तुओं को बिना छुए नियंत्रित करना। इसे आम आदमी की दृष्टि में अन्यथा छठी इंद्रिय के रूप में जाना जाता है।

**धारणा को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Perception) :-** किसी भी विशेष समय में कई प्रतिस्पर्धी उत्तेजनाएं होती हैं जो हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं और परिणामस्वरूप स्थायी संगठन बन जाती हैं। उत्तेजना विशेषताएँ महत्वपूर्ण हैं, जैसे कि हमारी अपनी आंतरिक जरूरतें, प्रेरणाएँ और हमारी विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि जिसमें हम पाले गए हैं। ये सभी कारक, उत्तेजना चर और एक व्यक्ति के लिए विशिष्ट आंतरिक कारक, यह निर्धारित करते हैं कि हमारी धारणाएं कैसे व्यवस्थित होती हैं।

**संदर्भ और सेट-इफेक्ट्स (Context and Set & effects) :-** एक दी गई उत्तेजना तत्काल संदर्भ के कारण मौलिक रूप से भिन्न धारणाएं प्रदान कर सकती है। संदर्भ हमारे मस्तिष्क (ऊपर से नीचे की घटना) में एक अपेक्षा पैदा करता है जो किसी विशेष क्षण में हमारी धारणा को प्रभावित करता है। अवधारणात्मक सेट हमारी धारणाओं को भी प्रभावित करते हैं। अवधारणात्मक सेट हमारी मानसिक अपेक्षाओं और पूर्वाभासों को एक चीज को समझने के लिए संदर्भित करता है। अवधारणात्मक सेट जो हम सुनते हैं और जो हम देखते हैं उसे प्रभावित कर सकते हैं।

**जरूरतें और मकसद (Needs and motives) :-** व्यक्तिगत चर, जैसे जरूरतें, भावनाएं, मूल्य, व्यक्तित्व आदि हमारी धारणाओं को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए दो आदमी, एक भूखा और दूसरा प्यासा, एक रेस्टोरेंट में जाता है और वेटर ऑर्डर प्राप्त करने के लिए प्रत्येक को एक मेनू सौंपता है। यह पाया गया कि, एक त्वरित नजर में, भूखा आदमी मेनू में खाने योग्य वस्तुओं को देख सकता था। और प्यासा पीता है। यह उदाहरण उस परिकल्पना का समर्थन करता है जिसके लिए व्यक्तियों की अवस्थाओं को उनकी धारणाओं को प्रभावित करने की आवश्यकता होती है। यह पाया गया है कि भावनाएं, प्रेरणा और व्यक्तित्व कारक हमारी धारणाओं को प्रभावित करते हैं।

**सामाजिक और सांस्कृतिक कारक (Social and Cultural factors) :-** अवधारणात्मक शिक्षा और विकास सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण के संदर्भ में होता है। हमारी धारणाएं पिछली शिक्षा के प्रभाव को दर्शाती हैं और इसलिए,

यदि सीखना और समाजीकरण किसी विशेष सामाजिक-सांस्कृतिक बैकग्राउंड में होता है तो यह हमारी धारणाओं में परिलक्षित होगा।

**Unit :-4.3 Memory :- Types and strategies to enhance memory of children (स्मृति :- बच्चों की याददाश्त बढ़ाने के प्रकार और रणनीतियाँ) :-**

**स्मृति का अर्थ :-** स्मृति एक मानसिक क्रिया है। इसकी सहायता से हम गत अनुभवों को जो कि मानसिक संस्कार के रूप में हमारे अचेतन मन में विद्यमान रहते हैं, अपनी वर्तमान चेतना में लाते हैं। हमारे व्यावहारिक जीवन में अनेक प्रकार की घटनाएँ घटित होती रहती हैं या हम किसी स्थान या वस्तु को देखते हैं तो उनसे कुछ अनुभव प्राप्त होते हैं जो कि सदा चेतन मन में नहीं रहते किन्तु अचेतन मन में बने रहते हैं। इन अनुभवों की छाप मस्तिष्क में अंकित हो जाती है। अचेतन मन में संचित इन्हीं अनुभवों के चेतन मन में आने की क्रिया को स्मृति कहते हैं।

**उदाहरणार्थ –** आगरा के विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों में ताजमहल विशेष रूप से दर्शनीय है। इसे मैंने वर्षों पूर्व देखा था। उसे प्रत्यक्ष देखकर मस्तिष्क में जो प्रतिमा अंकित हो गई है, वह मेरे अचेतन स्तर पर थी। आज छोटी बहन के सामने ताजमहल का वर्णन करने में पूर्व अनुभव जो अचेतन स्तर पर संचित थे, चेतन मन में आ गये। यही स्मृति है।

**स्मृति की परिभाषा :-** स्मृति की परिभाषा मनोवैज्ञानिकों ने स्मरण को भिन्न भिन्न ढंग से परिभाषित किया है।

**हिलगार्ड तथा एटकिन्स के अनुसार –** “पूर्ववत् सीखी गयी प्रतिक्रियाओं को वर्तमान समय में व्यक्त करना ही स्मरण है।”

**मैकडूगल –** “स्मृति का तात्पर्य भूतकालीन घटनाओं के अनुभवों की कल्पना करना एवं पहचान लेना है कि वे स्वयं के ही भूतकालीन अनुभव हैं।”

**डॉ. एस.एन. शर्मा ने विलियम जेम्स की परिभाषा को इस प्रकार परिभाषित किया है** “स्मरण किसी घटना अथवा तथ्य का ज्ञान है जिसके अतिरिक्त किसी अन्य चेतना के बारे में विचार नहीं कर रहे हैं, जैसाकि हम पहले विचार अथवा अनुभव कर सके हैं।”

**वुडवर्थ के अनुसार,** “पूर्व में एक बार सीखी गयी क्रिया का पुनः स्मरण ही स्मृति है।”

**लेहमैन, लेहमैन एवं बटरफिल्ड के अनुसार** विशेष कालावधि के लिये सूचनाओं को संपोषित रखना ही स्मृति है।

स्मृति के अंग या स्मरण की प्रक्रिया या तत्त्व (Parts of Memory or Process of Remembering) स्मृति एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है। वुडवर्थ के अनुसार स्मृति प्रक्रिया के निम्नलिखित चार अंग होते हैं :

- 1 सीखना (Learning)
- 2 धारणा (Retention)
- 3 पुनः स्मरण (Recall)
- 4 पहचान (Recognition)

**1. सीखना (Learning)** किसी विषय – वस्तु को स्मरण करने के लिये सर्वप्रथम उसे सीखना पड़ता है। इसलिये सीखने को स्मृति का पहला अंग कहा जाता है। बिना सीखे किसी भी विषय – वस्तु का स्मरण करना तथा बिना स्मरण के सीखना भी सम्भव नहीं है। सीखने की प्रक्रिया के सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा पूर्व में की जा चुकी है।

**2. उत्तम धारणा शक्ति (Good retention)** यदि कोई बालक सीखी या याद की हुई बातों को अधिक दिनों तक स्मरण रख सकता है तो उसकी स्मृति अधिक स्थायी होती है। यह अच्छी स्मृति की विशेषताएँ हैं।

इस सम्बन्ध में जेम्स ने लिखा है, “ मनुष्य की सामान्य धारणा शक्ति को परिष्कृत करने में संस्कृति का योग नहीं होता। यह तो शरीर का शास्त्रीय गुण है, जो एक बार ही व्यक्ति को उसके शरीर के साथ मिलता है और जिसे परिवर्तित करने की कोई आशा नहीं होती। ”

अतः धारणा शक्ति को प्रभावशाली बनाने के लिये मस्तिष्क, स्वास्थ्य, रुचि, विचार एवं तर्क के साथ सीखने का विषय एवं विधि आदि का सही सहयोग प्राप्त करना आवश्यक होता है।

**3. पुनः स्मरण (Recall) :-** पुनः स्मरण स्मृति का तीसरा अंग है। पुनः स्मरण गत अनुभवों अथवा अधिगम को वर्तमान में पुनः उत्पादन करने से है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि पूर्व अनुभवों अथवा सीखी गयी बातों को अचेतन मन से चेतन मन में लाना ही पुनः स्मरण है। यह स्वाभाविक है कि किसी भी क्रिया को सीखने के पश्चात् हम उसे पूर्व अनुभव बनाकर अचेतन मन में स्थापित कर देते हैं। जब हमें भविष्य में उसकी आवश्यकता होती है तो चेतन में ले आते हैं और उसका लाभ उठाते हैं।

अतः शिक्षा के क्षेत्र में पुनः स्मरण स्वतः ही होना चाहिए न कि किसी दबाव में आकर। जब हम किसी भय, दबाव या चिन्ता में आकर किसी ज्ञान को धारण करते हैं तो पुनः स्मरण करने में असमर्थ हो जाते हैं।

**4. पहचान (Recognition)** स्मृति का चौथा अंग पहचानना है। पहचान से तात्पर्य उस विषयवस्तु को ठीक – ठीक ढंग से जानने से है, जिसे पूर्व समय में धारण किया गया है। अतः अच्छी स्मृति वही मानी जाती है, जिसमें सही ज्ञान का स्मरण किया गया हो य जैसे – हम मंजूरी गये थे। वहाँ के सभी अनुभव यदि हम आज भी दोहरा लेते हैं और वे सही निकलते हैं तो इसे पहचानना कहते हैं।

स्मृति के विभिन्न प्रक्रमों की क्रियाविधि क्या है? स्मृति की उपरोक्त प्रक्रमों को समझाने के लिए 1968 में एटकिंसन तथा सिफ्रिन ने स्मृति की बहुस्तरीय संग्रहण की व्याख्या प्रस्तुत की। इस परिभाषा के अनुसार स्मृति के तीन मुख्य संग्रह होते हैं।

**संवेदी स्तर स्मृति :-** हमारी ज्ञानेन्द्रियां (संवेदी अंग) किसी भी सूचना को वातावरण से ग्रहण करके उसे मस्तिष्क तक पहुंचाने का कार्य करती हैं। बाद में उस सूचना के आधार पर मस्तिष्क द्वारा एक निष्कर्ष निकाला जाता है। हम देखने, सुनने या त्वचा द्वारा शीत या गर्मी की अनुभूति का उदाहरण ले सकते हैं। कोई भी वातावरणीय उद्दीपन जैसे प्रकाश या ध्वनि सबसे पहले अपने संबंधित ज्ञानेन्द्रिय में बहुत ही कम समय के लिए कूटबद्ध रूप में संग्रहित होता है। यह संग्रहण अत्यल्प समय के लिए होता है। दृष्टि के लिए इसकी सीमा 0.5 सेकेंड और श्रवण के लिए इसकी समय सीमा 2 सेकेंड के आसपास होती है। इस समय सीमा के पश्चात् इस संग्रहित स्मृति का क्षय हो जाता है। ऐंद्रिक स्तर पर सूचनाएं अभी प्रारंभिक होती हैं और इनसे कोई निष्कर्ष नहीं निकाल सकते। इनका मस्तिष्क द्वारा संयोजन तथा परिमार्जन अभी बाकी होता है।

**अल्पकालीन स्मृति :-** ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त सूचनाएं जब हमारे ध्यान में आती हैं तो वे अल्पकालीन स्मृति का भाग बनती हैं। यहां उल्लेखनीय है कि संवेदी स्तर की वे सभी सूचनाएं जिन पर हम ध्यान नहीं देते वे समाप्त हो जाती हैं। केवल वहीं सूचनाएं जिन पर हम एकाग्र होते हैं वे अल्पकालीन स्मृतियां बनती हैं। अल्पकालीन स्मृति को क्रियात्मक स्मृति भी कहा जाता है। इस प्रकार की स्मृति का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हमारे द्वारा कोई फोन नंबर याद करना है। जब हम किसी नंबर को देख कर उसे डायल करते हैं तो दो बातें होती हैं। सबसे पहले हम नंबर को देखते हैं और उसे कुछ एक बार दोहरा के याद करते हैं फिर नंबर डायल करने के बाद सामान्यतः उसे भूल जाते हैं। अतः इस प्रकार की स्मृति के संबंध में दो निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। प्रथम, अल्पकालीन स्मृति की क्षमता बहुत कम होती है (सामान्यतः इसका मान 72 होता है,

अर्थात् हम 5 से 9 अंको तक की कोई संख्या आसानी से याद कर सकते हैं। यदि हमें 14 अंको की कोई संख्या याद करनी हो तो इसे दो के जोड़े में बदल कर याद करते हैं।) द्वितीय, इस प्रकार की स्मृति में अगर एकाग्रता में थोड़ी भी कमी से हमारा ध्यान बंट जाए तो स्मृति शेष नहीं रह जाती। फोन वाले उदाहरण में अगर नंबर याद करने और डायल करने के बीच में कोई दूसरी बात हो जाए तो हमें नंबर याद नहीं रहेगा। वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि इस प्रकार की स्मृति में सूचना का कुल संग्रहण 20 से 30 सेकेंड तक ही होता है। लेकिन अगर सूचना को दोहराया जाए तो यह समय 20 से 30 सेकेंड से अधिक भी हो सकता है। और अगर बार-बार ध्यान से दोहराएं तो यह सूचना दीर्घकालीन स्मृति में परिवर्तित हो जाती है।

**दीर्घकालीन स्मृति :-** जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है दीर्घकालीन स्मृतियां स्थाई होती हैं। हम इस स्मृति का उपयोग बहुत तरीको से करते हैं। आज सुबह हमने नाश्ते में क्या खाया? परसों हमारे घर कौन-कौन मिलने आया था? उन लोगों ने कौन से कपड़े पहन रखे थे? हमने अपना पिछला जन्मदिन कहां और कैसे मनाया था? हम साइकिल कैसे चला लेते हैं से लेकर वर्ग पहेली हल करने तक, इन सारी गतिविधियों में हमारी यह स्मृति हमारा साथ देती है। इस प्रकार की स्मृति सबसे अधिक विविध होती है और हमारी भावनाओं, अनुभवों तथा ज्ञान इत्यादि इन सभी रूपों में परिलक्षित होती है। अल्पकालीन स्मृति की सूचनाएं बार-बार दुहराई जाने के बाद दीर्घकालीन स्मृति बन जाती हैं। इस स्मृति का क्षय नहीं होता लेकिन इसमें परिवर्तन हो सकता है।

**Problem solving (समस्या को सुलझाना) :-**

**स्किनर (1968)** – समस्या समाधान उन कठिनाइयों पर काबू पाने की एक प्रक्रिया है जो एक लक्ष्य की प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करती प्रतीत होती हैं। यह हस्तक्षेपों के बावजूद समायोजन करने की एक प्रक्रिया है।

**वुडवर्थ (1948)** – समस्या समाधान व्यवहार कठिन परिस्थितियों में होता है जिसमें बहुत समान परिस्थितियों में पिछले अनुभव से प्राप्त अवधारणाओं और सिद्धांतों को लागू करने के अभ्यस्त तरीकों से समाधान प्राप्त नहीं होता है।

**प्रभावी समस्या-समाधान व्यवहार में कदम :-**

- 1.समस्या जागरूकता ।
2. समस्या-समझ ।
- 3- प्रासंगिक जानकारी का संग्रह ।
4. संभावित धारणाओं के लिए परिकल्पना या झुकाव का निर्माण ।
5. सही समाधान का चयन ।
6. निष्कर्षित अनुमान या परिकल्पना का सत्यापन ।

**Unit :- 4.4 Intelligence; definition, meaning and significance of IQ, Gardner's theory of Multiple Intelligence (बुद्धि :- अर्थ, परिभाषा ,महत्त्व || गार्डनर का बहुबुद्धि का सिद्धांत)**

**बुद्धि का अर्थ :-** बुद्धि एक ऐसा शब्द है, जिसका प्रयोग हम अपने आम जीवन की दिनचर्या में करते हैं। लेकिन जितना हम अपने जीवन में बुद्धि के अर्थ को समझते हैं, बाल विकास, शिक्षाशास्त्र और मनोवैज्ञानिक में इसका अर्थ और महत्त्व कहीं ज्यादा है। बुद्धि अंग्रेजी शब्द Intelligence का हिन्दी वर्जन है। पदजमससपहमदबम लैटिन भाषा का शब्द है जो कि लैटिन

भाषा के दो शब्दों पदजमत एवं सममतम से मिलकर बना है। बुद्धि के अर्थ के बारे में मनोवैज्ञानिकों के बीच मतभेद है, जिससे बुद्धि के किसी एक अर्थ में सहमति नहीं है। बुद्धि का सरल शब्दों में अर्थ है किट्टु किसी कार्य, स्थिति में उपलब्ध सभी विकल्पों में से सबसे ज्यादा बेहतर और अनुकूलित विकल्प का चुनाव करके अपने लक्ष्य को हासिल करना।

**बुद्धि की परिभाषाएँ :-** बुद्धि के अर्थ की तरह ही बुद्धि की परिभाषा में अनेक मनोवैज्ञानिकों ने अपने-अपने मत दिए हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि की परिभाषा को वातावरण के साथ समायोजन करने की क्षमता के आधार पर परिभाषित किया गया है। वहीं बहुत से मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि की परिभाषा को पर्यावरण के साथ समायोजन से न जोड़कर, बुद्धि को सीखने की क्षमता के रूप में और कुछ विद्वानों ने अमूर्त चिन्तन (मन में सोचना) करने की क्षमता के रूप में बुद्धि को परिभाषित किया है। लेकिन बहुत से मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि की परिभाषा को केवल एक चीज से न जोड़ने के बजाय संयुक्त रूप से जोड़कर परिभाषित किया है उनमें से कुछ महत्वपूर्ण बुद्धि की परिभाषाओं को नीचे दिया गया है –

**वुडवर्थ के अनुसार –** “ बुद्धि कार्य करने की एक विधि है । ”

**वुडरो के अनुसार –** “ बुद्धि ज्ञानार्जन की क्षमता है । ”

**बकिंघम के अनुसार –** “ सीखने की शक्ति ही बुद्धि है । ”

**“ गॉल्टन के अनुसार –** “ बुद्धि पहचानने और सीखने की शक्ति है । ”

**वेश्लर के अनुसार बुद्धि की परिभाषा :-** बुद्धि एक समुच्चय या सार्वजनिक क्षमता है, जिसके सहारे व्यक्ति उद्देश्यपूर्ण क्रिया करता है, विवेकशील चिन्तन करता है और वातावरण के साथ प्रभावकारी ढंग से समायोजन करता है।

**रॉबिन्सन के अनुसार बुद्धि की परिभाषा :-** बुद्धि से तात्पर्य संज्ञानात्मक व्यवहारों के सम्पूर्ण वर्ग से होता है, जो व्यक्ति में सूझ-बूझ द्वारा समस्या का समाधान करने की क्षमता, नयी परिस्थितियों के साथ समायोजन करने की क्षमता, अमूर्त रूप से सोचने की क्षमता और अनुभवों से लाभ उठाने की क्षमता को दिखलाता है।

**बुद्धि की विशेषताएँ एवं तथ्य :-** यहाँ पर बुद्धि की प्रमुख विशेषताओं के बारे में बताया गया है, जो कि निम्नलिखित हैं –

- बुद्धि मनुष्य की कई विशेषताओं और क्षमताओं को दर्शाता है।
- बुद्धि के सहारे ही व्यक्ति किसी समस्या के समाधान तक पहुँचता या पहुँचने का प्रयास करता है।
- बुद्धि व्यक्ति को वातावरण के समायोजन करने में मदद करती है।
- बुद्धि के सहारे ही व्यक्ति अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए उसके अनुरूप कार्य करता है, और निर्णय लेता है।
- बुद्धि से व्यक्ति को विवेकशील चिन्तन तथा अमूर्त चिन्तन करने में भी मदद मिलती है।
- बुद्धि व्यक्ति को विभिन्न प्रकार की बातों को सीखने में सहायता प्रदान करती है।
- मनुष्य की बुद्धि पर उसके आस-पास के वातावरण का अनुकूल और प्रतिकूल दोनों प्रभाव पड़ता है।

**बुद्धि के प्रकार :-** थॉर्नडाइक एवं गैरेट ने बुद्धि को तीन प्रकार में बाँटा है जो कि निम्नलिखित हैं –

1. **अमूर्त बुद्धि** :- अमूर्त बुद्धि व्यक्ति की ऐसी बौद्धिक योग्यता जिसकी मदद से गणित, शाब्दिक, या सांकेतिक समस्याओं का समाधान किया जाता है। अमूर्त बुद्धि का प्रयोग करके हम पढ़ने, लिखने एवं तार्किक प्रश्नों में करते हैं। कवि, साहित्यकार, चित्रकार आदि लोग अमूर्त बुद्धि से ही अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं।

2. **मूर्त या स्थूल बुद्धि** :- मूर्त या स्थूल बुद्धि के द्वारा व्यक्ति विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का व्यावहारिक एवं उत्तम प्रयोग करने की क्षमता अर्जित करता है। मूर्त बुद्धि को व्यावहारिक यान्त्रिक बुद्धि भी कहा जाता है। हम अपने दैनिक जीवन के ज्यादातर कार्य मूर्त बुद्धि की ही सहायता से करते हैं।

3. **सामाजिक बुद्धि** :- सामाजिक बुद्धि से तात्पर्य उन बौद्धिक योग्यताओं से जिसका उपयोग कर व्यक्ति सामाजिक परिवेश के साथ समायोजन स्थापित करने में करता है।

## बहु-बुद्धि का सिद्धांत (GARDNER THEORY OF MULTIPLE INTELLIGENCE)

प्रतिपादक— हावर्ड गार्डनर

प्रतिपादन— 1983

हावर्ड गार्डनर के अनुसार "बुद्धि का कोई एक तत्व नहीं होता है"

बहु-बुद्धि का सिद्धांत हावर्ड गार्डनर (Howard Gardner) द्वारा प्रस्तुत किया गया। उनके अनुसार, बुद्धि कोई एक तत्व नहीं है बल्कि कई भिन्न-भिन्न प्रकार की बुद्धियों का अस्तित्व होता है। प्रत्येक बुद्धि एक दूसरे से स्वतंत्रा रहकर कार्य करती है। हावर्ड गार्डनर ने 1983 में हावर्ड गार्डनर ने इसे 7 भागों में बांटा था बाद में से संशोधित करके 8 भागों में बांटा था। गार्डनर में अपनी पुस्तक "फ्रेम्स ऑफ माइंड: द थ्योरी ऑफ मल्टीपल इंटेलीजेंस" ने इसे काफी अच्छे से विस्तार पूर्वक बताया है

बुद्धि के 8 भाग निम्न है

1. भाषागत

2. तार्किक गणितीय

3. देशिक

4. संगीत आत्मक

5. शारीरिक गति संवेदी

6. अंतर वैयक्तिक

7. अंतः व्यक्ति

8. प्रकृति वादी

1. **शारीरिक गति संवेदी (Body Kinaesthetic intelligence)** :- संपूर्ण शरीर अथवा किसी अंग को लचीला बनाता प्रयोग करना पेशीय कौशल का उपयोग करना शारीरिक गतिविधि योग्यता के अंतर्गत आता है उदाहरण— खिलाड़ी, जातक, जिमनास्टिक, शल्य चिकित्सा, धावक आदि

**2. अंतर व्यक्तित्व बुद्धि (Interpersonal intelligence) :-** बुद्धि के व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों की इच्छाओं प्रेरणा तथा आवश्यकताओं को समझते हैं दूसरे व्यक्तियों की सुख में व्यवहार के प्रति संवेदनशील होते हैं। उदाहरण— मनोवैज्ञानिक, सामाजिक कार्यकर्ता, धार्मिक नेता, परामर्श देने वाला आदि

**3. अंतःव्यक्ति (Interpersonal) :-** ऐसे व्यक्ति गहरी सोच रखते हैं अपनी निजी भावना अभिप्रेरणा तथा इच्छाओं को जानकर उस ज्ञान को दूसरे व्यक्तियों के साथ अंतः क्रिया में कर सकते हैं। उदाहरण— दार्शनिक, साइकाइट्रिक, डिजाइनर, प्लानर

**4. भाषागत (linguistic) :-** ऐसे व्यक्तियों को भाषाओं तथा शब्दों का बहुत ज्ञान होता है इन्हें भाषाओं को सीखना तथा अन्य शब्दों का प्रयोग करना बहुत अच्छी तरह आता है यह शब्दों के संबंधों को बहुत गहराई से समझते हैं। उदाहरण— कवि, लेखक आदि

**5. गणितीय (logical mathematical) :-** ऐसे व्यक्तियों में तर्क करने की क्षमता समस्या समाधान क्षमता वैज्ञानिक चिंतन आदि गुण होते हैं वैज्ञानिकों तथा नोबेल पुरस्कार वालों ने ऐसी बुद्धि होती है। उदाहरण— मैथमेटिशियन, फाइनेंसर

**6. देशिक (visual) :-** ऐसे व्यक्ति वस्तु और स्थानिक आयामों को याद रखने की क्षमता रखने वाले होते हैं यह व्यक्ति सरलता से देश सूचना को अपने मस्तिष्क में रख सकते हैं। उदाहरण— विमान चालक, चित्रकार, नविक, मूर्तिकार, साज-सज्जा विशेषज्ञ आदि

**7. संगीतात्मक (Musical intelligence) :-** इन व्यक्तियों का झुकाव संगीत में होता है और इन्हें ले सुर ताल आदि का बहुत अच्छा ज्ञान होता है इनमें संगीत का सही उपयोग करने की क्षमता होती है। उदाहरण— म्यूजिक कंपोजर, गायककार

**8. प्रकृतिवादी (Naturalelastic intelligence) :-** इस बुद्धि वाले व्यक्ति की प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता होती है इन्हें प्रकृति के साथ रहना पेड़ पौधे जानवरों की देखरेख करने में अधिक रुचि होती है। उदाहरण— वेटरनरी डॉक्टर, वनस्पति, वातावरण विशेषज्ञ आदि।

**Unit :- 4.5 Motivation:- intrinsic, extrinsic, factors affecting motivation (प्रेरणा :- आंतरिक, बाहरी, प्रेरणा को प्रभावित करने वाले कारक) :-** अभिप्रेरणा का अंग्रेजी अनुवाद है 'मोटिवेशन'। जिसका अर्थ है, किसी कार्य को करने हेतु आंतरिक रूप से प्रेरित करना। अभिप्रेरणा एक ऊर्जा का नाम है जो मनुष्य के व्यवहार का निर्माण कर उसको स्थिरता प्रदान करने का कार्य करती है। हम देखते हैं कि अगर कोई व्यक्ति अपने पसंद या रुचि से संबंधित कोई कार्य करता है तो उस कार्य को करने में उसे आनंद आता है, इअर्थात वह रुचि या कार्य उसे उस कार्य को करने हेतु प्रेरित करते हैं। यह तत्व ही अभिप्रेरणा के प्रेरक का कार्य करते हैं। इसी तरह प्रत्येक क्षेत्र में ऐसे कई प्रेरक होते हैं जैसे दृ अध्यापक, आवश्यकता, रुचि आदि। जो व्यक्ति को अभिप्रेरित करते हैं। यह उस व्यक्ति को उस कार्य को करने हेतु एक ऊर्जा प्रदान करती है।

### अभिप्रेरणा की परिभाषा | Definition of Motivation

**1) वुडवर्थ के अनुसार** —“यह व्यक्ति की एक अवस्था है जो उसे किसी निश्चित व्यवहार एवं निश्चित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए बाध्य करती है।”

**2) लावेल के अनुसार** —“अभिप्रेरणा को अधिक औपचारिक रूप से मनोशारीरिक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो किसी आवश्यकता के द्वारा प्रारंभ होती है और उस क्रिया को जन्म देती है। जिसके द्वारा उस आवश्यकता को पूरा होना होता है।”

3) गिल्फोर्ड के अनुसार –“एक प्रेरक कोई विशेष आंतरिक कारक अथवा अवस्था है जो क्रिया को जन्म देता है और उसे बनाये रखता है।

4) मैक्डूगल के अनुसार –“अभिप्रेरणाए मनुष्य के भीतर की ऐसी शारिरिक और मानसिक अवस्थाएं हैं, जो किन्ही विशेष दशाओं में कार्य करने हेतु प्रेरित करती हैं।

### अभिप्रेरणा के स्रोत Source of Motivation

● **उद्दीपन Incentive** – व्यक्ति की आवश्यकता की पूर्ति जिन-जिन वस्तुओं से होती है। उन सभी को मनोविज्ञान में उद्दीपन कहा जाता है। जैसे- भूख लगने में भोजन की आवश्यकता। मनोविज्ञान के अनुसार व्यक्ति उद्दीपन के होने से ही अनुक्रिया करता है। इसे SR जैमवतल भी कहा जाता है।

● **आवश्यकताए Needs** – मनुष्य को जीवन-यापन करने हेतु अनेक साधनों एवं वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है और वह व्यक्ति इन समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विभिन्न कार्य एवं प्रयास करता है। यह सभी आवश्यकताओं का एहसास उसमें ऊर्जा पैदा करती है।

● **चालक Driver** – चालक उस वस्तु का नाम है, जिसे प्राप्त कर लेने से व्यक्ति की आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है, अर्थात् भोजन मिलने से उसकी भूख शांत हो जाती है या प्यास लगने पर पानी मिल जाना।

● **प्रेरक Motive** – प्रेरक के अंतर्गत उन सभी तत्वों को सम्मिलित किया जाता है जो व्यक्ति को किसी कार्य को करने एवं उस कार्य को लगातार करते रहने में उसकी सहायता करता है।

### अभिप्रेरणा की विशेषता | Characteristics of Motivation

- 1) अभिप्रेरणा एक ऊर्जा है जो व्यक्ति को आंतरिक रूप से प्रेरित करने का कार्य करती है।
- 2) यह नकारात्मक (Negative) और सकारात्मक (Positive) दोनों रूपों में पाई जाती है।
- 3) इसका प्रयोग किसी निश्चित उद्देश्य एवं लक्ष्य की प्राप्ति हेतु किया जाता है।
- 4) यह एक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति को विभिन्न चरणों से गुजरना होता है।
- 5) मनोविज्ञान में इसको उद्दीपन-अनुक्रिया के रूप में भी परिभाषित किया गया है।
- 6) इसका उपयोग कार्य को सुचारु रूप से करने एवं उस कार्य में स्थिरता प्रदान करने हेतु किया जाता है।
- 7) इसका विश्लेषण मनोवैज्ञानिक आधार पर किया जाता है।

प्रेरणा को दो अलग सिद्धांत में विभाजित किया जा सकता है- आंतरिक प्रेरणा और बह्य प्रेरणा।

**आंतरिक प्रेरणा :** = आंतरिक प्रेरणा का अध्ययन १९७० के दशक से किया गया है। आंतरिक प्रेरणा का निरीक्षण करने और ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक क्षमता का विश्लेषण करने, नई चीजों और नई चुनौतियों के बाहर की तलाश करने के लिए स्वयं की इच्छा है। यह ब्लिंक बाहरी दबाव या इनाम के लिए एक इच्छा पर निर्भर से व्यक्ति के भीतर काम करना अपने आप में एक ब्याज या भोग के द्वारा संचालित है, और मौजूद है। आंतरिक प्रेरणा की घटना पहले पशुओं के व्यवहार का प्रायोगिक अध्ययन के भीतर स्वीकार किया गया था। आंतरिक प्रेरणा एक प्रकृतिक प्रेरक प्रवृत्ति है और संज्ञानात्मक, सामाजिक और शारीरिक विकास में एक महत्वपूर्ण तत्व है। आंतरिक रूप से प्रेरित हुए छात्रों की ही क्षमताओं में वृद्धि होगी, जो अपने कौशल में सुधार करने के लिए काम स्वेच्छा के साथ ही काम में संलग्न होने की संभावना है।

**बह्य प्रेरणा :** = बह्य प्रेरणा एक वांछित परिणाम प्राप्त करने के क्रम में एक गतिविधि का प्रदर्शन करने के लिए संदर्भित करता है और यह आंतरिक प्रेरणा के विपरीत है। बह्य प्रेरणा व्यक्ति के बाहर के प्रभावों से आता है। बह्य प्रेरणा में इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है कि, लोगों को प्रेरणा कहाँ से मिलती है अपने कामों को दृढ़ता के साथ जारी रखने के लिए? आम तौर पर जो परिणाम आंतरिक प्रेरणा से प्राप्त नहीं होता, उसे प्राप्त करने के लिए व्यक्ति बह्य प्रेरणा का प्रयोग करता है। आम बह्य मंशा पुरस्कार है जैसे पैसे या अच्छे अंक, वांछित व्यवहार दिखाने के लिए और सजा का खतरा निम्नलिखित दुर्व्यवहार के लिए है। प्रतियोगिता एक बह्य प्रेरक है क्योंकि वह जीतने के लिए और दूसरों को हराने के लिए कलाकारको प्रोत्साहित करती है ना की बस गतिविधि के आंतरिक पुरस्कार का आनंद लें।

सामाजिक मनोवैज्ञानिक अनुसंधान ने यह संकेत दिया है कि बह्य पुरस्कार अतिऔचित्य करने के लिए नेतृत्व कर सकता है और आंतरिक प्रेरणा में एक कमी पैदा कर सकता है। उदाहरण के लिए – एक उत्साही भीड़ और एक ट्रॉफी जीतने की इच्छा भी बाह्य प्रोत्साहन कर रहे हैं।

**अभिप्रेरणा को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक का उल्लेख निम्नलिखित है –**

1. प्रोत्साहन—छात्रों के व्यवहार को उत्तेजित एवं निर्देशित करने के लिए प्रोत्साहन का विशेष महत्त्व होता है। प्रशंसा व निन्दा, प्रोत्साहन के अन्तर्गत प्रयुक्त किये जाने वाले प्रमुख कारक होते हैं। इनके माध्यम से बालकों को वांछित लक्ष्य की दिशा में प्रोत्साहित किया जा सकता है। छात्रों के शैक्षणिक निष्पत्ति अधिगम या व्यवहार परिवर्तनों पर इन कारकों का समुचित प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त बालकों के गृहकार्य का सही मूल्यांकन, उनमें प्रतियोगिता की भावना का विकास अथवा अपेक्षा के अनुरूप उपलब्धि आदि भी प्रोत्साहन सम्बन्धी अभिप्रेरकों में शामिल किये जाते हैं। प्रोत्साहन एक प्रकार से वह लक्ष्य होता है, जिसकी दिशा में बालक का अग्रसरित होना होता है। यह लक्ष्य जब बालक को सतत् रूप से गति प्रदान करने में सहायक होता है तो इसे प्रोत्साहन की संज्ञा दी जाती है।

2. जागरूकता—शिक्षार्थियों को सुनिर्धारित व्यवहार की दिशा में अग्रसर करने के लिये जागरूकता महत्त्वपूर्ण कार्य करता है। छात्रों में जागरूकता होने पर वे शिक्षण—अधिगम की प्रक्रिया में अबाध गति से भाग ले सकते हैं। बालकों के विकास एवं शैक्षणिक उपलब्धियों को भी जागरूकता प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। शिक्षार्थी इस स्थिति में सावधान रहकर लगातार सक्रिय रहता है, जिससे उसके विकास की संभावनाओं में वृद्धि होती है। जागरूकता के तीन स्तर होते हैं (i) उच्च स्तर की जागरूकता, (ii) मध्यम स्तर की जागरूकता, (iii) निम्न स्तर की जागरूकता।

3. आकांक्षा—शिक्षार्थियों की कोई भी क्रिया उद्देश्यहीन नहीं होती। उद्देश्य की दिशा में छात्रों के व्यवहार का स्वरूप, योग्यता तथा ज्ञानार्जन पर आधारित होता है। निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने की समस्त छात्रों की गति अलग—अलग होती है, क्योंकि उनकी आकांक्षा अलग—अलग होती है। जिस बालक में जितनी उच्चाकांक्षा होगी, वह उतनी ही शीघ्र अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करेगा। जागरूकता पर आकांक्षा, अवधान, रुचि, गति आदि का परोक्ष प्रभाव पड़ता है। आकांक्षा को विभिन्न प्रेरकों के द्वारा सबल बनाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त लक्ष्य की स्पष्टता, बालक की योग्यता, क्षमता तथा प्रगति के लगातार वस्तुनिष्ठ ज्ञान से भी आकांक्षा उत्पन्न होती है।

4. दण्ड—शिक्षार्थियों द्वारा असामाजिक व्यवहार करने तथा अनुशासनहीनता की स्थिति में उन्हें दण्डित किया जाता है। ऐसी स्थिति में दण्ड का प्रयोग अत्यन्त प्रभावी सिद्ध होता है, क्योंकि कष्ट से बचने या दर्द की अनुभूति से बचने के लिये छात्र वांछनीय व्यवहार की दशा में अग्रसरित होने लगता है। शिक्षार्थियों को मात्र असामाजिक व्यवहार करने पर, उचित समय पर, उचित मात्रा में दण्ड देना चाहिये। दण्ड देते समय उनकी आयु, बुद्धि एवं संवेगों को भी ध्यान में रखना चाहिये। दण्ड देते समय शिक्षक को निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिये—

(i) अवांछनीय अथवा असामाजिक व्यवहार करने पर ही छात्रों को दण्ड देना चाहिये, अन्यथा उनमें कुण्ठा, तनाव, भय विकसित हो जायेगा।

(ii) शिक्षार्थियों के असामाजिक व्यवहार की निन्दा तथा अच्छे व्यवहार की प्रशंसा करनी चाहिये।

(iii) दण्ड देते समय, बालकों को दण्ड देने के कारण भी बताने चाहिये।

(iv) दण्ड तत्काल तथा दूसरों के सामने देना चाहिये।

5. आवश्यकतायें—आवश्यकता को आविष्कार की जननी माना जाता है, व्यक्ति कोई भी कार्य आवश्यकता के कारण ही करता है। यही प्रवृत्ति बालक में होती है। अतः शिक्षक का यह कर्तव्य है कि वह छात्रों को पाठ्य-वस्तु की आवश्यकता का अनुभव कराये।

6. संवेगात्मक स्थिति—संवेगात्मक स्थिति भी अभिप्रेरणा को प्रभावित करती है। इसलिए शिक्षक के लिये यह नितान्त आवश्यक है कि वह छात्रों की संवेगात्मक स्थिति का पूर्णरूप से ध्यान रखे तथा शिक्षक को इस बात को भी ध्यान में रखना चाहिये कि वह जो भी ज्ञान छात्रों को प्रदान कर रहा है, उस ज्ञान के प्रति घृणा न हो, क्योंकि अधिगमित ज्ञान के साथ छात्र का संवेगात्मक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। ज्ञान के साथ संवेगात्मक सम्बन्ध स्थापित हो जाने पर छात्र सहजता से प्रेरणा प्राप्त कर सकता है।

7. प्रगति का ज्ञान—प्रगति का ज्ञान भी छात्रों को अभिप्रेरित करने में सहायक होता है, इसलिये समय-समय पर उन्हें उनकी प्रगति से अवगत कराना चाहिये जिससे छात्र सक्रिय होकर अधिकाधिक ज्ञान प्राप्त कर सकें।

8. प्रतियोगितादृष्टात्रों में सामान्यतः प्रतियोगिता व प्रतिस्पर्धा की भावना पाई जाती है। अतः शिक्षक बालकों को प्रतियोगिता के द्वारा नवीन ज्ञानार्जन की प्रेरणा प्रदान कर सकता है।

## Unit :- 5. Classroom Management (कक्षा प्रबंधन)

**Unit :- 5.1 Stimulating learning environment, physical and emotional (सीखने के माहौल को उत्तेजित करना, शारीरिक और भावनात्मक) :-** सीखने की प्रक्रिया में छात्रों को शामिल करने और उनके शैक्षिक अनुभव को बढ़ाने के मामले में एक उत्तेजक कक्षा के माहौल में लाभ होता है।

**कक्षा उत्तेजना लाभ (Classroom Stimulation Benefits) :-** छात्रों के लिए सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रहना मुश्किल होता है जब सामग्री रुचिकर नहीं होती है, अप्रासंगिक लगती है, या नट वर्कशीट भरने के अनगिनत घंटे की आवश्यकता होती है। एक उत्तेजक कक्षा में, छात्र घूमने-फिरने, ज्ञान प्राप्त करने के नए तरीके सीखने में सक्षम होते हैं, और अपने आस-पास की हर चीज पर सवाल उठाने के लिए विवश होते हैं। इस वजह से, उनके लिए सीखने की प्रक्रिया में शामिल होना आसान हो जाता है। एसईएन कक्षाओं को पारंपरिक व्यवस्थाओं की तुलना में विचारों के एक व्यापक स्पेक्ट्रम में योजना बनाने की आवश्यकता होती है। इस विशेषज्ञ क्षेत्र में हमारी लगातार बढ़ती विशेषज्ञता ने हमें इन विचारों और जरूरतों को चार प्रमुख क्षेत्रों में तोड़ने के लिए प्रेरित किया है:-

**संज्ञान और सीखना :-** कुछ विकलांग बच्चों को अमूर्त विचारों और अवधारणाओं के विकास का समर्थन करने के लिए व्यावहारिक संवेदी या शारीरिक अनुभवों की आवश्यकता हो सकती है।

**व्यवहारिक, भावनात्मक और सामाजिक :-** जिन बच्चों की ये जरूरतें हैं, उन्हें अधिक संरचित सीखने के माहौल की आवश्यकता हो सकती है, प्रत्येक गतिविधि के लिए स्पष्ट सीमाएँ और घूमने के लिए अतिरिक्त स्थान। यह अपने और दूसरों के बीच एक आरामदायक दूरी सुनिश्चित करता है, साथ ही एक सुरक्षित स्थान शांत हो जाता है।

**संचार और बातचीत :-** यहां, कम स्तर की व्याकुलता के साथ आसानी से समझे जाने वाले वातावरण की आवश्यकता है। चिंता के स्तर को कम करने के लिए संवेदी उत्तेजना को शामिल किया जाना चाहिए। इन विचारों वाले बच्चे भी शांत रहने के लिए सुरक्षित स्थान पर जाने से लाभान्वित हो सकते हैं।

**संवेदी या शारीरिक अक्षमता वाले बच्चों के लिए :-** संवेदी या शारीरिक कक्षाओं में ध्वनिक और प्रकाश व्यवस्था की स्थिति पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता हो सकती है, विशेषज्ञ सहायता, उपकरण या फर्नीचर के अलावा, कुछ अतिरिक्त स्थान और अतिरिक्त साइडपोस्टिंग की आवश्यकता हो सकती है। यह विद्यार्थियों को बिना सहायता प्राप्त और स्वतंत्र रूप से महत्वपूर्ण विचार के लिए अपने पर्यावरण पर बातचीत करने में मदद करने के लिए तैयार है। विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं और विकलांग शिक्षार्थियों के लिए एक अनुकूलित वातावरण बनाते समय, ऐसे कई व्यावहारिक मुद्दे हैं जिन पर कुछ विचार करने की आवश्यकता है।

**संवेदी तत्व :-** एसईएन रिक्त स्थान में प्रकाश, ध्वनिकी, सामग्री और बनावट पर नियंत्रण आवश्यक हो सकता है।

**स्वास्थ्य और भलाई :-** उपयुक्त शौचालयों की नियुक्ति, स्वच्छता सुविधाओं के माध्यम की जरूरत है। इन सुविधाओं की आवृत्ति, स्थान और पहुंच पर अत्यधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

**सुरक्षा :-** आप एक अबाधित स्थान बनाना चाहते हैं जिसमें मूक के छात्र, या विकलांग लोग, जहां उपयुक्त हो, स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ सकें।

**आउटडोर तक पहुंच :-** जिन ग्राहकों के साथ हमने शिक्षा के स्थान पर भागीदारी की है, बाहरी शिक्षा और कक्षाओं पर जोर देते हुए क्या वह एसईएन के साथ विद्यार्थियों के लिए इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अनुकूलित कर सकते हैं। अक्सर, हमारे क्लासरूम में द्वि-गुना दरवाजे होते हैं, जो पहले से अधिक अनुकूलन के साथ-साथ नाइटडोर्स को अंदर लाने के लिए लचीलेपन की पेशकश करते हैं। छतरियों का उपयोग तत्वों से बचाने और बाहरी स्थानों के उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए किया जा सकता है। एसईएन कक्षा के अच्छे डिजाइन के माध्यम से एक सकारात्मक शिक्षण वातावरण बनाने पर ध्यान केंद्रित करना नितांत आवश्यक है। उपयोगकर्ताओं के दृष्टिकोण को समझना, स्थान का उपयोग, और एक बहु-संवेदी वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका यह सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण है कि डिजाइन उद्देश्य के लिए उपयुक्त है।

बहुसंवेदी पाठों के संपर्क में आने से सभी बच्चे लाभान्वित होते हैं उनमें वे भी शामिल हैं जिन्हें सीखने या ध्यान देने में कोई कठिनाई नहीं हो सकती है। चाहे सामान्य शिक्षा हो या विशेष शिक्षा, यदि किसी छात्र को एक से अधिक अर्थों का उपयोग करके कुछ सीखने का अवसर मिलता है, तो जानकारी एक यादगार प्रभाव डालने की संभावना है और वह आंतरिक हो गया। हालांकि, सीखने की अक्षमता और संज्ञानात्मक सीमाओं वाले छात्रों के लिए बहुसंवेदी शिक्षण विशेष रूप से सहायक हो सकता है, जिनके पास शिक्षा के एक या अधिक क्षेत्रों में अंतर हो सकता है। उदाहरण के लिए, एक विकलांग छात्र को दृश्य जानकारी संसाधित करने में परेशानी हो सकती है। यह उनके लिए केवल पढ़ने और दृश्य उत्तेजनाओं के माध्यम से जानकारी को सीखना और बनाए रखना चुनौतीपूर्ण बना सकता है। अन्य इंद्रियों का उपयोग करना, जैसे कि स्पर्श या मौखिक, ये बच्चे जो सीख रहे हैं उसके साथ एक मजबूत संबंध बना सकते हैं।

सीखने के वातावरण की भौतिक विशेषताएं महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक और व्यावहारिक परिणामों के साथ, शिक्षार्थियों को भावनात्मक रूप से प्रभावित कर सकती हैं। यद्यपि पर्यावरणीय उत्तेजनाओं के प्रति भावनात्मक प्रतिक्रियाएं व्यक्तियों और गतिविधियों में व्यापक रूप से भिन्न होती हैं, अधिकांश छात्रों को शायद ऐसी कक्षा में सीखना मुश्किल लगता है जो अत्यधिक गर्म होती है। इसके विपरीत, सकारात्मक भावनात्मक प्रतिक्रियाएं प्राप्त करने वाले वातावरण से न केवल सीखने में वृद्धि हो सकती है, बल्कि उस स्थान के लिए एक शक्तिशाली, भावनात्मक लगाव भी हो सकता है। यह एक ऐसा स्थान बन सकता है जहां छात्र सीखना पसंद करते हैं, एक ऐसा स्थान जहां वे सीखना चाहते हैं, और एक ऐसा स्थान जिसे वे अपने सीखने के अनुभवों पर प्रतिबिंबित करते समय प्यार से याद करते हैं। उच्च शिक्षा में, हम अपने छात्रों को

सीखने के लिए ऐसे स्थान प्रदान करने की आशा करते हैं, भले ही हम एक और बड़े व्याख्यान कक्ष का निर्माण करते हैं और अपने छात्रों को भीड़-भाड़ वाले, शोर-शराबे वाले और असुविधाजनक स्थानों में निचोड़ने का प्रयास करते हैं। शारीरिक विशेषताओं से सीखने में हस्तक्षेप करने की उम्मीद की जा सकती है: सकारात्मक भावनात्मक राज्यों का उत्पादन करने वाले वातावरण से सीखने की सुविधा और स्थान लगाव के विकास की उम्मीद की जा सकती है।

### **Unit :- 5.2 Common behaviour problems in children (बच्चों में सामान्य व्यवहार की समस्याएं) :-**

**व्यवहार :** व्यवहार हमारे क्रिया कलापों का अभाज्य अंग है । इसमें बाह्य क्रिया , चिन्तन , संवेग , समस्या समाधान के व्यवहारिक पहलू आदि समाहित है ।

**परिभाषा :** “ किसी उत्तेजना के प्रति मानसिक एवम् शारीरिक अनुक्रिया करना ही व्यवहार कहलाता है । यह व्यवहार आन्तरिक भी हो सकता है एवम् बाह्य भी अर्थात् कुछ व्यवहार को देखा जा सकता है , कुछ को नहीं ।

**व्यवहार के प्रकार :** व्यवहार मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं ।

1. कौशल व्यवहार .

2. समस्या व्यवहार

**1. कौशल व्यवहार :-** ऐसा व्यवहार जो सामाजिक रूप से बच्चों की आयु लिंग , देश काल एवम् वातावरण तथा समायोजन प्रक्रिया में सहायक हो उसे कौशल व्यवहार कहते हैं ।

**2.समस्या व्यवहार :-** समस्या व्यवहार वह व्यवहार है । जो कि व्यक्ति का उचित वातावरण के साथ उचित अभियोजन में बाधा उपस्थित करता है यह व्यक्ति को अपने जीवन को सुचारू रूप से चलाने में बाधा उपस्थित करता है उसे समस्या व्यवहार कहते हैं ।

**कौशल व्यवहार के प्रकार :**

1. गामक या प्रेरक कुशलताएँ

2. दैनिक जीवन के क्रिया कलाप

3. भाषा ज्ञान

4. पढ़ने लिखने की कुशलताएँ

5. अक तथा समय ज्ञान

6. घरेलू तथा सामाजिक कुशलताएँ

7. पूर्व व्यवसायिक कुशलताएँ

**समस्या व्यवहार के प्रकार :-**

समस्या व्यवहार मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है :

1. बाह्यमुख

2. अर्न्तमुख

1 **बाह्य मुख** :- बाह्य मुख का तात्पर्य वैसे समस्या व्यवहार से होता है जो कि स्वयं व्यक्ति को कम नुकसान पहुंचाता है लेकिन दूसरे लोगों को इससे काफी नुकसान सहन करना पड़ता है ।

1 . दूसरों के साथ दुर्व्यवहार दूसरों पर थूकना , दूसरों पर चीजें फेंकना आदि ।

2. विद्रोही व्यवहार – कहना ना मानना , उल्टा करना ।

3 . अति चंचलता अपेक्षित समय तक एक ही स्थान पर टिक कर न बैठना , काम को पूरा न करना ।

4 . उम्रविनाश व्यवहार किताब फाड़ना , वस्तु तोड़ना , वस्तु फेंकना ।

5. असामाजिक व्यवहार चोरी करना , खेल में धोखा देना , दूसरों को चोट पहुंचाना ।

2. **अर्न्तमुख व्यवहार** :- इसका तात्पर्य ऐसे व्यवहार से हैं । जिसमें दूसरों की अपेक्षा स्वयं व्यक्ति विशेष को अधिक नुकसान पहुंचाता है –

1. स्वयं घातक व्यवहार सिर पटकना , अपने को नोचना , खुद को काटना , अपनी चोट से छिलका निकालना ।

2 . भय स्थान , व्यक्ति , जानवर अथवा वस्तु से डरना ।

3. पुनरावृत्ति व्यवहार – सिर हिलाना , शरीर के अंगों को बार – बार हिलाना आदि ।

4. अनोखा व्यवहार बिना कारण अपने आप से बोलना , हंसना , कुड़ा इकट्टा करना ।

5. चिड़चड़ापन और झिल्लाहट चीखना , चिल्लाना , जोर – जोर से रोना ।

**Unit :-5.3 Functional analysis of behavior (व्यवहार का कार्यात्मक विश्लेषण)** :- किसी भी व्यवहार के कारण या परिणाम के रूप में विश्लेषण करने की प्रक्रिया कार्यात्मक विश्लेषण कहलाता है । क्रियात्मक विश्लेषण के अन्तर्गत इन तीनों प्रतिमान व्यवहारों के विश्लेषण के लिए उपलब्ध है । जो गार्डनर द्वारा प्रतिपादित किया जाता है । मानसिक मंद बच्चों के समस्या व्यवहारों के विश्लेषण के लिए प्रयोग किया गया है । यह प्रतिमान उन कारकों को पहचानने में सहायता करता है । जो समस्यात्मक व्यवहार के पूरी घटना में योगदान करता है । जिसकी दो विधियों या मॉडल है ।

**(i) A-B-C- मॉडल :-**

**(A) पूर्ववत कारण** :- इसमें व्यवहार के तुरन्त पहले क्या हुआ था समस्या व्यवहार के – पूर्व का कारण जैसे कोई बच्चा दूसरे बच्चे को चकोटी काटता है । इस घटना पूर्व कारक होगा , इस संबंध जो अधिक सूचना प्रदान करने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जाता है ।

1 . समस्या व्यवहार कब घटित होता है तथा किन परिस्थितियों में घटित होता ।

2 . क्या दिन का कोई विशेष समय है जब समस्या व्यवहार अधिक घटित होता है ।

3 . क्या यह किसी व्यक्ति विशेष की उपस्थिति में उत्पन्न होता है ।

4 . क्या बालक को कुछ करने के लिए कहा गया है ।

5 . क्या बालक को कुछ करने के लिए रोका गया है ।

(B) व्यवहार व्यवहार घटित होते समय क्या होता है । इसे व्यवहार कहते हैं या वर्तमान समय में व्यवहार कैसा है और कितनी बार घटित होता है । (C) परिणाम – व्यवहार घटित होने के तुरन्त बाद वाले कारकों का विश्लेषण निम्नलिखित प्रश्नों का समाहित है ।

- 1 . समस्या व्यवहार के तुरन्त बाद बालकों के आस – पास के लोगों की क्या प्रक्रिया होती है ।
- 2 . बालक तथा दूसरे लोगों पर समस्यात्मक व्यवहार का क्या प्रभाव पड़ा बालक को क्या लाभ होता है अथवा कुछ प्राप्त करता है ।

( ii ) कैनफर एवं शैशली मॉडल समस्या व्यवहार का क्रियात्मक विश्लेषण करने के लिए कैनफर एवं शैशली मॉडल का प्रयोग किया जाता है । इसमें निम्न बातों पर ध्यान देते हैं ।

1. इसमें बच्चों की क्षमता और अक्षमता दोनों पर ध्यान देकर अध्ययन करते हैं ।
- 2 . बच्चा क्या कर लेता है क्या नहीं कर पाता है । दोनों जानना जरूरी है ।
- 3 . उस विशेष परिस्थिति की जानकारी रखना जिसमें समस्या व्यवहार घटित होता है ।
- 4 .समस्या मूलक व्यवहार होने की अवस्था की विशेष जानकारी रखना । समस्या व्यवहार को प्रोत्साहित करने के लिए कारकों के बारे में जानकारी रखना कि कौन से ऐसे कारक हैं । जिसमें समस्या व्यवहार अत्यंत होते हैं ।

**पुरस्कारों का चयन :-** व्यवहार संसोधन चाहे वह अवांछनीय व्यवहार बढ़ाने के लिए हो या अवांछनीय व्यवहार को घटाने के लिए हो , पुरस्कार पुनर्वलन की पहचान एक महत्वपूर्ण चरण है । यह समस्या व्यवहार के प्रबन्ध के लिए कौशल प्रशिक्षण में पुरस्कार प्रस्तुत करके , तथा यदि समस्यात्मक व्यवहार द्वारा प्रदर्शित होता है तो उसे रोकने में सहायता देते ।

**Unit :- 5.4 Behaviour management techniques: Cognitive and behavioural (व्यवहार प्रबंधन तकनीक:**

**संज्ञानात्मक और व्यवहारिक) :-** यह बच्चों में विशिष्ट समस्या व्यवहार को नियंत्रित करने के उद्देश्य से पूर्ववर्ती कारकों तथा परिणामों के भली भांति किये गये , विश्लेषण पर आधारित होता है , शिक्षकों को आवश्यकता अनुसार समस्यात्मक व्यवहार का प्रबन्धन करने के लिए प्रयोग की जाने वाली विविध प्रविधियों से बने पैकेज कार्यक्रम के बारे में निश्चित करना चाहिए ।

1. प्रत्यक्ष दण्ड विधियाँ

2. दण्ड – विहिन विधियाँ

**1. प्रत्यक्ष दण्ड विधियाँ :** यह विधि अवांछनीय व्यवहार की घटना को कम करने वाली विधियों को समाहित करती है जो निम्नलिखित है ।

**टाइम आउट :-** अवांछनीय व्यवहार को दूर करने का एक प्रमुख तरीका है । इस प्रवृद्धि में अवांछनीय व्यवहार के होने के बाद एक निश्चित समय के लिए व्यक्ति को मिलने वाले सारे पुनर्बलन को रोक लिया जाता है । बच्चों को पुनर्बलन मिलने वाले क्षेत्र से हटा लेने से अवांछनीय व्यवहार को निर्बल करने की प्रक्रिया है । यह पता करना आवश्यक है कि बच्चे को पुनर्वलन कहां से मिल रहा है । इसके पश्चात् बच्चे को एक ऐसी परिस्थिति में रखा जाता है जिसमें पुरस्कार की कोई भी सम्भावना 2–3 मिनट के लिए पूर्णतः हटा ली जाती है । यह दो प्रकार की होती है ।

1 . Exclusion Time – Out

2 . Non – Exclusion time – Out

1. **Exclusion Time – Out** : इस तरह के टाइम आउट व्यवहार को करने के पश्चात् उसे भौतिक रूप से उस परिस्थिति के वातावरण से कुछ समय के लिए हटा लिया जाता है । यह तीन प्रकार का होता है । ( 1 ) **Contingent Observation Time Out** ( 2 ) **Isolation Time – Out** ( 3 ) **Seculasion Time – Out**

2 . **Non – Excdusion Time – Out** : इस प्रविधि में बच्चे को पुनर्बलन युक्त वातावरण से अलग नहीं किया जाता बल्कि उसी परिस्थिति में कुछ पुनर्बलन पर रोक लगा दिया जाता है । जैसे सामाजिक पुनर्बलन ध्यान न देना इत्यादि यह दो प्रकार का होता है । .

**Planned Ignoring Removal of Specific Reinforcement** : यह प्रवृद्धि अवांछनीय व्यवहार को दूर करने के लिए उपयोग में लायी जाती है । इसमें सुव्यवस्थित एवं क्रमिक रूप से अवांछनीय व्यवहार के घटीत होने पर घनात्मक पुनर्वलन को हटाया जाता है । इसमें घनात्मक पुनर्वलन टोकन मनी के रूप में होता है । इस प्रवृद्धि का उपयोग प्राय टोकन इकनौमी के साथ किया जाता है । अवांछनीय व्यवहार । के परिणामस्वरूप कितने पुनर्वलन को वापस लिया जाएगा यह पूर्व निर्धारित होता है ।

**अति सुधार :-** यह एक ऐसी विधि है । जो प्रक्रमों का समायोजन समाहित करती है । यह केवल यही नहीं सिखाती कि क्या नहीं करना चाहिए । बल्कि क्या करना चाहिए यह भी सिखाती है । यह निम्न प्रकार के है

**प्रस्थापना अति – सुधार** : इस प्रवृद्धि में सिर्फ बच्चे को वातावरण को पहले कि स्थिति में लाना ही नहीं होता है । बल्कि पहले से उसे काफी उन्नत एवं समृद्ध बनाना होता है । जैसे- कक्षा में पेशाब कर देने पर मानसिक मंद बच्चे को उसी स्थान की सफाई करने के लिए नहीं , वरन पूरा कमरा साफ करने को कहेंगे ।

**घनात्मक अभ्यास** : इस प्रवृद्धि में बच्चे की एक अवांछनीय व्यवहार के घटित होने के बाद उसकी जगह एक वांछनीय व्यवहार करायी जाती है । इस प्रवृद्धि में जब बच्चा अवांछनीय व्यवहार करता है तो उसके बाद उसकी सारी गतिविधियों को रोक दिया जाता है एवं उसे एक वांछनीय व्यवहार को बार – बार करने के लिए बाध्य किया जाता है । जब बच्चा वांछनीय व्यवहार का अभ्यास कर लेता है तो उसे पुनर्बलन दिया जाता है ।

**शारीरिक प्रतिबन्ध** : इस प्रक्रिया में घटना के बाद शारीरिक क्रियाओं पर प्रतिबन्ध लगाया जाता है । आक्रमणकारी व्यवहारों को कम करने में शारीरिक प्रतिबन्ध सहायक होता है । जैसे 2-5 मिनट बच्चे के हाथों की बगल में ले जाकर पकड़ कर रखना , दोनों हाथों की पीछे बाध देते हैं । उदाहरण – अंगूठा चुसना , कागज फाड़ना दूसरे को मारना इत्यादि व्यवहारों को रोकने के लिए प्रयोग करते हैं ।

**वातावरण की पुनर्संरचना** : यह एक ऐसी प्रवृत्ति है जिसमें अवांछनीय व्यवहार से सम्बन्धित कारकों का विश्लेषण किया जाता है । इसके बाद जिन कारकों में परिवर्तन करना संभव होता है उनमें परिवर्तन लाकर उस व्यवहार के होने कि संभावना को घटाया जाता है । यह मुख्यतः कार्यत्मक विश्लेषण पर आधारित होता है । इसका उपयोग उसी परिस्थिति में संभव है जहां अवांछनीय व्यवहार से सम्बन्धित कारक सीधे ढंग से जुड़े रहते हैं ।

**विलोपन** : इसका उपयोग हम लोग उस परिस्थिति में करते हैं जहां अवांछनीय व्यवहार का मुख्य कारण 'जजमदजपवद' ममापदह होता है , विलोपन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें मुख्य रूप से अवांछनीय व्यवहार के परिणामस्वरूप मिलने वाले सारे पुनर्बलन पर रोक लगाया जाता है जिससे उस व्यवहार के तीव्रता या निरन्तरता में धीरे – धीरे कमी आ जाती है । जैसे बच्चे पर ध्यान न देना , बात न करना समाहित है नाराजगी प्रकट करना इस पद्धति के प्रयोग में शिक्षक बच्चे को स्पष्ट शब्दों में बताता है कि वह उसके समस्या व्यवहार से असन्तुष्ट है । इसे ' ताडना ' भी कहते हैं । उदाहरण जब मंजु कक्षा में शोर करती है , तो शिक्षिका कहते हैं कि " शोर " मुझे तुम्हारा कक्षा में शोर करना अच्छा नहीं लग रहा है । तुम एक स्थान पर बैठकर अपना काम पूरा करो ।

**दण्ड विहिन विधियाँ :** दण्ड विहिन विधियों में समस्या व्यवहार कम करने तथा वांछनीय व्यवहार के बढ़ाने के लिए होती है । इस प्राप्त करने के लिए विभेदिय पुनर्बलन का प्रयोग किया जाता है ।

**विभेदीय पुनर्वलन :** के यह एक ऐसा तरीका है , जिसका प्रयोग बच्चे में उपस्थित अवांछनीय व्यवहार को दूर करने तथा समायोजित व्यवहार को सिखलाने के लिए किया जाता है । यह एक ऐसी प्रवृत्ति है जिसमें पुनर्बलन के आधार पर दो उत्तेजनाओं में परिस्थिति के बीच विभेदन करते हुए किसी व्यवहार को करना सिखलाया जाता है ।

**( DRO ) अन्य व्यवहार का विभेदीय पुनर्बलन :-** इस टैकनिक में बच्चा जब निर्धारित अवांछनीय व्यवहार को एक निर्धारित समय में नहीं करता है । तो उसे पुनर्बलन दिया जाता है । इस निर्धारित समय में दूसरा कोई भी व्यवहार करे उससे कोई फर्क नहीं पड़ता । इस प्रविधि में मुख्य रूप से अवांछनीय व्यवहार के उपस्थिति या अनुपस्थिति पर बल डाला जाता है । इसी कारण इस टैकनिक को अन्य व्यवहार का विभेदीय पुनर्बलन कहते है ।

**( DRA ) वैकल्पिक व्यवहार का विभेदीय पुनर्बलन :** इस प्रवृत्ति में बच्चा अब अवांछनीय व्यवहार की जगह कुछ निश्चित वैकल्पिक व्यवहार को करता है तो उसे पुनर्बलन दिया जाता है । इस प्रवृत्ति में अवांछनीय व्यवहार को एक नये एवं समायोजित व्यवहार के रूप में करने को सिखलाया जाता है ।

**( DRI ) विपरीत व्यवहार का विभेदीय पुनर्बलन :** इस विधि में अवांछनीय व्यवहार के लिए ठीक विरोधी व्यवहार का पुनर्बलन समाहित होता है । इसमें बच्चों के वांछनीय व्यवहार को पुरस्कृत करेंगे और इसके बाद उसकी मन पसन्द सामग्री दिया जाएगा । इस बात से तात्पर्य यह है कि वह व्यवहार एक ही समय अवांछनीय व्यवहार के साथ घटित नहीं हो सकता है ।

**( DRL ) प्रतिक्रिया निम्नदर का विभेदी पुनर्बलन :** इस प्रवृत्ति में वांछनीय व्यवहार की बारम्बरता में कमी लाने पर बल डाला जाता है । बेस लाइन रिकार्डिंग के तुलना में जब बच्चा इस व्यवहार को कम मात्रा में करता है तो उसे पुनर्बलन दिया जाता है । जैसे कोई बच्चा कक्षा में शिक्षक को 10 बार नमस्ते करता है । अगर 5 बार नमस्ते करेगा तो उसे पुनर्बलन दिया जाएगा ।

**( DRH ) प्रतिक्रिया उच्चदर का विभेदी पुनर्बलन :-** इस प्रवृत्ति में वांछनीय व्यवहार को बारम्बरता वृद्धि लाने पर बल डाला जाता है । जब बच्चा बेस लाइन रिकार्डिंग की अपेक्षा में अधिक मात्रा में व्यवहार करता है तो उसे पुनर्बलन दिया जाता है ।

## व्यवहार परिमार्जन का चरण

**1. समस्या व्यवहार की पहचान :** समस्या व्यवहार के प्रबन्ध का सबसे पहला चरण समस्या मूलक व्यवहार की पहचान करना होता है । इस उद्देश्य की पूर्ती हेतु विभिन्न विधियों का प्रयोग किया जाता है । जैसे- साक्षात्कार , व्यवहार , रेटिंग स्केल और चेक लिस्ट आदि ।

**2. समस्या व्यवहार का व्यवहार परक वर्णन :** व्यवहार संशोधन में व्यवहार के प्रतिमान पदों का कोई मूल्य नहीं होता है । किसी व्यवहार का वर्णन करने के लिए केवल व्यवहारिक पदों का वर्णन किया जाता है । व्यवहार का वस्तुनिष्ठ ढंग से वर्णन किया जाता है । व्यवहार का वस्तुनिष्ठ जिसका निर्माण एवं वन किया जा सकता है । जैसे बच्चा नटखट है । यह उचित या व्यवस्थित नहीं है । इसका अर्थ अलग - अलग हो सकता है । उदाहरण - बच्चा एक स्थान पर 15 सैकेण्ड तक रुकता नहीं है । या एक ही बच्चे का बाल खींचता हूं । इत्यादि यदि शिक्षक बेसिक एम . आर . भाग ब का प्रयोग करें । तो उसमें व्यवहारों के निरीक्षण योग्य और मापन योग्य भाषा में लिखा गया है । जैसे सचिन स्थिर नहीं रहता है ।

**3. समस्या व्यवहार का चयन :** समस्या व्यवहार की पहचान और फिर उसे व्यवहारिक शब्दों में व्यक्त करने के पश्चात् , जिस विशेष समस्या व्यवहार को बदलना चाह रहे हैं । ठीक उसका चयन करें । इस चरण को विशेष समस्या व्यवहार की

प्राथमिकता क्रम में रखने को कहते हैं ? इस सम्बन्ध में यह उचित है कि एक बार के लिए एक या दो समस्या व्यवहार का चयन करके प्राथमिकता के आधार पर रखना चाहिए । व्यवहार के लिए केवल एक या दो व्यवहारों का चयन करें । जो बच्चे के लिए या तो उसके परिवेश के अन्य लोगों के लिए घातक हो । ऐसा समस्या व्यवहार का चयन करें । जो कक्षा में उनके या अन्य बच्चों के शिक्षण एवं प्रशिक्षण में बाधक हो । विशेष समस्या व्यवहार का चयन करते समय बारम्बारता अवधि पर विशेष ध्यान देना चाहिए । व्यवस्था के लिए ऐसे समस्या व्यवहार का चयन करें । जिसके कम हो जाने पर बच्चा कक्षा में और अधिक लगन से सीख सके । समस्या व्यवहार का चयन अभिभावक से पूछ कर करना चाहिए । समस्या व्यवहार का चयन करते समय निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

1. एक समय में एक या दो से अधिक समस्या व्यवहार का चयन व्यवहार परिमार्जन के लिए नहीं करना चाहिए ।
2. सबसे पहले उस समस्या व्यवहार को प्रमुखता देनी चाहिए । जिसका प्रबंधन करना सुगम या सरल होता है । इसके कारण बच्चे में आत्म विश्वास बढ़ता है जो कि और व्यवहारों के प्रबंधन में मदद करता है ।
3. उन समस्यात्मक व्यवहारों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए य जो बच्चे के स्वयं के लिए या दूसरों के लिए हानिकारक हो ।
4. हमेशा अभिभावक से एवं अध्यापक से परामर्श लेकर समस्या व्यवहार का चुनाव करना चाहिए ।

**समस्या व्यवहार के आधारभूत आंकड़े :-** इस चरण में समस्या व्यवहार को एक निश्चित मापक के अनुसार आलेखित किया जाता है । यह एक सतत् चलने वाली प्रक्रिया है । इसके द्वारा यह पता चलता है कि कौन सा व्यवहार औसतन कितनी देर तक और कितनी बार कर रहा है । समस्या मूलक व्यवहार का अवलोकन तीन – चार शब्दों में करते हैं । सरल बनाने के लिए निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए । निरीक्षण की विधियाँ व समय निश्चित करना ।

- 1 . निरीक्षण कहाँ करना है ?
- 2 . निरीक्षण की तकनीकी
3. ( अन्तराल अवधि ) क्या होगी ।

**1. निरीक्षण विधियाँ :-** आवृत्ति आलेखन अथवा घटना आलेखन घटना या आवृत्ति आलेखन निरीक्षण विधि में व्यवहार की संख्या को आलेखित करती है कि बच्चा एक समय में कितनी समस्या व्यवहार उत्पन्न करता है । जिसका निरीक्षण कम से कम तीन दिनों तक करनी चाहिए । आवृत्ति आलेखन विधि का प्रयोग निम्न समस्यात्मक व्यवहारों । जैसे धक्का देना , पीटना , एक स्थान पर न बैठना इत्यादि व्यवहारों के लिए किया जा सकता है ।

**2. अवधि आलेखन :-** अवधि आलेखन उन व्यवहारों जो घटना की लम्बाई में भिन्न होता है । आलेखित करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है । उदाहरण- कक्षा में ध्यान न देना , बाहर घूमना अतिक्रियाशील व्यवहार आदि । व्यवहार आलेखन की अवधि दिन में कितनी समय तक समस्या व्यवहार उत्पन्न करते हैं । इसका आंकलन करती है । समस्या व्यवहार विशेषित समस्या में घटना की गणना की जाती है ।

**3 . अन्तराल आलेखन :-** समस्यात्मक व्यवहार की घटना को अन्तरालों में लघु विस्तार ( लगभग 30 सैकेण्ड ) में निरीक्षण किया जा सकता है । जैसे- समस्या व्यवहार का प्रत्येक घंटे में पांच मिनट के लिए निरीक्षण करना । यह आवृत्ति तथा अवधि दोनों ही प्रतिक्रियाओं का आलेखन करने के लिए प्रयुक्त हो सकती है ।

**4 .लघु विस्तार समय प्रतिदर्श :-** इसमें समस्यात्मक व्यवहार की घटना को अन्तरालों के में तो करते हैं । लेकिन वह अन्तरालों मिनट में होता है । जैसे 5-5 मिनट के लिए अन्तरालों को बांट देते हैं और अन्तिम समय हम समस्या व्यवहार की पहचान या निरीक्षण करते हैं । समस्या व्यवहार एक पूर्व निर्धारित समय पर ही आलेखित किया जाता है ।

मूल्यांकन उपरोक्त सभी चरणों को व्यवहारिक रूप देने के तुरन्त बाद मूल्यांकन प्रक्रिया मानी जाती है । शिक्षक अभिभावक अथवा विशेषज्ञ इस बात पर हमेशा ध्यान रखते हैं । निश्चित की गयी विधियों से बच्चे के समस्या व्यवहार में कमी या सुधार हुआ है । या नहीं पहले से देखी गयी , समस्या व्यवहार और वर्तमान में सुधार की तुलना हो जाती है । निश्चित की गयी अवधि के बाद ही यदि समस्या व्यवहार में सुधार नहीं दिखता है तो पूरी प्रक्रिया पर पुनः विचार के लिए सहयोगी विशेषज्ञ की राय लेना उचित समझा जाता है जिससे निश्चित की गई विधियों में उचित परिवर्तन लाया जा सकता है ।

### **Unit :- 5.5 Modifying behaviours of children with special needs in inclusive and special classroom**

**(समावेशी और विशेष कक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के व्यवहार को संशोधित करना) :-** माता-पिता के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है बच्चों की ओर से कठिन या उदंड व्यवहार का प्रबंधन करना । चाहे वे अपने जूते पहनने से इनकार कर रहे हों, या पूरी तरह से नखरे कर रहे हों, आप एक प्रभावी प्रतिक्रिया के लिए खुद को नुकसान में पा सकते हैं । माता-पिता के लिए अपने विवेक के अंत में, विहेवियरल थेरेपी तकनीक समस्या की समस्याओं को प्रबंधित करने के लिए अधिक सुसंगत तरीकों को शांत करने के लिए एक रोडमैप को निजीकृत कर सकती है और बच्चों को अपने स्वयं के व्यवहार को विनियमित करने के लिए आवश्यक विकासात्मक कौशल हासिल करने में मदद करने का मौका प्रदान करती है ।

**ABC's of behavior management at home :-** समस्याग्रस्त व्यवहार को समझने और प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया करने के लिए, आपको यह सोचना होगा कि इससे पहले क्या आया, साथ ही इसके बाद क्या आता है । किसी भी व्यवहार के तीन महत्वपूर्ण पहलू होते हैं:-

- **पूर्ववृत्त :-** पूर्ववर्ती कारक जो व्यवहार को कम या ज्यादा होने की संभावना बनाते हैं । इसके लिए एक और, अधिक परिचित शब्द ट्रिगर है । पूर्ववर्तियों को सीखना और उनका अनुमान लगाना दुर्व्यवहार को रोकने में एक अत्यंत सहायक उपकरण है ।

- **व्यवहार :-** वे विशिष्ट कार्य जिन्हें आप प्रोत्साहित करने या हतोत्साहित करने का प्रयास कर रहे हैं ।

- **परिणाम :-** वे परिणाम जो स्वाभाविक रूप से या तार्किक रूप से किसी व्यवहार का अनुसरण करते हैं ।

**परिणाम -** सकारात्मक या नकारात्मक व्यवहार के आवर्ती होने की संभावना को प्रभावित करते हैं और परिणाम जितना तत्काल होता है, उतना ही शक्तिशाली होता है ।

**(व्यवहार को परिभाषित करें) :-** एक अच्छे व्यवहार प्रबंधन योजना में पहला कदम लक्षित व्यवहार की पहचान करना है । 'यह व्यवहार वह विशिष्ट होना चाहिए (इसलिए हर कोई जो अपेक्षित है उस पर स्पष्ट है), देखने योग्य, और मापने योग्य (इसलिए हर कोई सहमत है कि व्यवहार हुआ या नहीं) ।

**पूर्ववृत्त, अच्छा और बुरा :-** पूर्ववृत्त कई रूपों में आते हैं । कुछ बुरे व्यवहार का समर्थन करते हैं, अन्य सहायक उपकरण हैं जो माता-पिता को संभावित समस्याग्रस्त व्यवहार शुरू करने से पहले और अच्छे व्यवहार को मजबूत करने में मदद करते हैं ।

### **Antecedents to AVOID :-**

- यह मानकर कि अपेक्षाओं को समझा गया है: यह मत समझिए कि बच्चों को पता है कि उनसे क्या अपेक्षा की जाती है — इसे स्पष्ट करें! स्थिति से स्थिति में मांग बदलती है और जब बच्चे इस बारे में अनिश्चित होते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए, तो उनके गलत व्यवहार की संभावना अधिक होती है ।

• चीजों को दूर से बुलाना: बच्चों को महत्वपूर्ण निर्देश आमने-सामने बताना सुनिश्चित करें। दूर से चिल्लाई गई बातों को याद रखने और समझने की संभावना कम होती है।

• चेतावनी के बिना संक्रमण: बच्चों के लिए संक्रमण कठिन हो सकता है, विशेष रूप से किसी ऐसी चीज के बीच में जिसका वे आनंद ले रहे हैं। चेतावनी देने से बच्चों को एक गतिविधि के लिए एक गॉक्संड स्टॉपिंग प्लासी खोजने का मौका मिलता है और संक्रमण कम हो जाता है।

• रैपिड-फायर प्रश्न पूछना, या निर्देशों की एक श्रृंखला देना: बच्चों को प्रश्नों या निर्देशों की एक श्रृंखला देने से उनके सुनने, सवालों के जवाब देने, कार्यों को याद रखने और उन्हें जो निर्देश दिया गया है, उसे करने की संभावना सीमित हो जाती है।

### Antecedents to EMBRACE :-

• स्थिति से अवगत रहें: पर्यावरणीय और भावनात्मक कारकों पर विचार करें और उनका प्रबंधन करें भूख, थकान, चिंता या ध्यान भटकाने से बच्चों के लिए अपने व्यवहार पर लगाम लगाना और अधिक कठिन हो सकता है।

• वातावरण को समायोजित करें: उदाहरण के लिए, जब होमवर्क का समय हो, तो वीडियो स्क्रीन और खिलौनों जैसे विकर्षणों को हटा दें। एक नाश्ता प्रदान करें, बच्चों के लिए काम करने के लिए एक संगठित जगह स्थापित करें और सुनिश्चित करें कि कुछ ब्रेक शेड्यूल करें, ध्यान अनंत नहीं है।

• अपेक्षाओं को स्पष्ट करें: यदि आप और आपका बच्चा दोनों ही इस बारे में स्पष्ट हैं कि क्या अपेक्षित है, तो आपको बेहतर सहयोग मिलेगा। उसके साथ बैठें और मौखिक रूप से जानकारी प्रस्तुत करें। यहां तक कि अगर उसे पता होना चाहिए कि क्या अपेक्षित है, तो किसी कार्य की शुरुआत में अपेक्षाओं को स्पष्ट करने से गलतफहमियों को दूर करने में मदद मिलती है।

• संक्रमण के लिए उलटी गिनती प्रदान करें: जब भी संभव हो, बच्चों को आगामी संक्रमण के लिए तैयार करें। उन्हें बताएं कि रात के खाने पर आने या अपना होमवर्क शुरू करने से पहले 10 मिनट शेष हैं। फिर, उन्हें याद दिलाएं, जब कहें, 2 मिनट बचे हैं। उलटी गिनती जारी करना जितना महत्वपूर्ण है, वास्तव में बताए गए समय पर परिवर्तन करना है।

• बच्चों के पास एक विकल्प होने दें: जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, यह महत्वपूर्ण है कि वे अपने शेड्यूलिंग में अपनी बात रखें। एक संरचित विकल्प देना "क्या आप रात के खाने के बाद या पहले स्नान करना चाहते हैं?" उन्हें सशक्त महसूस करने में मदद कर सकता है और उन्हें स्व-विनियमन बनने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है।

**प्रभावी परिणाम बनाना (Creating effective consequences) :-** सभी परिणाम समान नहीं बनाए जाते हैं। कुछ संरचना बनाने और बच्चों को स्वीकार्य व्यवहार और अस्वीकार्य व्यवहार के बीच के अंतर को समझने में मदद करने का एक शानदार तरीका है, जबकि अन्य में अच्छे से अधिक नुकसान करने की क्षमता है। एक माता-पिता के रूप में इस बात की मजबूत समझ है कि बुद्धिमानी से और लगातार परिणामों का उपयोग कैसे किया जाए, इससे सभी फर्क पड़ सकते हैं।

### Consequences to AVOID :-

• नकारात्मक ध्यान देना :- बच्चे अपने जीवन में महत्वपूर्ण वयस्कों से इतना ध्यान आकर्षित करते हैं कि कोई भी ध्यान सकारात्मक या नकारात्मक किसी से बेहतर नहीं है। नकारात्मक ध्यान, जैसे अपनी आवाज उठाना या पिटाई करना वास्तव में समय के साथ बुरे व्यवहार को बढ़ाता है। साथ ही, आलोचना या चिल्लाने के साथ व्यवहार का जवाब देना बच्चों के आत्म-सम्मान पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

• **विलंबित परिणाम** :- सबसे प्रभावी परिणाम तत्काल होते हैं। हर पल जो एक व्यवहार के बाद गुजरता है, आपके बच्चे के अपने व्यवहार को परिणाम से जोड़ने की संभावना कम होती है। यह दंड देने के लिए दंड बन जाता है, और वास्तव में व्यवहार को बदलने की बहुत कम संभावना है।

• **असंगत परिणाम** :- माता-पिता स्वाभाविक रूप से बहुत निराश हो जाते हैं। कभी-कभी, वे इतने निराश हो सकते हैं कि वे ओवररिएक्ट कर सकते हैं। एक बड़ा परिणाम बच्चों के लिए मनोबल गिराने वाला हो सकता है और वे व्यवहार करने की कोशिश करना भी छोड़ सकते हैं।

• **सकारात्मक परिणाम** :- जब कोई बच्चा अपने जूते पहनने या अपने ब्लॉक उताने के बजाय डगमगाता है और, निराशा में, आप उसके लिए ऐसा करते हैं, तो आप इस संभावना को बढ़ा रहे हैं कि वह अगली बार फिर से डगमगाएगा। कक्षा प्रबंधन में छात्रों को अपना व्यवहार बदलने के लिए प्रोत्साहित करना शामिल है। हालाँकि, किसी भी परिवर्तन प्रक्रिया से पहले और उसके दौरान निम्नलिखित नैतिक मुद्दों पर विचार किया जाना चाहिए।

**व्यवहार बदलने के बारे में सोचते समय नैतिक निर्णय स्क्रीन :-**

**Model appropriate leadership (आदर्श उपयुक्त नेतृत्व)** :- छात्र को शिक्षक के व्यवहार को सकारात्मक देखना चाहिए। ऐसा करने के लिए, शिक्षक को बच्चे के साथ वास्तविक देखभाल, विश्वास और सम्मान का रिश्ता विकसित करना चाहिए। फिर बच्चा शिक्षक के व्यवहार के अनुसार अपने व्यवहार का मॉडल तैयार करेगा।

**आत्म-अनुशासन (Self & discipline)** :- क्योंकि व्यवहार प्रबंधन का लक्ष्य आत्म-अनुशासन है। शिक्षकों को इसे कक्षा में प्रोत्साहित करना चाहिए। सम्मान और विश्वास बनाए रखने से, बच्चे को अपने स्वयं के भार को नियंत्रित करने की आवश्यकता महसूस होने लगेगी। सकारात्मक बातचीत से वह इस सम्मान और विश्वास को मजबूत कर सकता है। इच्छा के साथ अनुभवों का मिलान करें :- बच्चों को स्कूल में सकारात्मक अनुभव होना चाहिए। एक अनुभव आमतौर पर सकारात्मक होता है।

**सहानुभूति दिखाएं** :- शिक्षक को बच्चे की समस्याओं से निपटने के लिए निष्पक्ष रूप से विचार करने की आवश्यकता है। भावना वस्तुनिष्ठ सोच को बाधित करती है, जबकि सहानुभूति हमें समस्या को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने की अनुमति देती है।

**Freedom and independence to function** :- बच्चों को उन्हें यथासंभव कार्य करने की स्वतंत्रता देनी चाहिए। यदि पूर्ववत् विफलता या चोट से बचने के लिए सीमाएं स्थापित करने की आवश्यकता है तो छात्रों को अपने कार्यों के तार्किक परिणामों का अनुभव करने की अनुमति देनी चाहिए। आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता विकसित करने के लिए उसे ऐसा करना चाहिए।

**सामान्यीकरण का सिद्धांत** :- बच्चे को यथासंभव सामान्य वातावरण में कार्य करने की अनुमति दी जानी चाहिए।

**निष्पक्षता का सिद्धांत** :- हस्तक्षेप निष्पक्ष होना चाहिए और बच्चे को स्कूल में सफल होने देना चाहिए। यदि परिणाम लागू होते हैं तो उन्हें अपराध की डिग्री के संबंध में उपयुक्त होना चाहिए।

**व्यक्ति की गरिमा और मूल्य के लिए सम्मान का सिद्धांत** :- "हस्तक्षेप से छात्र को व्यक्ति को मानव के रूप में अपमानित किए बिना छात्र के पर्यावरण पर नियंत्रण करने के लिए कौशल सीखने या सुधारने का अवसर प्रदान करना चाहिए।

**व्यवहार प्रबंधन हस्तक्षेपों की एक निरंतरता** :- शिक्षक को हस्तक्षेप का उपयोग करना चाहिए जो कक्षा में बच्चे को कम से कम प्रतिबंधित करता है, फिर भी प्रभावी है। बच्चे पर अत्यधिक प्रतिबंध कक्षा के भीतर छात्र के अधिकारों पर लागू होता है।

**व्यवहार परिवर्तन तर्कसंगत और सुनियोजित होना चाहिए :-** व्यवहार एक ऐसा व्यवहार होना चाहिए जो कक्षा में बच्चे के प्रदर्शन को बाधित करता हो, शिक्षक के पास व्यवहार को बदलने के लिए एक तर्क होना चाहिए, और एक व्यवहार परिवर्तन प्रक्रिया का पालन करना चाहिए जिसके परिणामस्वरूप एक व्यावहारिक रणनीति का कार्यान्वयन होगा जो व्यवहार के लिए पूर्वसूचक है और नैतिक पक्षपात या नियत प्रक्रिया का उल्लंघन नहीं करता है। "। ज, डक और व्यवहार परिवर्तन चरण देखें।

**अनुमति (Consent) :-** शिक्षक को प्रबंधन प्रक्रियाओं के बच्चे के साथ शामिल लोगों को सूचित करना और आगे बढ़ने के लिए सहमति प्राप्त करना सुनिश्चित करना चाहिए। यह अभ्यास व्यवहार हस्तक्षेप पर संघर्ष से बचने में मदद करेगा। निष्पक्षता। छात्र एक प्रशिक्षक से कक्षा में सभी के साथ समान व्यवहार करने की अपेक्षा करते हैं। कुछ प्रोफेसर जानबूझकर कुछ छात्रों को दूसरों के ऊपर पसंद करते हैं, लेकिन कुछ छात्रों को दूसरों की तुलना में अधिक पसंद नहीं करना शायद असंभव है। पसंद में अंतर बातचीत में अंतर पैदा कर सकता है, जैसे कि कुछ छात्रों को चर्चाओं पर हावी होने देना। यहां तक कि छात्रों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है, इसमें सूक्ष्म अंतर भी पक्षपात की धारणा को जन्म दे सकता है जहां कोई मौजूद नहीं है। पक्षपात का आभास देने से बचने के लिए, सभी छात्रों के साथ अपने व्यवहार और बातचीत की सावधानीपूर्वक निगरानी करें।

**आदर (Respect) :-** सम्मान में छात्रों के साथ विनम्रता से व्यवहार करना शामिल है। किसी छात्र का उपहास करना या किसी छात्र की टिप्पणी को "बेवकूफ" कहना सभी परिस्थितियों में अनुचित है। जब वे प्रशिक्षक के विचारों को चुनौती देते हैं, तो छात्र अपेक्षा करते हैं कि एक प्रशिक्षक उनके विचारों को सुनेगा, ध्यान से विचार करेगा और उनके विचारों का विचारशील उत्तर देगा। एक प्रशिक्षक जिसे अधीर या नीच के रूप में माना जाता है, या तो सीधे टिप्पणियों के माध्यम से या परोक्ष रूप से स्वर, चेहरे के भाव या मुद्रा के माध्यम से, छात्रों का सम्मान खो देता है।

**छात्रों के लिए चिंता :-** छात्र अपने प्रशिक्षकों से अपेक्षा करते हैं कि वे उनकी और उनके अकादमिक प्रदर्शन की परवाह करें। आप छात्रों के नामों को सीखकर और उनका उपयोग करके, कक्षा से पहले और बाद में उनसे बात करके, ध्यान से सवालों के जवाब देकर और उन समस्याओं और संभावित समाधानों पर चर्चा करने के लिए उन छात्रों को आमंत्रित करके इस तरह की चिंता प्रदर्शित कर सकते हैं। आप छात्र शिकायतों पर उचित ध्यान देकर, शिकायतों के वैध होने पर उपचारात्मक कार्रवाई करने और शिकायतों के वैध न होने पर अपनी स्थिति को ध्यान से समझाने के द्वारा भी चिंता व्यक्त कर सकते हैं।

**अखंडता (Integrity) :-** सत्यनिष्ठा का अर्थ है सुसंगत और सच्चा होना, और अपनी नीतियों, प्रक्रियाओं और निर्णयों की व्याख्या करना और वे क्यों आवश्यक हैं, ताकि उनकी निष्पक्षता को आंका और समझा जा सके। उदाहरण के लिए, एक उपस्थिति पोली उचित हो सकती है क्योंकि उपस्थिति बढ़ी हुई शिक्षा और बेहतर ग्रेड के साथ सहसंबद्ध है। विभिन्न प्रकार के असाइनमेंट के शैक्षिक लक्ष्यों की व्याख्या करना भी प्रभावी हो सकता है। आप वादा किए गए पुरस्कार और दंड देकर, और उपयुक्त होने पर अज्ञानता को स्वीकार करके भी ईमानदारी का प्रदर्शन कर सकते हैं।

**औचित्य (Propriety) :-** औचित्य का अर्थ सामाजिक रूप से स्वीकार्य तरीके से कार्य करना है जो छात्रों की संवेदनाओं को ठेस नहीं पहुंचाता है। छात्र अपेक्षा करते हैं कि आप उनके साथ बातचीत करते समय नियमों का पालन करेंगे।